

बीकानेरी-प्रत्यय

[बीकानेरी आवद्ध रूपो का वर्णनात्मक अध्ययन]

(लघु शोध-प्रबन्ध)

भगवान दास 'किराडू
एम ए (हिन्दी), रिसच स्कॉलर

भूमिका लेखक
डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
एम ए पी एच डी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्रकाशक
श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

बीकानेरी-प्रत्यय

- लेखक -

भगवान दास किराडू

मूल्य

रु १२.५०

प्रकाशक

श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

@ सार्वधिरार गुरुजा

- मुद्र -

महोदय प्रिंटिंग प्रेस, बोट गट, बीकानेर

BIKANERI PRATYAY

Bhagwan Dass Kiradu

Price Rs 12 50

परमपूज्य स्व० नानाजी प० हरदास जी पुरोहित पुण्य स्मृति ग्रन्थमाला



स्व० प० हरदास जी पुरोहित

भूमिका

भारोपीय परिवार की भाषाओं और बोलिया में धातु को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वह शब्द की नामिक होती है। इसीका रूप-विस्तार भाषा की संपत्ति बनता है। अनेक रूप बदल कर भी भाषा में भी वह अपने रूप को बनाये रखती है और अर्थ के अनेक परिवर्तनों में वह स्वायत्त की रक्षा किये रहती है। रूप रचना की प्रक्रिया में पड़कर वह अपनी ध्वनियों में मुख मुख या अर्थ किसी कारण से परिवर्तन स्वीकार करती है, पर रूप ध्वनि ग्रामीय परिवर्तन में भी वह सवथा अदृश्य नहीं बन पाती।

उक्त परिवार की भाषाओं और बोलिया में धातु के बाद महत्वपूर्ण स्थान प्रत्यय को प्राप्त है। इनका स्वतन्त्र कोशात्मक अर्थ नहीं होता, किन्तु ये दूसरे शब्दों के साथ लगकर उसे नया अर्थ देते हैं और शब्द को वाक्यों में प्रयोग योग्य बनाते हैं। इनकी क्रिया द्विविध होती है (१) शब्द निर्माण करना तथा (२) निमित्त शब्दों को वाक्य में प्रयोग योग्य बनाना। ये शब्द साधक भी होते हैं और रूप साधक भी। शब्द साधक में इनकी पहली क्रिया धातु के साथ प्रकट होती है और दूसरी क्रिया पूव-प्रक्रिया से निमित्त शब्दों के साथ प्रकट होती है। इसी आधार पर इन्हें वृद्धन्त (Primary) और तद्धित (Secondary) प्रत्ययों की संज्ञा दी गयी है। ये दोनों प्रकार के प्रत्यय भाषा में प्रातिपदिकों की निर्माण करते हैं।

रूप रचना की दृष्टि से प्रातिपदिकों का नाम पदों में भी वही स्थान है जो क्रिया पदों में धातुओं का है। दोनों में केवल अर्थ होते हैं, व्याकरणिक रूप नहीं होते। मानो य दोनों ही उस अनगढ़ पत्थर के समान हैं जिन्हें भाषा भवन में निर्माण के पूव व्याकरणिक संस्कार में होकर गुजरना आवश्यक है। यह व्याकरणिक संस्कार ही भाषा की रूप साधना है।

वीकानेरी बोली भारोपीय परिवार की ही एक बोली है। इस परिवार की भारतीय आय भाषाओं की यशस्वी परम्परा रही है। इसी की वदिक संस्कृत भाषा ने विश्व को प्राचीनतम साहित्य प्रदान किया है। श्रुतिपा की मुराया के लिये ध्वनि व अर्थ का जो

अध्ययन प्रतीत में हो गया वही भाषा विज्ञान के इतिहास को भी आरम्भ दे गया जिसे बाद में पाणिनिप्रभृति व्याकरण ने आगे बढ़ाया। पाणिनि की अष्टाध्यायी मानवी प्रतिभा की अष्टतम कृति है, जिसमें संस्कृत का सर्वांगीण वर्णनात्मक अध्ययन हुआ है। प्राकृतों के अध्ययन में हेमचन्द्र ने भाषा का अध्ययन इतिहास क्रम से किया पर वे पाणिनि की परम्परा को आगे नहीं बढ़ा सके।

आधुनिक युग में भारत में भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन विदेशी भाषा वैज्ञानिकों के अनुकरण पर हुआ। ग्रियर्सन, कनांग, वीम्स, ट्रम्प, पिशल हार्नली, टनर, आदि ने भारतीय भाषाओं पर जो कार्य किया वही वहाँ के लिये प्रेरक बना। अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं पर आधुनिक काल में कार्य हुआ और विद्वानों की दृष्टि राजस्थानी पर भी गयी। ग्रियर्सन के उपरांत टसीटोरी का पश्चिमी पुरानी राजस्थानी का अध्ययन महत्वपूर्ण है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने राजस्थानी भाषा का अध्ययन मनोयोग से किया और उसे अपने चार भाषणों में राजस्थानी भाषा पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया। राजस्थान में शिक्षा के प्रसार के साथ हाडोती, शेखावाटी, मेवाड़ी आदि बोलियों पर यहाँ के विद्वानों ने कार्य किया, इससे कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आये।

यद्यपि हिन्दी और राजस्थानी भाषाओं पर पर्याप्त कार्य हुआ है, फिर भी उनकी विभिन्न बोलियों पर शोध कार्य के लिये पर्याप्त गुंजाइश है। एक भाषा या विभाषा की अनेक बोलियाँ अपने भौगोलिक व ऐतिहासिक अंतर से परस्पर पृथक् सी प्रतीत होती हैं। पश्चिमी और पूर्वी राजस्थानी के मध्य अरावली पर्वत की दुर्गमता इस प्रश्न का हेतु बनी है। यही दुर्गमता विशाल रेनीले मरुभूमि में निखरी जन-संख्या के परस्पर मिलन व विचार-विनिमय में भी बाधक बनी है। अतः बीकानेरी व मारवाड़ी में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। यह भिन्नता दोनों में ध्वनि व प्रत्यय विधान का अध्ययन करने से स्पष्ट दिखाई दे सकती है।

बीकानेरी प्रत्यय पर लिखी गई प्रस्तुत पुस्तक बीकानेर क्षेत्र के अध्येता द्वारा लिखा गया तथु-प्रबन्ध है। अध्येता श्री किराड़ इस क्षेत्र के निवासी हैं और बीकानेरी भाषी हैं। अतः इनके द्वारा प्रस्तुत

सामग्री अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होनी चाहिए। लेखक का सस्कृत का अध्ययन भी प्रस्तुत विषय के अध्ययन में सहायक बना है और इसे अधिक वनानिक बना सका है साथ ही वह पूर्वाग्रहों से मुक्त है, जो इस शैली के विद्वानों में प्रायः मिलता है।

कभी-कभी देश की चोटी के विद्वानों या राजतन्त्र द्वारा ऐसी बात कह दी जाती है जिन्हें विषय विशेष का लघु ग्रन्थेता भी गले नहीं उतार पाता। सन १९६१ की जनगणना में बीकानेरी भाषियों की कुल संख्या ४७ बतायी गयी है।^१ जिनमें से राजस्थान के नगरों में तो इसके बोलने वाले हैं ही नहीं।^२ यह तथ्य आश्चर्यजनक है। जनगणना के कार्य में लगे अप्रशिक्षित कमचारियों के द्वारा एकत्र भ्रान्त आकड़ा से ऐसी भूल हुई है। प्रस्तुत प्रबंध का लेखक बीकानेरी भाषियों के मध्य में रहता है। अतः वह यह तो जानता है कि इसके बोलने वालों की संख्या 'जनगणना' में दी गई संख्या से कई सौ गुनी है, पर साधनों के अभाव में वह ठीक आकड़े प्रस्तुत नहीं कर सका है।

पुस्तक में कृत प्रत्यय पर छठे और दूसरे अध्यायों में विचार हुआ है - पष्ठ अध्याय का शीर्षक तो 'कृत प्रत्यय' ही है, पर द्वितीय अध्याय के 'नाम - प्रत्यय शीर्षक के अन्तर्गत' प्रथम पर प्रत्यय (२ ३ १) उप शीर्षक से जो विचार हुआ है - वह भी कृत प्रत्यय विचार ही है। द्वितीय अध्याय की आवश्यकतावश लेखक ने कृत प्रत्ययों पर यही विचार कर लिया और पुनरावृत्ति भय से वहां वह मौन रहा है। इसमें बोली के सर्वांगीण अध्ययन में तो किसी प्रकार की त्रुटि उत्पन्न नहीं हुई, पर वहां इसके सकेत अनुल्लेख से तनिक अस्पष्टता आई है।

लेखक ने विषय-वर्गीकरण में जिस सूक्ष्म-बूझ और वज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है, उसी का निर्वाह विषय प्रतिपादन में भी किया है। पुस्तक का तृतीय अध्याय 'सवनाम प्रत्यय' लेखक की गवेषणा बुद्धि की पनी पकड़ से उद्भूत है। उसने बीकानेरी बोली के सवनामा के वेदक रूपों को खोजकर उसके मूल आधार - विधायक व तिर्यक् आधार - विधायक प्रत्ययों की जो प्रतिष्ठा की है इससे भाषा विज्ञान के ग्रन्थेता को यह सोचने के लिए विवश होना पड़ता है कि

१- ससंस आफ इंडिया १९६१, पुस्तक प्रथम, पृ० ८३

२- वही पृ ८४

(घ)

भाषा के तत्त्वों में धातु, प्रातिपादिक, प्रत्यय व निपात के अतिरिक्त भी गवेषणीय विषय है। - -

कृत - प्रत्यय के अध्याय में भूतकालिकृत त-प्रत्यय (६ २ २) में मरियोडो, चूसियोडो आदि कृत शब्दों की रचना आकषक है। इसमें धातु + भूत कालिक कृत प्रत्यय + तियक् प्रत्यय + स्वाथक् प्रत्यय + तियक् प्रत्यय (✓मर् + /इय्/ + /ओ/ + /ङ/ + /ओ/) मिलते हैं। प्रायः होता यह है कि जहाँ - जहाँ शब्द के साथ स्वाथक् प्रत्यय प्राप्त होता है वहाँ वहाँ वह ही तियक् प्रत्यय को अपना लेता है और मूल शब्द को अपने पूर्व रूप में छोड़ देता है। पर यहाँ यह प्रत्यय दो बार प्रयुक्त हुआ है। पहला /ओ/ किसी लिंग - वचन जनित विकार को प्राप्त नहीं हुआ, पर दूसरा विकारी है। पूर्व/ओ/ का यह अविकृत रूप ही भ्रान्ति का कारण बना हुआ है। राजस्थानी में अनेक स्वाथक् प्रत्यय— ट ड, क, द्य ल, आदि हैं और मूल शब्द का विकार प्रायः ये ही प्रत्यय ग्रहण करते हैं।

पुस्तक का सप्तम अध्याय 'पश्च - प्रत्यय' है। इसमें परसग और निपात पर विचार हुआ है। परसग वाक्य में पद या पद समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक संबंध व्यक्त करते हैं। अतः उन पर विचार करके लेखक ने प्रत्यय-अध्ययन को— उसके व्युत्पादक व व्याकरणिक संबंध— अथवा अध्ययन को पूर्ण एवं सर्वांगीण बना दिया है।

भाषा के अध्ययन का कार्य साहित्य-गोष्ठ-काय से अधिक सूक्ष्म व दुर्लभ होता है जो या तो मुदीषकालीन अम्बाम द्वारा संभव है अथवा असामान्य बौद्धिक क्षमता द्वारा। निदान लेखक की इस कृति में दोनों का समन्वय दिखाई देता है।

अतः मुझे अपने छात्र श्री निराहु के इस प्रशंसनीय प्रयास की भूमिका लिखते हुए प्रशंसा का अनुभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि यह कृति अण्ड - भेद से अनुसंधान करने की दिशा में प्रेरणा-दायिनी सिद्ध होगी।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, इंदूर महाविद्यालय
वाक्पूर

प्राक्कथन

प्रत्यय वह शब्द या "शब्दा" है जिसका अपना कोई स्वतंत्र कोणात्मक अर्थ नहीं होना किन्तु दूसरे शब्दों के साथ लगकर साधक होना है। आधुनिक भाषा विज्ञानी प्रत्ययों को आवृत्तपदप्राप्त कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं— "शब्द" निर्माणकारी प्रत्यय तथा रूप निर्माणकारी प्रत्यय। शब्द निर्माणकारी प्रत्यय भी दो प्रकार के होते हैं कृत् एवं तद्धित। कृत् प्रत्ययों के सवध से धातुजय शब्द बनते हैं और तद्धित प्रत्ययों के सवध से मंज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण होता है। रूप-निर्माणकारी प्रत्यय नाम और धातु शब्दों के कारक, क्रिया तथा काल का लिंगवचन के परिवेश में निर्धारण करने हैं।

भाषा में, मूलतः आयभाषाओं के वर्ग की भाषाओं में, उपयुक्त दोनों प्रकार के प्रत्ययों का पृथक् पृथक् बहुत बड़ा योगदान है। जितने महत्त्व के शब्द होते हैं, उससे कहीं अधिक महत्त्व के प्रत्यय प्राप्त हैं और उसमें भी कहीं अधिक महत्त्व के अनेक व्याकरणिक रूप होते हैं क्योंकि भाषा का चरम अवयव वाक्य होता है और विभिन्न शब्दों के बीच वाक्य में सवध तत्त्व की स्थापना प्रत्ययों के बिना समभव नहीं होती, बल ही नहीं सूर्य प्रत्यय हो क्यों न हो।

भाषा के इस महत्त्वपूर्ण अवयव का विश्लेषण करने की प्रेरणा मुझे अपने शिष्य गुरुवर डा० बंईया लाल जी गर्मा ने मिली और मैंन बीकानेरी में प्रत्ययों के अनुसंधान का निश्चय कर लिया। मैं जानता हूँ कि इस विषय पर अभी तक कोई काम नहीं हुआ है और मैं तो यह भी जानता हूँ कि प्रत्ययों के परिष्कार में बहुत ही छोटा काम हुआ है। यद्यपि डॉ० उदय नारायण तिवारी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० हरदेव बाहरी, डॉ० भोवानाथ तिवारी, डॉ० चन्द्रमान रावत, डॉ० देवेन्द्र नाथ प्रभृति अनेक विद्वानों ने प्रत्ययों के ऊपर काम किया है तथापि प्रत्यय सचान की दृष्टि से डॉ० उपेति का काम अविस्मरणीय है। यह सब काम हिन्दी के क्षेत्र में हुआ है और मुझे इनसे अमोघ प्रेरणा मिली है, किन्तु मेरे लिए यह भुतना समभव न हुआ कि जहाँ हिन्दी और बीकानेरी के कुछ

प्रत्यय समान हैं, वहाँ बीकानेरी के अनेक प्रत्यय मौलिक भी हैं। अतएव मैं उभय निष्ठ प्रत्ययों की अपेक्षा बीकानेरी के मौलिक प्रत्ययों के प्रति अधिक निष्ठावान एव सतक रहा हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित सात अध्यामों में विभाजित किया गया है—

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'विषय प्रवेश' है। इसमें बीकानेर क्षेत्र का परिचय, बीकानेरी क्षेत्र का सीमाएँ, बीकानेरी भाषी, तथा बीकानेरी की भाषा वृत्तान्तिक विशेषताओं का बखान प्रस्तुत किया गया है। मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय 'बीकानेरी-प्रत्यय-विधान' है अतः इसी अध्याय में प्रत्ययों के ऐतिहासिक स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है। शोध-प्रबंध का यह अध्याय वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के लिये भूमि तैयार कर देता है।

द्वितीय अध्याय में बीकानेरी नाम-व्युत्पादक प्रत्ययों का बखान प्रस्तुत किया गया है। नाम व्युत्पादक प्रत्ययों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। ये हैं— पूर्व प्रत्यय मध्य प्रत्यय एवं अन्त्य प्रत्यय। अन्त्य प्रत्ययों को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है— प्रथम पर प्रत्यय एवं द्वितीय पर प्रत्यय।

तृतीय अध्याय सवनाम-प्रत्यय है। इस अध्याय में उपलब्ध सवनामों का वर्गीकरण किया गया है एवं उनकी रूप रचना तथा सरचना तालिकाओं को प्रस्तुत कर उनमें आवृत्ति आदि का विवरण दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय में विभक्ति व्युत्पादक प्रत्ययों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है भूल एवं योगिक। योगिक विभक्ति प्रत्ययों को पुनः पूर्व प्रत्यय एवं पर-प्रत्ययों में वर्गीकृत कर पर प्रत्ययों का निम्नलिखित उपभागों में विभाजित किया गया है— सहास विभक्ति व्युत्पादक पर प्रत्यय सवनाम से विभक्ति व्युत्पादक पर प्रत्यय विभक्ति से विभक्ति व्युत्पादक पर प्रत्यय तथा स विभक्ति व्युत्पादक पर प्रत्यय एवं धातु से विभक्ति व्युत्पादक पर प्रत्यय।

पंचम अध्याय 'आख्यात प्रत्यय' है। धातु में व्युत्पादक प्रत्ययों का वर्णन होता है अतः व्युत्पादक प्रत्ययों की सुविधा एवं धातु भेद के आधार पर इस अध्याय का नाम 'आख्यात प्रत्यय' रखा गया है। यह अध्याय दो भागों में विभा

जित है घातु ध्युत्पादक प्रत्यय एवं व्याकरणिक प्रत्यय । घातु-उत्पादक प्रत्ययों को निम्नलिखित चार उपभागों में विभाजित किया गया है—

(१) नाम घातु-प्रत्यय (२) प्रेरणाधक-घातु-प्रत्यय (३) सकर्मक घातु-प्रत्यय (४) अनुकरणात्मक घातु-प्रत्यय । व्याकरणिक प्रत्ययों को भी चार उप-भागों में विभाजित किया गया है— (१) काल (२) अय (३) वाच्य (४) लिङ्ग चयन एवं पुरुष ।

पष्ठ अध्याय 'कृत-प्रत्यय' है । इसमें कृत प्रत्ययों का बखान किया गया है ।

सप्तम अध्याय 'पद्व-प्रत्यय' है जिसमें पद्व प्रत्ययों का बखान है ।

मेरे काय में मैं किसी नवीनता का दावा न करता हुआ भी इतना ता कह ही सकता हूँ कि इसमें मेरा परिश्रम है, मेरी सूझ बूझ एवं मेरी गवेषणा है और मेरा अपना बिलेपण है । ग्रीच बीच में मुझे आगा निराशा के अनेक घात प्रतिघातों का सामना करना पड़ा है । उस स्थिति में मुझे अपने प्रबुद्ध निदेशों से समुचित प्रेरणा मिली है । अतएव उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ । इस अवसर पर उन सब के प्रति कृतज्ञता प्रकट किए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत लघु छाध-प्रबंध के लेखन में योगदान दिया । बीकानेरी के ममन विद्वान सबंधी नारायणदास स्वामी, विद्याधर शास्त्री मुरलीधर व्यास तथा भूतचन्द 'प्राणेश' के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ ।

अपने स्व० बाबा पुण्यात्तमदास जी किराडू, द्वारकादास जी किराडू व स्व० बडियाजी पाना देवी के आशीर्वाद का फल ही यह कृति है । भगवान् उनकी आत्माओं की गार्ति प्रदान करें । मैं अपने परम पूज्य पिताजी गिरधर लाल जी किराडू व पूज्या माताजी गार्ति देवी व बडिया जी लक्ष्मी देवी के प्रति अपने आभार को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता जिन्होंने अपने गृह कार्यों में व्यस्त हान पर भी समय निकाल कर बीकानेरी के वास्तविक स्वरूप को मेरे सामने प्रस्तुत किया जिसमें मुझे प्रत्यय चयन में सुविधा मिली । साथ ही चाचाजी राधाकृष्ण जी, चाचीजी रागनेवी एवं बड़े भाई साहब प्रह्लाददास जी का भी आभारी हूँ ।

(घ)

परम पूज्य स्वर्गीय नानाजी श्री हरदामजी, श्रद्धास्पद मामाजी सब श्री लक्ष्मीनारायण जी, हरनारायण जी युगलनारायण जी व ब्रजनारायण जी, श्रीराम बगसीराम जी तपोमूर्ति चौधामासी जी, पाचा मासीजी छडी मासीजी व श्री नारायण भाईसाहब का आशीर्वाद ही प्रस्तुत प्रबंध के रूप में प्रतिफलित है। अतः इन सभी के प्रति मैं श्रद्धाबन्धन हूँ।

आदरणीय भाई श्री गोपाल नारायण एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत) एलएल०बी०, वास्को, श्री रामकृष्ण एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), श्री शिवशंकर नारायण एम० ए० (हिन्दी) श्री वृजनाथ एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत) श्री वेद प्रकाश एम० कॉम, भगिनी पुष्पा शर्मा एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), आदि ने इस विषय पर मेरा मांग बर्तान किया है। भातु तुल्य दुर्गादास एवं गिरधन दास ने परोक्ष व अपरोक्ष रूप से जो योगदान दिया है वह स्तुतनीय है। प्रबंध की समय पर मुद्रण व्यवस्था करने में महती प्रयत्न के व्यवस्थापक मवलन भाई साहब व भाई जुगलकिशोर ने विशेष तत्परता दिखाई है। अतः उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

परमश्रेष्ठ गुरुवर डा० कल्याणलाल जी शर्मा ने अपने अमूल्य समय को न देवते हुए आशीर्वाद स्वरूप भूमिका लिखने की महती कृपा की है। अतः गुरु देव की मेरे अनेक प्रणाम अर्पित हैं।

अतः मैं बरतनमवराध स तुमहिन स त इम पश्यता के साथ मेरा यह धर्म पुण्य भा भारती की अपण करता हूँ।

प० गिरधर लाल जी किराहू

साले की होती, वाकानर।

भगवान दास किराहू

विजयदशमी, स० २०२८



हिंदी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान
थद्वेय गुस्वर डॉ० सरनार्मसिंह जो शर्मा 'ग्रहण'
को
भादर समर्पित

संक्षिप्त-रूप

अप०
 आ० भा० आ० भा०
 आ० ई० ऊ० व्य० वि०
 ई०
 ई० पू० प्र०
 एल० एस० आई०
 गौ० ही० ओ०
 ति० आ० वि० प्र०
 पृ०
 प०
 प्रा०
 पु०
 पु० स०
 पप्र०
 बी० रा० ड०
 भा० वा० स०
 मू० आ० वि० प्र०
 मू० एव वि० स० वि० रूप
 लि० व० वा०
 स० आ० वि० प्र०
 स्त्री० स०
 सं०

अपभ्रंश
 आधुनिक भारतीय भाषा भाषा
 आकारात्, ईकारात्, ऊकारात्, व्यजनात्
 विभेपण
 ईमा
 ईसा पूर्व प्रथम गताब्दी
 लिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया
 गौरीनगर हीराचंद ओझा
 तिथि आधार विधायक प्रत्यय
 पृष्ठ
 पङ्क्ति
 प्राकृत
 पुल्लिग
 पुल्लिग सना
 पर प्रत्यय
 बीकानेर राज्य का इतिहास
 भाव वाचक सना
 मूल आधार विधायक प्रत्यय
 मूल एव विकारी सना व विभेपण रूप
 लिग-वचन-कारक
 सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
 स्त्री वाचक सना
 ससृष्ट

(च)

संकेत-चिन्ह

ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से सापेक्षितक का चेतक ।

तन्मय के स्पर्शीकरण के लिए प्रयुक्त संकेत

हस्त

व्युत्पन्न या सिद्ध रूप का चेतक

ऐतिहासिक पूर्ण रूप से पर रूप का चेतक

पर प्रत्यय एव विभक्ति का विभाजन संकेत

धातु संकेत

प्रत्यय के पश्चात् लगने से पूर्व रूप एव उसके पूर्व में लगाने से पर रूप की चेतक ।

(11)

३ २ २	वैयक्तिकता बोधक सर्वनाम द्वितीय पुग्	४९
३ ३	निर्वैयक्तिकता बोधक सर्वनाम	४८
३ ३ १	निश्चय सूचक	४८
३ ३ २	अनिश्चय सूचक	५०
३ ३ ३	प्रत्यय बोधक सर्वनाम	५१
३ ३ ४	सम्बन्ध सूचक	५४
३ ३ ५	निरूप्य सम्बन्ध सूचक सर्वनाम	५६
३ ३ ६	आत्मर सूचक सर्वनाम	५६
३ ३ ७	निजता सूचक सर्वनाम	५७
३ ३ ८	सर्व सूचक	५७

४ विशेषण-प्रत्यय

४ १	सामान्य विवेचन	६२
४ २	पूर्व प्रत्यय	६३
४ ३	पर प्रत्यय	६६
४ ३ १	सना से विशेषण श्रुत्पादक पर प्रत्यय	६६
४ २ २	सर्वनाम से विशेषण श्रुत्पादक पर प्रत्यय	६६
४ ३ ३	विशेषण से विशेषण श्रुत्पादक प्रत्यय	७०
४ ३ ४	क्रिया विशेषण से विशेषण श्रुत्पादक	७१
४ ३ ५	पातु से विशेषण श्रुत्पादक पर प्रत्यय	७२
४ ४	सत्त्वावाचक विशेषण प्रत्यय	७४
४ ४ १	पूर्णांक बोधक	७४
४ ४ २	अपूर्णांक बोधक	७७
४ ४ २ १	क्रम सत्त्वा वाचक विशेषण प्रत्यय	७८
४ ४ २ २	भावृत्ति सत्त्वा वाचक विशेषण प्रत्यय	७९
४ ४ २ ३	अनिश्चित सत्त्वावाचक विशेषण प्रत्यय	७९

५ आख्यात-प्रत्यय

सामान्य विवेचन	८३
----------------	----

५ २	नाम धातु प्रत्यय	८४
५ ३	प्रेरणापक धातु प्रत्यय	८७
५ ३ १	प्रथम प्रेरणापक धातु प्रत्यय	८८
५ ३ २	द्वितीय प्रेरणापक धातु प्रत्यय	९०
५ ४	सकमक धातु प्रत्यय	९१
५ ५	अनुकार वाची धातु प्रत्यय	९२
५ ६	व्याकरणिक प्रत्यय	९३
५ ६ १	काल	९३
५ ६ १ १	वर्तमान पूर्ण	९४
५ ६ १ २	वर्तमान अपूर्ण	९५
५ ६ १ ३	वर्तमान सामान्य	९५
५ ६ १ ४	भूत पूर्ण	९६
५ ६ १ ५	भूत अपूर्ण	९७
५ ६ १ ६	भूत सामान्य	९७
५ ६ १ ७	भविष्यत् पूर्ण एव अपूर्ण	९८
५ ६ १ ८	भविष्यत् सामान्य	९८
५ ६ २	काल संरचना	९८
५ ६ २ १	भूल काल संरचना	९९
५ ६ २ २	योगिक काल	९९
५ ६ २ २ १	वर्तमान कालिक योगिक रूप	१००
५ ६ २ २ २	भूत कालिक योगिक रूप	१००
५ ६ २ २ ३	भविष्यत् कालिक योगिक रूप	१००
५ ६ ३	अर्थ	१०१
५ ६ ३ १	निश्चयाप	१०२
५ ६ ३ २	विध्य	१०३
५ ६ ३ २ १	प्रत्यय विधि	१०३
५ ६ ३ २ २	अप्रत्यय विधि	१०४

५ १ ३ ३	समाधनाथ	७०५
५ १ ३ ४	सन्देशार्थ	१०१
५ १ ३ ५	सन्देशार्थ	१०३
५ १ ४	वाच्य	१०३
५ १ ४ १	वक्तृ वाच्य	१०८
५ १ ४ २	वक्तृ वाच्य	१०८
५ १ ४ ३	भाव वाच्य	१०८
५ १ ५	निग, वक्ता पुराण	१०८

६ कृन्-प्रत्यय

११०

६ १	सामान्य विवेचन	११०
६ १ १	समा वाचक कृन् प्रत्यय	११०
६ १ २	प्रायोगिक स्थितियाँ	१११
६ २०	विशेषण वाचक कृत् प्रत्यय	११३
६ २ १	वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय	११४
६ २ २	भूत कालिक कृत् प्रत्यय	११४
६ ३	क्रिया विशेषण वाचक कृत् प्रत्यय	११५
६ ३ १	पूव कालिक कृत् प्रत्यय	११६
६ ३ २	सात्कालिक क्रिया विशेषण कृत् प्रत्यय	११७

७ पश्च-प्रत्यय

११६

७ १	सामान्य विवेचन	११६
७ २	परसग	१२१
७ २ १	रूपांतर सहित परसग	१२२
७ २ २	रूपांतर सहित परसग	१२६
७ ३	निपात	१३३
	उपसहार	१३७
	सहायक अथ सूची	१३८

वीकानेरी-प्रत्यय

भगवान दास किराह

विषय-प्रवेश

१ बीकानेर क्षेत्र का परिचय

बीरता के प्रांगण में स्वनामधेय राजस्थान प्रांत का अपना विशिष्ट स्थान है। बीकानेर इसी प्रांत के पश्चिम उत्तर में स्थित एक भूखण्ड है जो स्वर्णम सिक्ता के बड़े-बड़े टीला से आवृत है। बीकानेर का उत्तर-पूर्वी भाग गतहु सरस्वती की सहायता से अनुप्राणित रह चुका है। पश्चिम में मूलप्राण (मूल स्थान मुलतान) से भी इसका परम प्राचीन सम्बन्ध रहा है। राष्ट्रकूटों का आदि निवास दक्षिण भारत में था। इनके साथ आने वाली जातियाँ भी दक्षिण रूप थी। मुगल काल में भी बीकानेर नरेशों का आवागमन दक्षिण में होता रहा है।^१

भूगर्भ शास्त्रियों का अनुमान है कि यह प्रदेश खूरशिक, कीटेशियम एवं इमोसिन के युगा में समुद्र में मग्न था और यह समुद्र टेथिस के नाम से विख्यात था। 'ज्योलाजी आफ इण्डिया' में लख मि० वाडिया ने भी इसी तथ्य की ओर सचेत किया है। टेरीनरी युग में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन हुआ और पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के संग्रमण से वह भाग ऊपर उठन लगा। शन शन समुद्र समाप्त हो गया एवं रेतीला भाग निकल आया। वाल्मीकि रामायण में भी समुद्र सं महस्यज्ञ की उत्पत्ति विषयक एक रोचक गाथा है।

१ प० विद्याधर शास्त्री वर्तमान बीकानेरी और संस्कृत, राजस्थान भारती, अंक २, भाग ४ अक्टूबर १९५४

मिलती है।^१

इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि समुद्र के पीछे हट जान या गूग जाने पर यह प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश में आज भी कहीं कहीं समुद्र के अवशेष के रूप में झील, तीली, कीड़ी गोत परस्पर आदि मिलते हैं जो बीकानेर के किसी भाग विशेष में समुद्राप्तावित होने की सूचना देते हैं।

इसी बीकानेर क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को डा० प्रियसन^२ डा० सुनीति कुमार चटर्जी,^३ डा० भोजानाथ त्रिवाड़ी,^४ प० नरोत्तमदास स्वामी^५ भी रामकृष्ण व्यास^६ प्रमति विद्वानों ने बीकानेरी बोली नाम से अभिहित किया है।

१ २ बीकानेरी क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश दक्षिणी भाग है। तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के उपरान्त तीन जिला में विभक्त हो गया—बीकानेर नगानगर व चूर। इनमें से गगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है। केवल उसके दक्षिणी-पूर्वी भाग के भादरा और नोहर तहसील के दक्षिणी के भाग इस बोली की उत्तरी पूर्वी सीमा बनाते हैं। वर्तमान बीकानेरी जिले की चारों तहसील बीकानेर, कोलायत नोखा व लूणकरणसर बीकानेरी भाषी हैं। चूर जिले की रतनगढ़ सरदारगढ़ सुजानगढ़ व डूंगरगढ़ तो पूर्ण रूप से बीकानेरी भाषी तहसीलें हैं पर राजगढ़ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरु का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी बोलता है। इसी जिले की सारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है। बीकानेरी की पश्चिमी सीमा प्रिय

१— सत्माद् तद् बाणपातेन त्वय कुत्रिध्वनोपपत् ।

विख्यात त्रिषु लोकेषु मरुका तारमेवतत् ॥

संग २२। ३६-३७। युद्ध वाण्ड

२— डा० प्रियसन एल एस आई भाग-६ पृष्ठ १३०

३— डा० सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृष्ठ ६-७

४— डा० भोजानाथ त्रिवाड़ी भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

५— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी पृष्ठ ५५

६— श्री रामकृष्ण व्यास बीकानेरी नामपत्र पृष्ठ ७

सन के अनुसार केवल राजस्थान तक ही सीमित नहीं है। पाकिस्तान के वहावल पुर जिले का दक्षिणी पूर्वी भाग भी बीकानेरी क्षेत्र के अंतर्गत आता है, पर वस्तु स्थिति यह है कि अब बीकानेरी की सीमाएँ मिमिट कर केवल भारत की सीमाओं से लग गई हैं। प्रस्तुत लेखक के लिए इस तथ्य को पुष्ट प्रमाणा के आधार पर प्रमाणित करने की असम्भावना से आरम्भ में दिए हुए मान चित्र में प्रियसन को ही आधार बनाया गया है।

१३ सीमाएँ

बीकानेरी बोली की उत्तरी सीमा सहदा, राठी आर पजाबी बोलियों द्वारा बनाई जाती है। इसकी उत्तरी पूर्वी सीमा पर पजाबी तथा बागडी बोलियाँ मिलती हैं। बागडी तथा दोखावाटी इसकी पूर्वी सीमा बनाती हैं। इसके दक्षिण पूर्व में दोखावाटी बोली जाती है। बीकानेरी की दक्षिणी सीमा पर थाली एवं आदश मारवाडी का क्षेत्र आता है। थाली बोली ही इसकी दक्षिणी पश्चिमी सीमा बनाती है। पश्चिमी सीमा पर सहदा भाषी व्यक्ति मिलते हैं और उत्तरी पश्चिमी सीमा सहदा तथा राठी बोलियों के द्वारा बनाई जाती है।

१४ बीकानेरी भाषी

डॉ० प्रियसन के अनुसार बीकानेरी बोलने वाला की जनसंख्या ५३३,००० है। १ मनु १९६१ की जनगणना के अनुसार बीकानेरी भाषिया की जनसंख्या भारत में अल्प है। १९६१ की जनगणना के आधार पर बीकानेरी भाषिया की जनसंख्या बताई गई है वह सबसे भ्रामक है क्योंकि यदि बीकानेरी का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है और इस आदम मारवाडी से भिन्न माना जाता है तो अधिकांश बीकानेर क्षेत्र की जनसंख्या को बोली बीकानेरी है एवं अकेले बीकानेर में लगभग २ लाख व्यक्ति निवास करते हैं जिनमें एक निहाई व्यक्ति ठेठ बीकानेरी भाषी हैं। मैंने बीकानेर नगर एवं निकटवर्ती ग्रामों में बीकानेरी के भाषा बोलानिक स्वरूप का दृष्टि में रखकर लोका सं प्रश्न किये और उत्तर स्वरूप जो तथ्य मेरे सामने आये उससे निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसमें बीकानेरी

१—प्रियसन एल एस आई भाग ६, पृष्ठ १३०

भाषिया की जनसंख्या १६६१ की जनगणना के अखिल भारतवर्ष के आँकड़ा से सँकड़ा गुना अधिक है। भाषा विषयक गसत आँकड़े जनगणना के अवसर पर हमनिए एकत्र हो जाते हैं कि भाषा एवं बोसिया का महत्वपूर्ण कार्य ऐसे व्यक्तियों के द्वारा सम्पन्न होता है जो भाषा एवं बोसिया के स्वरूप का विश्लेषण नहीं कर सकते। इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना के अवसर पर बीकानेरी बोलने वाला न अपनी बोली मारबाड़ी ही बताई है। अतः वर्तमान बीकानेरी भाषिया की जन संख्या क्षेत्र व सीमा के आधार पर ७ १५,००० मानी जा सकती है।

१ ५ बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएँ

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

१ ५ १ ध्वन्यात्मक विशेषताएँ

१- अल्प ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी ओकारात है —

बीकानेरी	हिंदी
घोड़ो	घोडा
दादो	दादा

२- बीकानेरी में नासिक्य ध्वनियाँ स पूर्य मान वाली 'आ ध्वनि ओ' में परिवर्तित हो जाती है —

बीकानेरी	हिंदी
हाण	हानि
ओम्वा	आम

३- बीकानेरी में गन्दा के आदि स्वर (विशेषतः अ) के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है —

बीकानेरी	हिंदी
पाडोमी	पडोमी
खामडी	खड्डी

४- बीकानेरी में हिन्दी के संयुक्त स्वर 'ए' एवं 'औ' — क्रमशः "इ" एवं 'ओ' में परिवर्तित हो जाते हैं —

बीकानरी	हिंदी
बिस्सो	बैसा
बिस्सो	बसा
ओरत	औरत

५- बीकानर म आरम्भ का 'य' प्राय 'ज' म परिवर्तित हो जाता है-

बीकानेरी	हिंदी
जुग	युग
जम	यम

६- बीकानेरी म अत्य 'य' का प्राय लोप हो जाता है-

बीकानेरी	हिन्दी
पुन	पुण्य
भाग	भाग्य

७- मध्यवर्ती ह ध्वनि बीकानेरी म व एव कभी कभी 'य' म परिवर्तित हो जाती है-

बीकानेरी	हिंदी
मनवार	मनुहार
लोवार	लुहार

यदि "ह" ध्वनि 'व' म परिवर्तित नहीं होती तो वह लुप्त होकर मध्यवर्ती ध्वनियाँ को दीर्घ कर देती हैं-

बीकानेरी	हिन्दी
जर	जहर
पाढ़	पहाड़

अधिकांशतः अत्य "ह" ध्वनि भी लुप्त हो जाती है-

बीकानेरी	हिंदी
सो	सौह

८- धीरानेरी म ध ध्वनि का प्रयोग नहीं होता । 'ध' के स्थान पर 'ध' अथवा 'ग' का प्रयोग होता है-

धीरानेरी	हिन्दी	
सधमी	सधमी	ध > ध
राधम	राधम	ध > ग

९- 'ग', 'घ', 'ग' उच्च व्यंजननाम केवल दन्त त ध्वनि ही उत्पन्न होती है-

धीरानेरी	हिन्दी
सिना	गिना
गुमरा	खगुर

१०- धीरानेरी की अपनी वृत्तिपय विशेष ध्वनियाँ हैं जो ध्वनि ग्राम रूप में प्रतिष्ठित हैं-

१- 'ह	हावणो	(नहाना)
२- 'ह	ह्हे	(हम)

११- धीरानेरी म 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है । ल' हिन्दी के समान ही है पर ल उच्चारण के आधार पर बोली म वही उत्पन्न वही मूळ 'य' एवं वही पार्श्विक ध्वनिया की तरह व्यवहृत होता है-

ल	ल
काल (कल)	काल (काल)
गाल (गाल)	गाल (गाली)
बालो (बाला)	बालो (बलाना)

१२- धीरानेरी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि दन्त की उदात्त । अनुदात्त ध्वनियों में अन्तर आते ही अथ में अन्तर आ जाता है-

अनुदत्त	उदात्त
कोड (काव)	कोड (कुष्ठ राण)
कद (कम्बाई)	कद (कद)

१३- बीकानेरी म ऋ और रफ क्रमग रि र और रकार म परिवर्तित हो जात हैं -

बीकानेरी	हिंदी
रिमि	ऋषि
रस	ऋषु
करम	कम
घरम	घम

१४- अकारण अनुमानिकता की प्रवृत्ति बीकानेरी की मुख्य विशेषता है ।

१ ५ २ रूपात्मक विशेषताएं

१- बीकानेरी म जय आधुनिक भारतीय आय भाषाभा के समान दो लिंग एक दो बचन ही उपसर्ग्य होते हैं ।

२- बीकानेरी म कर्त्ता-कारक बिह का अभाव है साथ ही सक्रमक क्रियाओं के भूतकालिक रूप के साथ भी कर्त्ता जिना किसी परसम की सहायता के प्रयुक्त होता है । यथा—

मैं रोटी खाई	=	मैं रोटी खाई
छोरा दूध पियो	=	लडका ने दूध पिया

कम कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'ने' परसम का प्रयोग होता है ।

रोम न पड़ा दे	=	राम को पड़ा दो
---------------	---	----------------

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'र', "न परसम का प्रयोग होता है ।

पोछा र घास लायो है	=	पोछा के लिए घास लाया है
छापा ने आमीन	=	लडका के लिए आमीन

शरण एक अपादान कारक म ल परसम का प्रयोग होता है ।

पड़ल जी मू बाधिया हु	=	पड़ल जी से बाधे हुई
बागले मू पड़यो	=	छन पर स गिर गया

सम्यक् धारण की अभिव्यक्ति के लिए रो, रा री परगर्ग का प्रयोग होता है—

राग रा घोड़ा	=	राम का घोड़ा
राम री घोड़ी	=	राम की घोड़ी
राम रा घोड़ा	=	राम के घोड़े

अधिकतरण धारण की अभिव्यक्ति के लिए 'म' परगर्ग का व्यवहार होता है।

धर म बोयनी	=	धर म गहरी है
------------	---	--------------

बीकानेरी में निम्नलिखित दो प्रकार के निश्चय वाचन सबनाम के एक वचनीय रूप लिंग से प्रभावित होने हैं।

घो	पुल्लिंग	आ	पुल्लिंग
बा	स्त्रीलिंग	आ	स्त्रीलिंग

बीकानेरी में उत्तम एवं मध्यम पुरुष के एक वचन एवं बहु वचन के रूप निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हैं, म्हें	म्हे म्हो
मध्यम पुरुष	तू, तूँ	ये, यो

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में एक विशेष सबनाम 'आपा' भी उपलब्ध होता है। यह श्रोतृ साधक सबनाम "तू" है जिसमें श्रोता और वक्ता दोनों समाहित हो जाते हैं। यथा —

आपा दस बज्जी जीमोला'

इसका अर्थ होगा हम अपने मित्र के साथ (श्रोता सहित) दस गजे खाना खायेंगे।

बीकानेरी में पूर्णांक बोधक गणना सूचक ओकारात्त विशेषणों (दो सो आदि) के अतिरिक्त समस्त ओकारात्त विशेषणों में अपन विशेष्य के विग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तन होता है। अन्य विशेषणों (आकारात्त ईकारात्त, ऊकारात्त एवं यजनात्त) में अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता।

बीकानेरी म वतमान कात मे तिङ्-तीय क्रिया पद प्रयुक्त होने हैं
यथा—

बीकानेरी	हिन्दी
छाँरो करै है ।	सडना करता है ।
छोरो आवै है ।	सडकी आती है ।
छोरा साव है ।	सडके साते हैं ।

बीकानेरी म वतमान निश्चाय वतमान वृद्ध की महायता से बनाये जाने के स्थान पर मामा-य वतमान के साथ सहायक क्रिया के योग से बनाया जाता है—

है मारू है ।	मैं मारता हूँ ।
है जाऊ है ।	मैं जाता हूँ ।

वतमान वानिक सहायक क्रिया घातु ✓ह बीकानेरी म अन्य स्वतन्त्र क्रिया रूपां के समान ही तिङ्-प्रत्यय ग्रहण करती है यथा—

	एक वचन	बहु वचन
अन पुरुष	है	है
मध्यम पुरुष	है	हो
उत्तम पुरुष	है	हों

८— बीकानेरी म भूतकालिक सहायक क्रियारूप ✓ह घातु म वृद्ध प्रत्यय के योग से बनने हैं । साथ ही हिन्दी की भाँति ✓थ सहायक क्रिया घातु ही मानी जा सकता है । किन्तु जोकारात् वाली होने के कारण बीकानेरी म जहाँ आकारानता बहुवचन का बोध कराती है वहाँ हिन्दी म एक वचन का ।

छोरो हो, थो	(सडका था)
छोरा हा, था	(सडके थे)
छोगी ही, थी	(लडनी थी)

९— हिन्दी की ✓कर घातु के भूत कालिक वृद्धत रूप क्रिया, क्रिये, की, के स्थान पर बीकानेरी म कृष्ण क्रियो, करियो करिया करी रूप उपलब्ध होने हैं ।

१०- बीकानेरी में भूतनात् के निर्माण के लिए प्रायः पातु म -या प्रत्यय (स्वरान्त पातु एववचन म य्+ओ) एवं बहुवचन म -या (स्वरान्त पातु बहुवचन य्+ आ) प्रत्यय जोड़ा जाता है। -इयो प्रत्यय व्यञ्जनात् एववचन म एव-इय प्रत्यय व्यञ्जनात् बहुवचन म जोड़ा जाता है यथा-

स्वरान्त पातु

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	महे सायो	महा साया
मध्यम पुरुष	तू आयो	थ आयो
अन्य पुरुष	वे सायो	वा सायो

व्यञ्जनात् पातु

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	महे कानियो	महा कानिया
मध्यम पुरुष	तू पडियो	थे पडिया
अन्य पुरुष	वे मारियो	वो मारिया

११- बीकानेरी में भूतकालिक वृद्ध के रचना के लिए - इ' स्वार्थक प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग होता है यथा-

एक वचन	बहुवचन
सायोडो केला	सायाडा केला
तलियोडो पापड़	तलियोडा पापड़

सूचना-

स्वाधक प्रत्यय -औड भी माना गया है क्योंकि -ओ पर लिंग वचन-कारण का प्रभाव नहीं पड़ता।

१२- बीकानेरी में सविषय काल का निर्माण दो प्रकार से होता है-

(अ) सामान्य कथन में 'लो' या 'ला' के योग से -

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारे लो, ला	मारे ला

मध्यम पुरुष	मारो लो	मारो ला
उत्तम पुरुष	मार लो, ला	मारो ला
(आ)	एववचन	बहुवचन
अथ पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारसी	मारसी
उत्तम पुरुष	मारसी	मारसी

निश्चयाथ भाव का रोष कराने के लिए बीकानेरी म -ईउ प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप क अविध्यत् कान मे होता है -

लो मासीञ हू जाईसीञ आदि

१३- बीकानेरी म पूर्व कालिष क्रिया के निर्माण के लिए "र" क्रिया के अंत म लगाया जाता है। ध्वराज घातु से पूर्व 'य' ध्रुति का आगम होता है-

स्वरान

व्यजनात्

माय० == माकर

पडर == पडकर

आय० == आकर

जीमर == भोजन करके

जाय० == जाकर

रमर == खेलकर

१६ प्रत्यय का ऐतिहासिक स्वरूप

मरे लघु-शाध-प्रबध की सीमा बीकानेरी के प्रत्ययो तक ही सीमित है तथा उनका वशनात्मक अभ्यसन प्रस्तुत करना मेरा अभिधेय है। अतः प्रत्यय "र" के सामान्य आगम उनके प्रयोग एवं ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से विचार करना अनिवार्य है क्योंकि परम्परागत मायताओं एवं उनके अर्थ विस्तार की सीमाओं मे आज अंतर उपस्थित हो गया है।

सब प्रथम "प्रत्यय" शब्द का प्रयोग ऋग्वेद^१ म मिलता है तथा इनका अर्थ म केवल नूतनता का आशय व्यक्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पारिणि से पूर्व किसी व्याकरण-ग्रन्थ की अनुपलब्धि के कारण वेदा में "न प्रकार" के पारिभाषिक शब्द का स्वरूप देखन को नहीं मिलता क्योंकि "न" किसी प्रकार के नास्त्वग्रह नहीं है। सब प्रथम पारिभाषिक एवं रूप

अथ म इसका प्रयोग पाणिनि की अष्टाध्यायी म द्युतन का मिलता है । उन्होंने प्रत्यय के सम्बन्ध म कहा है कि जिन आवद्ध अंता का वलुन अध्याय ३ से ५ तक किया गया है वे प्रत्यय के नाम सं अभिहित हुए है जिनका योग प्रकृति मे परचात्वर्ती है तथा उसका आन्ति वलु उदात्त होता है ।^१

पाणिनि के व्याख्याता श्री वसु म व्याख्या करत हुए बताया है कि 'परसर्गोय द्युत्पादक' प्रत्यय हाते हैं जो प्रकृति, धातु क परचात् नवीन रूप-निष्पादन हेतु प्रयुक्त होता है तथा उसके आदि अंग पर पूरा यत्नायात होता है ।^२ इसी प्रकार श्री वसु ने लघु सिद्धांत कीमुदी म भी इसी मान्यता का दोहराया है ।^३

संस्कृत के कोषकारों ने भी इसी परवर्ती द्युत्पादक अक्ष के रूप म स्वीकार किया है । 'गण वल्गुद्रुम' म प्रत्यय को प्रकृति के उत्तर म आने वाला द्युत्पादक अक्ष माना है ।^४ 'वाचस्पति कोष' म भी इसी प्रकार के पारिभाषिक अर्थ का मान्यता दी गई है ।^५ इसके अतिरिक्त संस्कृत अंग्रेजी कोषा मे भी यही अर्थ मान्य हुआ है ।^६ श्री एम मोनियर विलियम द्वारा सम्पादित 'संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी' म पूरव प्रत्यय तथा पञ्च प्रत्यय स्वीकार किये गये हैं ।^७ संक्षिप्तसार व्याकरणों' म भी सुष तिङ्० कृत् तथा सङ्घित के आवद्ध अक्ष प्रत्यय के रूप मे स्वीकार हुए हैं ।^८ संस्कृत क अन्तगत आरभ्य अक्ष को ही प्रत्यय की संज्ञा दी गई है ।

हिंदी म भा संस्कृत की परम्परा को अपनाया गया है । हिंदी के

१—पाणिनि अष्टाध्यायी, १।२२

२—श्रीचंद्र वसु की अष्टाध्यायी आक पाणिनि, पृष्ठ ३४७

३—श्रीचंद्र वसु की लघु सिद्धांत कीमुदी पृष्ठ ६२

४—वोपदेव प्रयुक्तर जायमाना (गण वल्गुद्रुम)

५—वाचस्पति वाचस्पति कोष, पृष्ठ ३७१

६—एम मोनियर विलियम संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, पाट २, पृष्ठ १०५६

७—वही, पृष्ठ ६७३

८—संक्षिप्त व्याकरण—(प्रत्यय इति सुषतिङ्कृतद्धिता प्रत्यया) पृष्ठ ४२६

प्रमुख व्याकरण श्री कामता प्रसाद गुरु ने उपसर्ग एवं प्रत्यय सम्बन्धी मायता पर विचार व्यक्त करत हुए उपसर्ग को पूर्व व्युत्पन्न प्रत्यय के रूप में तथा प्रत्यय को पर व्युत्पन्न आगच्छ स्पासि के रूप में स्वीकार किया है।^१ उन्होंने व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराने वाले आवद्ध स्पासा को भी प्रत्यय की सीमा में स्वीकार कर उन्हें चरम प्रत्यय के नाम से अभिहित किया है।^२ श्री किशोरीदास बाजपयी ने भी हिन्दी शब्दानुशासन' में इसी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है।^३ श्री धीरेन्द्र वर्मा ने भी अन्य विद्वानों के मतानुसार ही प्रत्यय सम्बन्धी मायता का प्रस्तुत किया है। ससृजत सत्ता प्रायः तीन शब्दा से मिलकर बनती है चातु प्रत्यय तथा कारक चिह्न। प्रत्यय से मिलकर मूल शब्द बनता है और उसमें आवश्यकतानुसार कारक चिह्न लग जाते हैं।^४ श्री उदयनारायण तिवारी ने भी ससृजत तथा हिन्दी की पूर्व परम्पराओं से प्रेरित होकर उपसर्ग एवं प्रत्यय सम्बन्धी मायताएँ व्यक्त की हैं।^५ डॉ० लक्ष्मी सागर बापूण्य के मतानुसार प्रत्यय वह शब्द है जिसका अपना कोई स्वतन्त्र बोधात्मक अर्थ नहीं होता, किन्तु दूसरे शब्दों के साथ लगकर सार्पक होता है। आधुनिक भाषा विज्ञानी प्रत्ययों को आवद्धपद ग्राम कहते हैं।^६ डॉ० भोलानाथ तिवारी एवं टोटीटारी आदि विद्वानों ने भी इसी मत का समर्थन किया है।^७

समग्र रूप से दृष्टिपात करने पर प्रतीत होता है कि सभी विद्वानों ने विभक्ति, भग, उपसर्ग सभी का शब्द साधक प्रत्यय के अर्थ में प्रत्यय के रूप में स्वीकार किया है। परिभाषाओं को यदि किसी भी प्रकार से धीरे उपनिजी की परिभाषा स्थापनीय है। उनका अनुसार प्रत्यय भाषा के वे आगच्छ अक्ष हैं जिनमें स्वतन्त्र रूप से अर्थबोध की क्षमता नहीं होती बल्कि स्वतन्त्र स्पासि के साथ

- १— श्री कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ३३०
- २— वही पृष्ठ ३३१
- ३— श्री किशोरीदास बाजपयी शब्दानुशासन पृष्ठ १३२
- ४— डॉ० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृष्ठ २२२
- ५— डॉ० उदयनारायण तिवारी हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास
- ६— डॉ० लक्ष्मीसागर बापूण्य हिन्दी भाषा का इतिहास
- ७— डॉ० भोलानाथ तिवारी हिन्दी भाषा पृष्ठ ११६-२६

युक्त होकर ही वे अवस्था को प्राप्त करते हैं।^१

डॉ० चंद्रमान रावत ने भी अप्रत्यक्ष रूप में प्रत्यक्षा के शब्द सामक पूरे एवं परस्पर को स्वीकार किया है। इन्होंने अपने 'गौर प्रबन्ध' के "पद विचार" अध्याय में लिखा, बचन एवं कारण बोधक आवद्ध अंश को भी प्रत्यक्षा के रूप में स्वीकार किया है।^२ डॉ० रमेशचन्द्र जैन भी बद्ध रूपांग के विश्लेषण में श्री उपनिषद् की भावना को स्वीकार करते हुए लिखा है— "बद्ध रूपांग का गान नहीं माना जा सकता क्योंकि ये रूपांग किसी शब्द के साथ जुड़ कर ही किसी वाक्य रचना में व्यवहृत होते हैं। किसी भाषा के निर्माण में इन शब्दों का महत्व योगिक शब्द रचना तक ही सीमित है— शब्दों का योग किसी शब्द में होता है।^३ डा० कनकाशचन्द्र अग्रवाल ने भी डा० उपरितोषी की भावना को स्वीकार किया है। इनके अनुसार प्रत्यक्षा के मुख्यतः दो भेद हो सकते हैं— (१) व्युत्पादक (२) व्याकरणिक। व्याकरणिक प्रत्यय सम्बन्धी विवेचन पद विचार (संज्ञा, सर्वनाम विशेषण क्रिया आदि) में हो चुका है। व्युत्पादक प्रत्यय वे हैं जो किसी धातु अथवा प्रकृति के पूर्व भाग अथवा पर भाग में लगकर योगिक शब्द रचना करते हैं।^४

विदेशी भाषा शास्त्रियों ने भी पदिसंग्राम वर्गीकरण सम्बन्ध में प्रत्यय का स्वरूप निर्धारण किया है जो इस प्रकार है—

- १— जो सटीक रूपांग स्वतन्त्र नहीं है वे आवद्ध अंश हैं।^५
- २— भाषीय स्वरूप, जिसका उच्चारण (अथ ध्वनितता की दृष्टि से) स्वतन्त्र रूप में सम्भव नहीं होना, आवद्ध अंश कहा जाता है।^६
- ३— प्रयोग की दृष्टि से मूलांश के साथ आवद्ध अंश का प्रयोग

- १— डा० मुरारीलाल उपरितोषी हिन्दी में प्रत्यय विचार पृष्ठ २०
- २— डा० चंद्रमान रावत मथुरा जिले की बानी (पद विचार अध्याय)
- ३— डा० रमेशचन्द्र जैन हिन्दी सामान्य रचना का अध्ययन, पृष्ठ ५-६
- ४— डॉ० कनकाशचन्द्र अग्रवाल गवावाणी बोली का वणुनात्मक अध्ययन
- ५— हवेट ए. कान इन माडर्न लिग्विस्टिक्स, पृष्ठ १६८
- ६— क्रूमफील्ड संक्षेप, पृष्ठ १६०

होता है उन्हें प्रत्यय के नाम से अभिहित किया जाता है ।^१

४— आवद्ध अक्ष का प्रयोग किसी पदिसंग्राम के साम अनिवार्य है, प्रत्यय आवद्ध अक्ष है ।^२

५— पदिसंग्राम का विभाजन मूल एवं प्रत्यय के रूप में किया जाता है ।^३

उपयुक्त विद्वानों भाषाशास्त्रियों के विचारों पर विह्वल दृष्टिपात करने के उपरान्त निम्नावित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

अ— आवद्ध अक्ष एक पदिसंग्राम है ।

आ— जो स्वतन्त्र रूपों का आवद्ध रूपों के साथ प्रयुक्त होता है ।

इ— जिसका स्वतन्त्र उच्चारण एवं प्रयोग भाषा में सम्भव नहीं है ।

ई— जिसके प्रयोग की क्रमिक व्याख्या होती है ।

उ— जिसे सामान्य रूप से " एपिक्सेल " के नाम से अभिहित किया गया है ।

सभी मतों पर समग्र रूप से विचार करते हुए हम कह सकते हैं कि भाषा के ये सामान्य एवं गौण अक्ष जिनका स्वतन्त्र प्रयोग सम्भव नहीं है आवद्ध अक्ष के नाम से अभिहित किये जा सकते हैं तथा इसका समा नायक प्रत्यय अथवा पदिसंग्राम को माना जा सकता है । इस प्रकार प्रत्यय शब्द में तब ही अक्ष का अभिविवेक होगा और वही प्रस्तुत लघु-शेष-प्रवक्ष की सीमा के निर्धारण में आधार सिद्ध होगा ।

उपयुक्त निष्कर्ष के आधार पर प्रत्यय की सीमा के अनर्गत भारतीय मनीषियों द्वारा निर्धारित सभी उपसर्ग, प्रत्यय (अपने सङ्कचित रूप में)

१— ब्रिलिंग एच० हरिल स्टुबनरल लिग्विस्टिक्स, पृष्ठ १६१

२— आर० एच० टीविमस जनरल लिग्विस्टिक्स इन इस्ट्रक्चर

३— एच० ए० ब्लैसन जे० आर० लिग्विस्टिक्स सर्वे, पृष्ठ २०६

विभक्ति अथवा इमरा सूचक कोई भी शब्द जा सकता है। मैंने अध्ययन मुविधा की दृष्टि में इस प्रत्यय 'त' को तीन भागों में विभाजित किया है—

(१) व्युत्पादक प्रत्यय

(२) विभक्ति प्रत्यय

(३) पद प्रत्यय

१— व्युत्पादक प्रत्यय

भाषा के अतगत 'त' शब्दों की दृष्टि से व्युत्पत्ति का विशेष महत्त्व है। व्युत्पत्ति के क्षेत्र में हम 'त' के संरचना विधान, स्वतंत्र रूपांश, आवद्ध रूपांश एवं उसके स्रोत पर विचार करते हैं। इसे क्रमशः वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण के नाम से अभिहित किया जा सकता है।

व्युत्पत्ति के फल स्वरूप 'त' का मूल एवं व्युत्पन्न रूप हमारे समक्ष उपस्थित होता है। व्याकरणों ने मूल रूप को रूढ़ तथा व्युत्पन्न रूप को यौगिक की संज्ञा दी है। मूल से उनका आगम है जो भाषा के सर्व बोधक एवं उसके विधान वाचक अंग है जिसे नाम या आख्याय की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।^१ इसे संस्कृत व्याकरण की शब्दावली में प्रातिपदिक एवं धातु के नाम से अभिहित किया गया है। संस्कृत व्याकरण के अतगत प्रातिपदिक या धातु के साथ इतर उपसर्ग प्रत्यय आदि के योग से नवीन शब्दों की संरचना का बोध कराया गया है। प्रातिपदिक एवं धातु एक प्रकार से स्वतंत्र रूपांश के नाम से आधुनिक भाषाशास्त्रीय शब्दावली के अतगत अभिहित किया जा सकता है।

यौगिक 'त' से आगम है सूत्र— उपसर्ग या प्रत्यय के योग द्वारा शब्दों की अनित्य सन्धि तथा फल स्वरूप उसमें नवीन अर्थघोषण की क्षमता। उपसर्ग एवं प्रत्यय को आधुनिक भाषा शास्त्रीय शब्दावली में आवद्ध रूपांश के नाम से अभिहित किया जा सकता है।

यों की दृष्टि से विचार करने के लिए विद्वान स्वतंत्र रूपांश के मूल

एष तत्र पद्वचने का प्रयास करते हैं, जिससे पारिभाषिक शब्दावली में तत्सम नाम से अभिहित किया जाता है एवं इसके विवक्षित रूप को तदभव की सहा दी जाती है। इसके उपरांत उसके मूल भाषापरिवार का ज्ञान आवश्यक होता है। इसके अभाव में उनके अर्थ सोता पर विचार करते समय यह भी देखा जाता है कि अमुक स्वतंत्र रूपार्थ की सृष्टि का कौनसा इतर आधार सम्भव है। इसका प्रयोग सजा, सबनाम एवं विशेषण के साथ होने पर नवीन स्वतंत्र रूप सजा को जन्म देता है। उन्हें मन्कृत में ललित व्युत्पादक प्रत्ययों के नाम से अभिहित किया गया है एवं जो प्रत्यय धातु के साथ प्रयुक्त होकर स्वतंत्र रूपार्थ की अभिनय सृष्टि करते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय के नाम से अभिहित किया गया है। इन प्रत्ययों द्वारा निष्पन्न रूप क्रमशः ललिततात एवं कृदन्त के नाम से अभिहित किये जाते हैं।

वर्णनारम्भ अध्ययन के अंतर्गत भाषा के सर्वप्रचलित स्वरूप का ही ग्रहण किया जाता है। प्रत्ययों के वर्णनारम्भ अध्ययन में प्रत्यय विधान की दृष्टि में प्रचलित शब्दों के संरचनारम्भ स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है अतः मैंने बीकानेरी बोली के उन्ही प्रचलित स्वतंत्र एवं आच्छेद रूपार्थों का अध्ययन प्रस्तुत किया है जिनके साथ ही लण्ड सम्भव हो एवं उनका प्रयोग प्रचलित हो। यदि कोई भी पदिसंग्राम विदेशी भाषा में आया हो अथवा उसका तत्सम या तदभव रूप हो तो उसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है क्योंकि के बीकानेरी के सप्तदशरम्भ नियम एवं विधानों से अभिनिमित्त नहीं किये जा सकते। उपर्युक्त विवरणों के आधार पर लघु शेष प्रबंध में बीकानेरी बोली के यौगिक शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि में रसकर विश्लेषण किया गया है।

२- विभक्ति-प्रत्यय

व्याकरण के अंतर्गत भाषा के अनुरूप एवं इस आधार पर उसकी व्यवस्था का सर्वप्रारंभ कराया जाता है।^१ इसके अंतर्गत स्वतंत्र रूपार्थों का वाक्य में स्थानक्रम तथा उसका इतर स्वतंत्र रूपार्थ के साथ सर्वप्रारंभ बोध का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। स्थानक्रम का अध्ययन वाक्य विज्ञान के अंत

गत सम्भव होता है जो मरे प्रबंध की सीमा के बाहर है। इस प्रबंध के अध्ययन क्षेत्र में बाक्य व अंतर्गत स्वतंत्र रूपांगों के पारस्परिक संबंध बाक्य अंशों का वण्मात्मक विस्तारण प्रस्तुत करना अभिहित है। व्याकरणों में इस प्रकार के संबंध-सूचना का सामान्य विस्तारण विभिन्न वर्गों में दिया जित करने किया है। जो इस प्रकार है—

अ- नामपरक

- (क) लिंग सूचक
- (ख) वचन सूचक
- (ग) कारक संबंध सूचक

आ- आख्यातपरक

- (क) काल
- (ख) अर्थ
- (ग) वाच्य
- (घ) लिंग, वचन एवं पुरुष

इस प्रकार के व्याकरणिक संबंध सूचकों का नामकरण भी भिन्न भिन्न प्रकार से किया गया है। संस्कृत व्याकरणों ने नाम शब्दों के संबंध सूचकों को 'सुप' प्रत्यय तथा आख्यात संबंध सूचकों को 'तिङ्' प्रत्यय के नाम से अभिहित किया है। सुप प्रत्यय व है जिनका योग सत्ता सवनाम एवं विशेषण रूपांश के साथ लिंग वचन एवं कारक बोधक कोटिया की अभिव्यजना के लिए होता है। तिङ् प्रत्यय वे हैं जो क्रिया बोधक स्वतंत्र रूपांगों के साथ प्रयुक्त होकर तत्संबंधी विभिन्न कोटिया के अर्थ बोध की क्षमता रखते हैं जिनमें अंतर्गत क्रिया रूपांगों के वाच्य काल प्रयोग व रीति एवं लिंग वचन पुरुष कोटिया के अर्थ व्यञ्जन की क्षमता होती है। इस प्रकार इन प्रत्ययों में तिङ् स्वतंत्र रूपांगों को क्रमशः सुवर्त एवं तिङ् त पत् के नाम से अभिहित किया गया है। हिन्दी में इनके लिए कोई सर्वसम्मत नाम नहीं मिलता। प्रायः संस्कृत व्याकरण परम्परा का ही हिन्दी में अनुसरण

किया गया है। इस प्रकार सब मूलका को मिला एक ही समान सत्ता विभक्ति प्रत्यय प्रदान की है। विभक्ति प्रत्यय वे हैं जो धातु अथवा प्रातिपदिक के पदचान् लग कर उसे वाक्य में व्यवहार योग्य पद की सत्ता प्रदान करते हैं। सभी प्रकार के व्याकरणिक कोटि के सब मूलक इस सीमा में आ जाते हैं। इस प्रकार नाम एक आख्यात रूप का व्याकरणिक सब मूलक अथ सभी इस 'विभक्ति' की सीमा में स्वीकार किया जा सकते हैं।

३- पद प्रत्यय

प्रत्यय भाषा के अंतर्गत कुछ इस प्रकार के रूपों हैं, जिन्हें बना करणा ने स्वतंत्र रूपों में स्वीकार किया है, पर व इस सीमा में नहीं आते क्योंकि इनमें प्रत्ययों के समान स्वतंत्र अथ बोधक क्षमता नहीं होती। व किसी अन्य स्वतंत्र रूपों के साथ प्रयुक्त होकर ही निहित अथ व बोधक होता है। अतः इस प्रकार के रूपों को इतर स्वतंत्र रूपों के समान स्थान दिया जाना अनुचित है। हिन्दी की व्याकरण में इन्हें लो, मर, भी हो, आदि क्रिया विनेयस के अंतर्गत अव्यय कहकर वर्णित किया गया है परन्तु ये ऐसे अथ हैं जिन्हें निश्चय पूर्वक अव्यय कहा जा सकता क्योंकि उनका व्यवहार सभी मायक होता है जब ये वाक्य के किसी पद के पदचान् आते हैं।^१ मेरे विचार से इस प्रकार के रूपों का पृथक् वग में स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि एक ओर तो उनमें व्याकरणिक बाँटि के सब मूलक अथों के समान स्वतंत्र रूप से अथ बोधक क्षमता नहीं होती तथा न उनका प्रयोग वाक्य में अनिवार्य ही होता है। ये स्वतंत्र रूपों के निहित अथ में केवल बल की वृद्धि ही करते हैं न कि अभिन अथ की धोतनता। यदि इन अथों का वाक्य से निकाल दिया जाय तो वाक्य के अथ में किसी प्रकार का अभाव नहीं होता, अतः मैंने इस प्रकार के स्वतंत्र रूपों का अध्ययन पृथक् वग में किया है। इन्हें पद की सत्ता दी जा सकती है क्योंकि इनका प्रायः प्रयोग प्रत्ययों के उपरान्त होता है।

नाम-प्रत्यय

प्रस्तुत अध्याय का प्रतिपाद्य नाम प्रत्यय है। नाम प्रत्यय का अभिप्राय ऐसे ध्युत्पादक प्रत्ययो से है जो सत्ता विशेषण एवं क्रिया विशेषण के पूर्व मध्य एवं अत्य में सलग्न होकर अभिनव नाम वदा की रचना करते हैं। इस अध्याय में केवल बीकानेरी के ही नाम 'युत्पादक प्रत्ययो का वणनारम्भ विशेषण प्रस्तुत किया गया है। तत्सम प्रत्ययो को जिनका प्रयोग बोली में होता है यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है क्योंकि उनका विवेचन संस्कृत के वणनारम्भ अध्ययन में ही सम्भव है यही स्थिति विदेगी स्वतंत्र रूपान्ता की है।

बीकानेरी नाम प्रत्ययों को योग की दृष्टि से ३ वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

- १— पूर्व प्रत्यय
- २— मध्य प्रत्यय
- ३— अत्य प्रत्यय

१- पूर्व-प्रत्यय

जो प्रत्यय प्रवृत्ति के आदि भाग में सलग्न होकर प्रवृत्त्यय में अभिनवता लाते हैं, पूर्व प्रत्यय की सत्ता से अभिहित किया जात है।

२- मध्य-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के मध्य याग से अर्थ अभिनवता का आगम होता है, उन्हें मध्य प्रत्यय कहा जाता है। मध्य प्रत्यय के अंतगत यह उल्लेखनीय है कि मध्य स्वर विकार ही अर्थ अभिनवता का कारण होता है, यथा—

उत्तर > उतार

३- अन्त्य-प्रत्यय

जो प्रत्यय प्रकृति एवं सङ्ग शब्दा (सज्ञा, सवनाम, विनोपण एवं क्रिया विनोपण) के अंत में सलग्न होकर अर्थ अभिनवता लाते हैं उन्हें अन्त्य प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किया जाता है।

२ १ पूर्व-प्रत्यय

बीकानेर में पूर्व प्रत्ययों का याग सज्ञा, विनोपण, क्रिया विनोपण, प्रातिपदिकों एवं धातुओं के पूर्व उपलब्ध होता है। सवनाम पदा के पूर्व पूर्व प्रत्ययों का याग दखन की नहीं मिलता। बीकानेरी में निम्नांकित पूर्व-प्रत्यय उपलब्ध होते हैं—

/अ/, /अण/, /अल/, /ओ/, /क/, /कु/, /को/, /तर/
/लूओ/, /डु/, /न/, /पड/, /पर/, /को-/, /बद/, /बि/, /बै/, /ला/,
/स/, /सर/, /मु/, /हम/

व्युत्पादकता की दृष्टि से उपर्युक्त सभी पूर्व प्रत्ययों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१— समान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय

२— असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय

३— समान असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय

१ समान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

एक व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से भूनाम कोटि के ही रूप निष्पन्न

होते हैं अर्थात् जो प्रत्यय सज्ञा, विशेषण अथवा धातु के पूर्व म सलग्न होकर पुन सज्ञा, विशेषण, धातु ही व्युत्पन्न करने हैं समान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। उदाहरणार्थ /पङ्गादी/ म /पङ्-/ पूर्व प्रत्यय है जो /दादी/ सज्ञा के पूर्व सलग्न होकर सज्ञा ही व्युत्पन्न करता है।

२ असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

ऐसे व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से मूलार्थ कोटि से इतर रूप निष्पन्न होते हैं, असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। उदाहरणार्थ /दरअसल/ मे /दर/ पूर्व प्रत्यय /असल/ विशेषण के पूर्व सलग्न होकर क्रिया विशेषण व्युत्पन्न करता है।

३- समान-असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

ऐसे व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से मूलार्थ अथवा इतर कोटि दोनों प्रकार के रूप निष्पन्न होना है समान असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। उदाहरणार्थ /ज/ पूर्व प्रत्यय को प्रस्तुत कर सकते हैं /अकाज/ म /ज/ पूर्व प्रत्यय /काज/ सज्ञा से पूर्व सगकर /अकाज/ सज्ञा व्युत्पन्न करता है परन्तु यही पूर्व प्रत्यय /जचेत/ म /चेत/ सज्ञा म सलग्न होकर /जचेत/ विशेषण व्युत्पन्न करता है। ऊपर समान एवं असमान कोटि म गिनाये गये पूर्व प्रत्ययों के अतिरिक्त ये सभी पूर्व प्रत्यय इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं।

बीकानेरी म कुछ पूर्व प्रत्यय इस प्रकार के हैं जिनका अल्प प्रत्यय प्रतिवर्धित है, यथा—

नि - जो

निमलो

मू - जो

मूगलो

००ण - ओ

००णगलो

बीरानरी म कहा वही पूव प्रत्यय के प्रभाव के परिणाम स्वरूप मूर्ताय
का यदि स्वर लुप्त हो जाता है एवं अत्य प्रत्यय प्रतिवर्धित हो जाना है
च + ईजत + ई

चजती

बीरानरी बोली म पूव प्रत्ययों का योगिक विधान सदिलष्ट कोटि का
है एवं सत्या की दृष्टि से एक पूव प्रत्यय का योग ही उपलब्ध होता है दो या दो
से अधिक पूव प्रत्ययों का योग देखने का नहीं मिलता ।

बीरानरी म उपलब्ध पूव प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार
प्रस्तुत किया जा सकता है-

पूव प्रत्यय	मूलान	व्युत्पन्न सज्ञा रूप	अर्थ
अ	काल	अकाल	हीनता
अ	न्याव	अन्याव	'
अग	बग	अगबग	अभाव
अल	मस्ती	अलमस्ती	भाव
औ-	गुण/गग	औगण	हीनता
व	पूत	वपूत	'
हु	सुगन	हुसुगन	'
हु	ठोड	हुठाड	'
ची	बार/ओ	चीबारा	'
तर	माट/आ	चोमाटा	सह्यायक
सू/ओ	मूल	तरमूल	"
हु	जड/आ	तोडडा	अ ग विशेषमूचक
न	भाग/हाम/का	इवाग	हीनता
पड	पूत /ई	नपुनी	"
पर	पानो	पडपानो	अभाव
पा	देस /ई	परदमी	पूव पीडी
ब -	सीडो	पामीडो	पराया
	नाम	बनोम	स्थूलता
			बुरे

पूव प्रत्यय	मूलान	युत्पन्न सज्ञा रूप	अय
वे -	ईजत/ई	वेजती	(निषेध सूचक)
वै -	राग	वरागी	(अभाव सूचक)
सा -	परवाई	सापरवाई	(निषेध सूचक)
स -	पूत	सपूत	(श्रेष्ठता सूचक)
सर -	पच	सरपच	(मुख्यता सूचक)
सु -	नाम	सुनाम	(श्रेष्ठता सूचक)
हम -	दरदी	हमदरदी	(सहानुभूति ,,)

२ २ मध्य-प्रत्यय

बीकानेरी बोली में मध्य प्रत्यय यो भी उपलब्ध होता है। मध्य प्रत्यय योग के अंतर्गत स्वर विकार ही अथ अभिनवता का कारण होता है। इसका बलान्तरमक विश्लेषण हम प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

गठन	मध्य प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
वड	अ > आ	वाड
उतर	अ > आ	उतार
भूत	उ > आ	भात
हो	अ > आ	बाहो

२ ३ अत्य-प्रत्यय

बीकानेरी में कुछ अत्य प्रत्यय पातु में सामान्य होकर सना विनायण आदि विविध पदा की रचना करते हैं एवं कतिपय प्रत्यय सना सङ्गनाम विनेयण आदि में सामान्य होकर पुन विविध प्रकार के सना सङ्गनाम विनायण पदा की रचना करते हैं। इन आधार पर हम बीकानेरी अत्य प्रत्यय को भी वगों में विभाजित कर सकते हैं-

क- प्रथम पर प्रत्यय

ख- द्वितीय पर प्रत्यय

२ ३ १ - प्रथम पर प्रत्यय

जो अत्य प्रत्यय धातु में सलग्न होकर सज्ञा, विशेषण आदि पदों की रचना करते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये जाते हैं।^१ नीचानेरी में उपलब्ध सजीव प्रथम पर प्रत्यय अवलिखित हैं जो नाम पदों की रचना करते हैं—

/—०/ /—अक/ /—अक/ओ/ /—अक/आई/ /—अत/ /—अन/ /—अण/ /—अन्त/ /—अद/ /—आ/ई/ /—आव/ओ/ /—आप/ /—आप/आ/ /—आर/ई/ /—आर/ओ/ /—आव/ /—आवट/ /—आव/अण/ओ/ /—इय/आ/ /—इस/ /—एज/ /—एर/आ/ /—आइ/ई/ /—तोड/ई/ /—आण/ /—ओण/ओ/ /—ओस/ /—क/आ/ /—क/ई/ /—ट/आ/ /—ट/ जो /—त/ई/ /—स/इय/आ/ /—ए/ई/ /—ए/ओ/ /—व/ई/ /—आव/अण/ई/ /—वाण/ /—वार/ओ/ /—हट/

उपयुक्त प्रथम पर प्रत्ययों का वगणनात्मक विशेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/—०/	नाच	/—०/	नाच भा० वा० सज्ञा
	तप	/—०/	तप "
	भोग	/—०/	भोग भा० वा० सज्ञा
	फेर	"	फेर "
	घाट	"	घाट-पदार्थ वा० सज्ञा

१— इस अध्याय में केवल नाम व्युत्पत्तिक प्रथम पर प्रत्ययों का ही विवेचन किया गया है —

/—अक/	बैठ	/—अक/	बैठक अधिकरण वा ■
	रम	"	रमक भा० वा० स०
/—अक/ओ/	भप	/—अक/ओ/	भपको कत वा० स०
/—अक/आई/	फट	/अक/आई/	फटकाई "
/—अत/	बल	—अत	बलत भा० वा० स०
	खप	'	खपत
	रग	"	रगत "
/—अन/	जल	—अन	जलन ■
/—अण/	बेल	—अण	बलण वस्तु वाचक सगा
	घडक	—अण	घडकण भा० वा स०
	चल	—अण	चलण
/—अत/	भड	—अत	भडत "
/—अन/	बड	—अन	बडत '
/—आ/ई/	यो व	आई	योवाई '
	वर	आ/ई	वराई '
	चर	आ/ई	चराई '
	जड	आ/ई	जडाई "
/—आव/आ/	चन	आव/ओ	चडावा कत वा० स०
	कड	आव/ओ	कडावो पन्नाथ वा० स०
	मुल		मुनावा "
/—आप/	मिल	—आप	मिलाप भा० वा० स०
/—आप/ओ/	पूज	—आप/ओ	पूजापो '
/—आर/ई/	पूज ॥ पूज	—आर/ई	पुजारी कत वाचक राजा
	पिचक		पिचकारी करण वा० स०
/—आर/आ/	निपट	आर/आ	निपटारो भा० वा० स०
/—आव/	धुम ॥ धुम	—आव	धुमाव
	भुग	'	भुगाव "
—आव/आ	दग	/—आव/आ/	देसावो '

/—आवट/	थक	—आवट	थकावट भा० वा० स०
/—आव/अण/ओ/ रख	बण	,	बणावट " "
/—इय/जा/	घट	—आव/अण/ओ	रखावणो कत वाचक स
/—इस/	सस	—इय/आ	घटिया " "
/—एज/	माल	,	सतिया " "
/—एर/ओ/	बघ	—इस	मातिस भा० वा० स०
/—ओड/	बस	—एज	बघेज " "
/—ओट/ई	हल	—एर/ओ	बसरा ,
/—आड/ई/	कस	—ओड	हलाड ,
/—आण	राल	—ओट/ई	कमोटी करण वा० स०
/—आण/ओ	मल	—ओड/ई	रावाडी कत ,
/—ओस/	बछ	—आण	मलाण ,
/—क/आ	पाड	—ओण/ओ	बछोणो वस्तु वाचक स
/—क/ई	छोल ८ छल	—आस	पाडोस भाव वा० स०
/—ट/आ/	ऊप	—क/आ	छलका कम वा० स०
/—ट/ओ/	सर	—क/ई	भपवी कम वा० स०
/—त/ई	ऊपट	—ट/आ	सरटा भा० वा० स०
	चात	—ट/ओ	ऊपट दो भा० वा० स०
	कर	—त/ई	चातती भा० वा० स०
	बल		करती ,
/—त/इय/आ/	भर	—त/इय/ओ/	बलती " "
/—ए/ई/	कर	—ए/ई	भरतिया वस्तु वा० स०
	घट	,	करणी भा० वा० स०
	कतर		चटणी वस्तु वा० स०
ए/आ/	गाव	—ए/ओ	कतरणी करण " "
/—व/ई/	ठक	"	गावणो कम ,
	घो	—व/ई/	इवणा करण " "
			घावी कत " ,

/—आव/अण/ई/	पैर	—आव/अण/ई	पैरावणी कम वा० स०
	जम	'	जमावणी ' "
/—बोन/	पक्	—बोन	पक्बोन " "
/—वार/ओ/	घट	—वार/ओ	घटवार भा० वा० स
/—हट/	गडगड	—हट	गडगडाहट " '

२ ३ २ द्वितीय पर प्रत्यय

जो प्रत्यय एक गण अर्थात् सजा, सवनाम, विशेषण एवं क्रिया विभेपण गण के अंत भाग में सलग्न होकर अनुमगी सजा, सवनाम, विभेपण एवं क्रिया-विभेपण पदा की सरचना करते हैं, वे प्रत्यय द्वितीय पर प्रत्यय की सजा से अभिहित किये गये हैं। बीकानेरी बोली में उपलब्ध नाम व्युत्पादक द्वितीय पर प्रत्ययों को योग की दृष्टि से निम्नोक्त चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१— सजा से सजा

३— विभेपण से सजा

२— सवनाम से सजा

४— क्रिया-विभेपण से सजा

२ ३ २ १ सजा से सजा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी बोली में सजा से सजा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/—अक्/ /—अक्/ई/, /—अक्/ ओ/ /—अट/ई/ /—अड
/—अण/ /—अत/ /—अण/ई/, /—अल/ /—अग/आ/ /—आ
/—ई/ /—आक्/ /—आक्/आ/ /—आड/ /—आड/ई/ /—आत/, /
/—आप/आ/, /—आयत/, /—आर/, /—आर/ई/ /—आर/ ओ/, /
/—गाल/ई/ /—आस/ /—इय/आ/, /—इय/ओ/ /—इयत/, /—इन्
/ आ/, /—ई/, /—इक् ओ/ /—ईन/ओ/, /—उ/ओ/, /—एर/, /-
/ एर/ओ/, /—एन/ /—ओ/ /—ओ/ई/ /—ओड/ओ/ /—ओए
/—ई/ /—ओण/आ/ /—ओन/ई/ /—ओत/ओ/ /—आल/ई/, /—क्
/—क्/—क्न/आ/, /—क्/आ/ /—क्/आर/ /—क्/इ/, /—ग/ई
/—गर/ /—गार/ गर/ई/ /—गार/ /—डाआ/, /—च/ई/ /—चा

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
	सफ	'	सफगा गुण वा० स०
/आ/ई/	लोग ७७ लुग	-आ/ई	लुगाई स्त्री '
	पडत		पडताई भा० वा० स०
	कोम ७७ कम		कमाई "
/आ/	डोर	आ	डोरा वस्तु '
/-आक/	पास	-आक	पोसाक वस्तु "
/-आक/आ/	फट	आक/आ	फटाका वस्तु '
	घम		घमाका "
/-आड/	जाग ७७ जुग	आड	जुगाड भा० वा स०
	लात ७७ लत	'	सताड
/-आड/ई/	आग ७७ अग	-आड/ई	अगाडी स्वाधक
	जव	'	जवाडी अ ग वा० स०
/-आत/	जवार	-आत	जवारात समुदाय वा
/-आप/ओ/	राड ७७ रड	-आप/ओ	रडापो भाव
/-आयत/	पच	-आयत	पचायत
/-आर/	सो व	आर	सोवार व्यवसाय वा म
	सोनो ७७ सोन	'	सोनार "
	कु भ		कु मार
/-आर/ओ/	बणज	-आर/ओ	बणजारा वन वा म
	ठठ		ठठारा '
/-आर/ई/	जुओ ७७ जू	-आर/ई	जुआरी व्यनमाय वा म
/-आस/ई/	हाय ७७ हय	-आस/ई	हयाली अ ग '
/-आस/	बाड	-आस	बागस मा वा स०
	भार	'	भारास '
/-रय/आ/	बंमर	रय/आ	बंसरिया रग वा० स०
	पू न गु ना व	'	पू न गु ना बिदा "

/ इय/ओ/	इवाड	इय/ओ	क्याडियो व्यवसाय वा० स
	उकड	"	रोडियो "
/ इयत/	इन्सोन	इयत	इन्सानियत भा० वा० स०
/-इन्/ओ/	रान	-इन्द/ओ	रानिन्दो राग "
/ ई/	परत्त	इ	परखी वस्तु० वा० स०
	राब ७ रव	-इ/ई	रबडो व्यजन वा० स०
/ इच/ओ/	बाग ७ बग	इच/आ	बगीचो वहुद् काप० '
/ इन/ओ/	माह ७ म	ईन/आ	मईनो स्वाधवा स०
/-उ/ओ/	राड ७ रड	उ ओ	रहुआ सम्बन्ध वा० स०
/ एर/	टटा ७ टट	एर	टटर "
/-एर/ओ/	सूट ७ लुट	एर/ओ	सुटेरो व्यवसाय वा० स०
/ एल/	पूत ७ फुल	-एल	पुनन सबध आ० म०
/-ओ/	फेर	-ओ	फेरा भा० वा० स०
	मल	"	मला सबध वा० स०
	बास		बासा आवास वा० स०
/-ओ ई/	कन्द	-ओ/ई	करोई व्यवसाय "
	बन द	-ओ/इ	बेन्दोई ^१ सम्बन्ध वा० '
	नलण	-ओ/ई	नलणोई " "
/-आड/ओ/	हाथ ७ हथ	ओड/आ	ह्वाहा करण वा० स०
/-ओण/ई/	जठ	-ओण ई	जेठोली स्त्री वा० स०
/-ओत/ई/	बाप ७ बप	-ओत/ई	बपोनी परम्परा सूचक
/-ओण/ओ/	घर	-ओण/ओ	घणोणो सबध सूचक
/-ओत/आ	समझ	-ओत/आ	समझोनी सम्बन्ध वा० म०
/-ओल/ई/	नीम व	-ओल/ई	नीम्बानी अपरय वा० स०
/-व/	मो	-क	मो ^२ क व्यजन वा० स०
/-व/अत/ओ/	फट	-व/अत/आ	फडकता गुण वा० स०

१— 'बेन्दोई' म 'द' का आगम 'नलणोई' के सादृश्य पर हुआ है ।

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यया	व्युत्पन्न सना रूप
/ क/आ/	हाव	क/आ	हाववा इत वा० स०
	छाव	"	छाववा ,
/ क/तो/	बड	'	बडवतो भाव वा० स०
/ क/आर/	जै	क/आर	जकार भाव वा० स०
	फट	"	फटकार ,
/ -क/ई/	घम	क/ई	घमकी ,
/ -ग/ई	वद	ग/ई	वदगी "
	दग		दगगी सवध वा० स०
/ -गर /	जादू	गर	जादूगर कटु वा० स०
/ गर/ई/	बाव	गर/ई	बावूगरी भा० वा० स०
	तेता	"	तेतागरी
/ -गार/	याद	गार	यादगार स्मृति वा० स०
/ -ड/आ/	बूव	ड/ओ	बूवडो पगी वा० स०
	धावी	"	धावीणा ह्याथप
/ च/इ/	अफीम	च/ई	अफीमची व्यसन वा० स०
	तवलो ॥ तवन		तरलची ,
	दग		दगची लघु वा० म०
/ चार/ओ/	भाई	चार/आ	भाईचारा भा० वा० स०
/ -ज/	गू	ज	गूज
	धू	'	धूज ,
/ ज आ/	व	ज/आ	वृजा सवध वा० स०
ज ओ	बन ॥ भण = भाग	-ज/आ	भाणजा सवध वा० स०
/ जा, ओ	माव	जा, ओ	सायजानो अपत्य वा० स०
/ -ट/	छो	-ट	छाट वस्त्र वा० स०

पूव प्रत्यय	सन्धा	परप्रत्यय	व्युत्पन्न मन्त्र	मन्त्र
/-ट/आ/	पट	-ट/आ	पट्ठा	वेत्ता वा० स०
/ट/ओ/	दोपट ७ दुपट ८	दुपट -ट/ओ	दुपट्टो	यन्त्र वा० म०
/-/ओ/	दुग	ड/ओ	दुगटो	स्वायक ,
	अक्ष ७ आक्ष		आक्षडा	सवध वा० म०
	भगी		भगीमो	ह्यायक वा० म०
/ड/ई	रान्न	ड/ई	रान्नही	आभूषणवा० स०
	पाग		पागही	तधु वा० स०
/ड/ल/ई/	बाव	-ड/ल/ई	बावडती	स्वाय वा० म०
/त/आ/	धीर	त/आ	धीरता	भा० वा० स०
	धीर		धीरता	
/-त/ई/	जन	त/आ	जनता	समुत्पन्न वा० स०
/त/ओ/	तप	त/ई	तपती	भाव वा० स०
/-त/ओड/	राई ७ राय	त/ओ	रायतो	व्यजन वा० स०
/ओन/	मोग ७ मग	-त/ओड	मगतोड	ह्यायक ,
	पोन	-दोन	पानदोन	पाय वा० स०
/-दोन/ई/	अतर		अतरवोन	
/घर/	पीक	दोन/ई	पीकदानी	
/घार/ई/	गीदी	घर	गीदीघर	स्वामी वा० स०
/-न/ई/	मण	घार/ई	मणपारी	"
	भामन	न/ई	ओमदनी	स्वायक वा० स०
/-ण/ई	नय	न/ई	नयनी	
	घाट	-ण/ई	घाटणी	सवध वा० स०
	वराव		परावणी	" (विवाह के अवसर पर पहनाये गये वस्त्राणि)
	मील	-ण/ई	मीलणी	स्त्री वा० स०

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-ए/ई	हाथी ७ हथ	-ए/ई	हथेली पशु बा० सं०
/ नोम/ओ/	राजी	नाम ओ	राजीनामो सवध बा० सं०
/-प/	कड	/-प/	कडप ,
	भड	/-प/	भडप ,
/-पण/	बाल	/ पण/	बालपण बयस बा० सं०
	सग	"	सगपण सवध बा० सं०
/-पण ओ/	गोल	पण/ओ	गोलपणो हेयापक
	सेसी	,	सेसीपणो
/-पाल/	खेत	-पाल	खेतपाल स्वामी बा सं
	दवार		दवारपाल
/ ब/आ/	मल	ब/ओ	मनबा हेयापक
	दड	,	दडबो
/ म/	परीत	म	परीतम स्वामी बा सं
	बाल		बालम ,
/ म/ओ/	मूर	म ओ	मूरमो व्यजन
	मूर		मूरमा गुण
/-मार/ई/	पोणी ७ पणि	-मार/ई	पणियारी मीरध ,
	दव		दवयारा भाव ,
/-मार/ओ/	घास ७ घमि	-मार/आ	घसियारा व्यवसाय ,
	भट्टी ७ भमि		भठियारा
/ र/ई/	बाम ७ बम	र ई	बमरो सवध ,
/ र/ऊ/	प ती ७ पम	र ऊ	पसोर स्वापक साग
/ र/आ	टाग	/ र/आ	टापग व्यापक
	गुर		गुरा उपकरण "
	दव		दवरा सवध "
अपवाज	पा	न न्य य	पमत्रिया

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/ल/ई	ढफ	ल/ई	ढफनी लवु
-ल/ओ	पाव	-ल/ई	पावली मुद्रा
	भाई ॥ भाय	ल/ओ	भावली संवध "
/व/आ।	छाज		छाजली वस्तु ,
/व/त/	माल ॥ मन	वाआ	मलवा व्यजन
/व/ज/	बला	वत	बलावत गुण बा० सं०
/व/ओ/	भाई ॥ भा	वज	भावज संवध "
/वाह/ओ/	राठ ॥ रठ	-व/ओ	रठवो
	भागो ॥ अग	वाह/ओ	अगवाहा
	सूनो ॥ सून	-वाह/ओ	सूनवाडो
	पीछो ॥ पिछ		पिछवाडो
/वाल/	राजा ॥ रज		रजवाडो
/वोन/	कोट	-वाल	कोटवाल उपनामवा०स
	बाग	वोन	बागवान स्वामित्व ,

२ ३ २ २ सवनाम से सज्ञा

दीकानरी म सवनाम से सज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्न-
लिखित हैं-

/ओ/ /व/ओ/ /व/ओ/

उपयुक्त पर प्रत्ययों का बहणात्मक विस्तेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है

पर प्रत्यय	सवनाम	परप्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/ओ/	आप	ओ	आपो भा०वा०स०
/व/ओ/	अपण	-व/ओ	अपणापो ,
	अपण	व/ओ	अपणावो ,

२ ३ २ ३ विज्ञेयण मे मजा

बीसामी म विज्ञेयण म सना भुत्तन करने जाने पर प्रत्यय निम्ना-
वित हैं-

|जर| |अत| |अण| |अम| |—आ/ई| |आप/ओ|
/जार/आ| |आव|, |आम| |आवट| |इव/आ|, |ईव/ओ|,
/एव/ओ|, |ओ| |ओण| |अ/आ|, |ग/ई|, |ज|, |अ/ओ|,
/ट| |न/ई| |य| |गण| |स/ई| |अ/ओ|, |व/ओ|

उपयुक्त पर प्रत्ययों का वगनान्तरन विज्ञेयण इस प्रकार प्रस्तुत किया
जा सकता है

पर प्रत्यय	विज्ञेयण	पर प्रत्यय	भुत्तन सना रूप
/अक/	काक ॥ पक	अक	पकक समुत्तय वा०स०
/अण/	भठ	अण	भूठण भा० वा० स०
/अ/	खनाफ	अत	खलाफत ,
/अस/	बार ॥ बार	अस	बारस तिवि दाचक स०
/आ ई/	साफ ॥ सफ	आ/ई	सफाई भा० वा० स०
	फीटा ॥ फीट		फीटाई ,
	खाटो ॥ खट		खाटाई
	मीठा ॥ मिठ		मिठाई व्यञ्जन वा०स०
/आप/आ/	बून्ने ॥ बूट	आप/आ	बून्नाओ भा० वा० स०
	राड ॥ रट		रडाओ ,
	मोगा ॥ माट	"	मोगाओ
/जार/आ/	अ घ	आर/ओ	अ घारो सबद वा०सा०

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/-आव/	घट	-आव	वटाव सबध वा० सं०
/ आस/	सगोण ॥ सग	"	सगाव "
	खाटो ॥ खट	-आस	खटास भा० वा० सं०
/ आवट/	बडो ॥ बाड	,	बाडास "
/ इय/आ/	तर	आवट	तरावट ,
	पीलो ॥ पील	इय/आ	पीलिया सबध वा० सं०
	पालो ॥ धोन	,	धोलिया ,
/ इय/ओ/	तेरे ॥ तेर	इय/ओ	तरियो सत्कार "
/ एल/ओ	बाणो ॥ अघ	एल/ओ	अघेलो मुद्रा वा स
/-ओ/	एक	-आ	एको गिनती ,
	दो ॥ हू	-आ	दूओ ,
/ ओण/	बीच	-ओण	बीचोण भाव वा० सं०
/ व/ओ/	लवो ॥ लव	-वाण	लवाण ,
	घ्यार ॥ चो	-व/ओ	चीको सबध वा० सं०
/-ग/ई/	छो ॥ छ		छको , " -
	नाराज	-ग/ई	नाराजगी भा० वा० सं०
/ ज/	ताजी ॥ ताज	ज	ताजगी ,
	दो ॥ हू		दूब तिथि वा० सं०
/-ज/ओ/	तीन ॥ ती	-ज/ओ	तीज " - - - -
/-ठ/	पाच ॥ प	-ठ	पजो सबध वा० सं०
व/ई/	छो ॥ छ	ठ/ई	छठ तिथि वा० सं०
	ज्यादा = ज्यादा		ज्यादती भा० वा० सं०

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	मुत्पन्न सारा रूप
/-य/	चार ८ ची	य	चीय तिथि वा० सं०
/-यण/	पागल बडो ८ घड	पण ,	पागलपण भा० वा० सं० बडपण , ,
/-म/ई/	दस	-मी	दसमी तिथि वा सं
/-य/ओ/	सान साँठ मो ८ न	/-य/ओ ,	सात्या साठ्यो , नया ,
/-य/ओ/	दस सा ० बार	-य/आ	दसवा क्रम वा० सं० बारवा साँकारवा० सं०

धीकानेरी बोनी म क्रिया विशेषण से संज्ञा मुत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय अधोनिमित्त हैं-

३ ३ २ ४ क्रिया-विशेषण से संज्ञा

/-अय/, /-इय/ओ/ / ई/, /-य/ई/, /-गार/ /-बीण/,
/-वार/

उपनुक्त पर प्रत्यय का वागुनात्मक विशेषण रम प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है -

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	मुत्पन्न सारा रूप
/-अय/	अकर	अय	अकराय भा० वा० सं०
/-अय/ओ	अकर	-अय/आ	अकराया गणय वा० सं०
/-ई/	गड	ई	गडा परिधम वा० सं०
/-य/ई	दस	-य/ई	दसवी भा० वा० सं०

पर प्रत्यय	क्रिया-विशेषण	पर प्रत्याय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/—गार/	रोज देन	गार "	रोजगार भा० वा० म० वेसगार कत वा० स०
/—वीण/	दूर ७ दुर	—वीण	दुरवीण करण वा० स०
/—वार/	पैदा	—वार	पैदावार भा० वा० स०

संज्ञा की दृष्टि से वीकानेरी में पर प्रत्यया का योग दो, तीन एवं चार तक उपलब्ध होता है। उदाहरण द्रष्टव्य है—

दो प्रत्ययो का योग

(—अव, —अण)

घट + अव = घटक (अक० धातु) + अण = घटकण (सज्ञा)

लट + अव = लटक (') + अण = लटकण "

(—आ वट)

सज + —आ = सजा (सक० धा०) + वट = सजावट "

(ओक —इ/ओ)

पछ + —ओक = पछोव (सज्ञा) + —इ/वा = पछोकरो "

(—आ —ब/ओ)

चढ़ + आ = चड़ा (सक० धा०) + ब/ओ = चढ़ावो "

तीन प्रत्ययो का योग

(—अव, —आर, —अण)

रण + अव = रणक (सक० धातु) + आर = रणकार "

+ अण = रणकारण "

(—अव, —आव, —अण)

पढ़ + अव = पढ़व (संज्ञा) + आव = पढ़ाव (भा० वा० स०)

+ अण = पढ़ावण "

४०]

(—आव, —अण, —इय/ओ)

रो + आव = रोभाव (पातु) + अण रोभावण

—इय/ओ = रोभावणियो "

चार व्युत्पादक प्रत्ययो का योग

(—अक + आर, +अण, इय/ओ)

फट + अक = फटक, + आर = फटकार (भा० वा० स०)

+अण, फटकारण (सना) + इय/ओ = फटकारणियो "

(—अक आव, —अण, —इय/ओ)

गुड + अक = गुडक (स०) + आव = गुडकाव (स०) + —अण

गुडकावण (स०) + इय/ओ = गुडकावणियो (समा)

सर्वनाम-प्रत्यय

३ १ सामान्य विवेचन

सर्वनाम उस विवारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी सत्ता के बन्ने में आते हैं।^१

जो सब के नाम बन जाते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं।^२

प्रस्तुत अध्याय में सावनामिक स्वतन्त्र रूपांश के आवद्ध अर्थों का वर्णनात्मक विलक्षण प्रस्तुत किया गया है एक विविध प्रकार के आवद्ध रूपांशों को विवत के मूल रूप से पृथक् करने का प्रयास किया गया है। इसी कारण क्रमशः प्रत्येक रूप की उपलब्ध पृथक् तालिका भी प्रस्तुत की गई है।

बीकानेरी के उपलब्ध सावनामिक स्वतन्त्र रूपांशों को हम मुख्य रूप से दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) वैयक्तिकता बोधक

१— कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ ७२

२— किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी शब्दानुशासन, पृष्ठ १७३

ऐसे सावनामिक स्वतन्त्र-रूपाश जो केवल व्यक्तिगत सज्ञा रूपों के ही स्थापनापन्न रूप में प्रयुक्त होने हैं वैयक्तिकता बोधक सबनाम की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं । इनका विभाजन दो रूपों में किया गया है—

(अ) प्रथम पुरुष

(आ) द्वितीय पुरुष

२ निर्वैयक्तिकता बोधक

ऐसे सावनामिक स्वतन्त्र रूपाश जिनका प्रयोग मुख्य रूप से निर्वैयक्तिक सज्ञा रूपा के ही स्थापनापन्न रूप में होता है तथा गौण रूप से आवेष्टक विशेषक पद रूप में किया जाता है, वे निर्वैयक्तिकता बोधक सबनाम कहे जाते हैं । निर्वैयक्तिकता बोधक सबनामों को निम्नांकित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

१— निश्चय सूचक —

(अ) निकटवर्ती

२— अनिश्चय सूचक

(आ) दूरवर्ती

३— प्रश्न सूचक

४— सम्बन्ध सूचक

५— निश्चय सम्बन्ध सूचक

६— आदर सूचक

७— निजता सूचक

८— सावत्न्य सूचक

वर्णनात्मक विशेषण प्रस्तुत करते समय सबप्रथम सावनामिक स्वतन्त्र रूपाश के केन्द्र अंगों को उपलब्ध करने का प्रयत्न किया गया है— ये सम्पूर्ण बोधक आश्रय रूपाश निम्नांकित हैं—

(अ) मूल या त्रियक रूप विधायक

(ब) वचन-बोधक

(म) ध्वनि प्रतिबद्धित विकार अंग परिवर्तन

(द) कारक-सूचक अंग

उक्त विविध प्रकार की सम्बन्ध बोधक इवाइया का योग मूल-अस के साथ इस प्रकार हुआ है जिनका सामान्यतया विच्छेद सम्भव नहीं होता इनका उच्चरित रूप भी श्वाँस के एक ही झटके में होता है । इन सभी प्रकार के सघटका को पुषक-पथक इवाई के रूप में उपलब्ध करने का सतत प्रयास किया है । अध्ययन-सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक साधनात्मिक स्वतंत्र रूपांश सविभक्ति रूप धारण करने से पूर्व की स्थिति तक पथक वर्ग में एक तदुपरान्त होने वाले कारक सम्बन्धी विभागा को पथक वर्ग में प्रस्तुत किया गया है । यही कारण है कि प्रत्येक साधनात्मिक-स्वतंत्र रूपांश की दा तालिकाएँ प्रस्तुत की गई हैं—

(१) कारक

सम्बन्ध सूचक आवद्ध रूपांश के योग से व्युत्पन्न सश्लिष्ट रूप

(२) कारक

तथा सम्बन्ध बोधक आवद्ध रूपांश के योग से व्युत्पन्न रूप ।

एकरूपता के दृष्टिकोण से साधनात्मिक आवद्ध रूपांशों के विदलेपण के निम्नलिखित संकेता का प्रयोग किया गया है—

(अ) प्राणना सूचक (—)

(आ) अनुनासिक्य (X)

(इ) श्रुति सूचक (०)

(ई) सामान्य रूप सूचक (मूल)

उक्त तात्त्विक विदलेपण को दृष्टि में रखकर ही हम अब साधनात्मिक प्रणयों का विदलेपण वरुणारम्भक दृष्टि से प्रस्तुत करेंगे । आप क्रमशः साधनात्मिक-रूप एवं प्रातिपत्तिक संरचना तालिका प्रस्तुत है ।

३ २ १ वैयक्तिकता बोधक सर्वनाम प्रथम पुरुष

बीजानेरी के प्रथम पुरुष साधनात्मिक स्वतंत्र रूपांशों की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

एक वचन	बहुवचन
कर्ता हूँ, मैं	मैं, हम
वर्ग मैं	मैंने
करणा मैं	मैंने
सम्प्रदान मैं	मैंने
अपादान मैं	मैंने
सम्बन्ध मैं, रो, रा,	मैंने, मैंने, मैंने
अधिकरण मैं	मैंने

प्रथम पुरुष एक वचन /ह/ की संरचना तालिका इस प्रकार है—

उपलब्ध रूप	केन्द्रक रूप	मूल आधार विधायक प्र	तियक आधार विधायक प्र	ध्वनि प्रतिबधित रूप	ध्वन्यात्मक लेखन
------------	--------------	---------------------	----------------------	---------------------	------------------

हूँ	/ह/	/ऊ/	/०/	/हअ/
मैं	/म/		/ए/	/हअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि प्रथम पुरुष एक वचन का सावनामिक अंग /हूँ/ है। इसका मूल आधार विधायक प्रत्यय /म/ है। अनुनासिकता ध्वनि प्रतिबधित है। तियक आधार विधायक प्रत्यय के रूप में हम /ए/ को स्वीकार कर सकते हैं पद

- (१) मूल आधार विधायक /ऊ/
- (२) तियक आधार विधायक /ए/

इस प्रातिपदिक का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

/हअ/

सूचना—

प्रथम पुरुष एक वचन का केन्द्रक रूप हमने /ह्/ माना है । पर यदि प्रथम पुरुष सावनामिक रूप तालिका पर दृष्टिपात किया जाय तो विदित होगा कि कर्तावारक एक वचन के मूल रूप के अतिरिक्त शेष सभी रूपों में ।म। विद्यमान हैं । अतः यह भी माना जा सकता है कि बोनी में कर्तावारक एक वचन का रूप 'म्ह' रहा होगा (जमा कि मारवाड़ी की अप्रकालिया में है) और /ह्/ पर अधिक बल होने से /म/ का लोप हो गया होगा । अतः /ह्/ अवशिष्ट बचा । /ह्/ , /म/ का ही महाप्राण उच्चरित रूप है । अतः /म/ भी केन्द्रक रूप माना जा सकता है ।

प्रथम पुरुष /म्/ की वहे वचन मरबा तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उपलब्ध रूप	केन्द्रक रूप	मूल आधार विधायक	तियक आधार विधायक	ध्वनि प्रतिव्यक्ति	ध्वन्यात्मक लेखन
म्हे	/म/	/ए/			/ह्अ/
म्हा	/म्/		/ओ/	/०/	/ह्अ/
म्हा	/म/		/आ/	/०/	/ह्अ/

उपयुक्त तालिका का वक्षणात्मक विवरण हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं—

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि /म/ सभी रूपों में विद्यमान है अतः सावनामिक केन्द्रक रूप में /म/स्वीकार किया जा सकता है । मूल आधार विधायक प्रत्यय /ए/ है । तियक आधार विधायक प्रत्यय /आ/ /ओ/ /अ/ है । ध्वन्यात्मक दृष्ट्या आरम्भ अगा के रूप में स्वीकार की जा

सकती है। मूल एवं त्रिवचन प्रत्ययों के उपलब्ध रूपों का इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

- (१) मूल आधार विधायक /ए/
 (२) त्रिवचन आधार विधायक /आ/ /आ/

इस सावनामिक स्वतन्त्र रूपों का व्यवहार्य सतत इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

/हृअ/

३ २ २ द्वितीय पुरुष

द्वितीय पुरुष /व/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	तू तू तें तें	य यों
कर्म	तने थने	थने
करण	थमू	थामू
सम्प्रदान	थार	थार
अपादान	थमू	थामू
सम्बन्ध	थारो, थारी थारा	थारो थारी थारा
अधिकरण	तम थम	थाम

द्वितीय पुरुष /व/ की एक वचन संरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ० रूप	द्वे० रूप	मू० आ० वि० प्र०	ध्व० प्र०	ध्व० लेखन
/तू/	/व/	/ऊ/	/०/	/हृअ/
/त/	/व/	/ऊ/	/०/	/हृअ/
/तें/	/व/	/ए/	/०/	/हृअ/
/तें/	/व/	/ए/	/०/	/हृअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदिन होता है कि यहाँ पर /त/ सावनामिक वे-द्रव रूप में उपलब्ध होता है। मूल आधार विधायक प्रत्ययो के रूप में /ऊ/ को स्वीकार किया जा सकता है।

तियक आधार विधायक प्रत्यया के रूप में /ए/ को स्वीकार किया जा सकता है। परिणाम स्वरूप मूल एवं तिषक् आधार विधायक प्रत्यया का रूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

१— मूल आधार विधायक /अ/

२— नियेक् आधार विधायक प्रत्यय /ए/

इन सावनामिक स्वतन्त्र रूपांशों का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

१— मूल आधार विधायक /हअ/

२— नियेक् आधार विधायक प्रत्यय /हअ/

द्वितीय पुरण /त/ बहुवचन सावनामिक रूपांशों की संरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ० रूप वे० रूप, मू० या० वि० प्र०, नि० आ० वि० प्र०, ध्व० प्र०, ध्व० लेखन

वे	/त/	/ए/		/हअ/
या	/त/		/अ/	/०/
या	/त/		/आ/	/०/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदिन होता है कि यहाँ /य/ सभी सावनामिक रूपांशों में विद्यमान है अतः /य/ ही सावनामिक वे-द्रव रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये। पर /य/ /त/ का ही महाप्राण उच्चारित रूप है अतः /त/ सावनामिक अक्षर के रूप में स्वीकार किया गया है। नि० आ० वि० प्र० /आ/ तथा /ओ/ है अनुनासिकता ध्वनि प्रतिरूपित है। इनकी संरचना तालिका इस प्रकार है—

१- मूल भाषा विषयक प्रश्न

/१/

विषय भाषा विषयक प्रश्न

/१/ /५/

इस प्राप्ति का कि प्रमाणों के द्वारा यह प्रश्न प्रमाणित किया जा सकता है-

१- मूल भाषा विषयक प्रश्न

/१२/

२- विषय भाषा विषयक प्रश्न

/१२/

३ ३ विवेचितता बोधक मन्त्र

यह भाषाविज्ञान के अन्तर्गत विषय है कि यह विवेचितता का प्रमाण प्रमाणित किया जा सकता है-

३ ३ १ विवेचितता मन्त्र -

(अ) विवेचितता

(आ) दूरता

विवेचितता मन्त्र का नाम विवेचितता मन्त्र है।^१ विवेचितता मन्त्र का नाम विवेचितता मन्त्र है।^१ विवेचितता मन्त्र का नाम विवेचितता मन्त्र है।^१

१- विवेचितता

/५/

२- दूरता

/५/

यह भाषाविज्ञान के अन्तर्गत विषय है कि यह विवेचितता का प्रमाण प्रमाणित किया जा सकता है-

१ विवेचितता /प्रो/

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आ, आ, इय	ये, ईया
कर्म	ईन, इया	ईया
करण	ईयू, ईयू	ईयामू
सम्प्रदान	ईय, ईय	ईयार

अपादान	ईमू, ईयमू	ईयामू
सम्बन्ध	ईरो, ईनी, ईरा	ईयारा, ईयारी
	ईयेरो, ईयेरी ईयेरा	ईयारा
अधिकरण	ईमि ईयैमे	ईयामि

१ दूरवर्ती (वो)

	एक वचन	बहुवचन
कर्ता	वो वा वैं	वे, वा
धर्म	धन	दान
करण	रमू	बोमू
सम्प्रदान	वर	वार
अपादान	वैसू	बामू
सम्बन्ध	वैरा वैरी, वरा	बारा, बारी, बारा
अधिकरण	वैम	बामि

निश्चय याचक सबनाम के निकटवर्ती /अ/ एवं दूरवर्ती /व/ की एक वचन सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ० ऋ० ए० ओ० आ० वि० प्र०, ति० आ० वि० प्र०, ध्व० प्र०, ध्व० लेखन

/आ/	/अ/		/अअ/
/जा/	/ज/	/आ/	/अअ/
/ईमि/	/ज/		/अहअ/
/वो/	/व/	/ओ/	/हअ/
/वा/	/व/	/आ/	/हअ/
/व/	/व/		/हअ/

उक्त सरचना तालिका पर दृष्टिपात करने पर हम /ज/ एवं /व/ सावनामिक अक्षर के रूप में उपलब्ध होते हैं। /अ/ निकटता बोधक है /व/ दूरवर्ती बोधक है। मूल आपार विधायक प्रत्ययों के रूप में /ओ/ /आ/ व

एव तियक आधार विधायक प्रत्ययों के रूप में /ऐ/ का प्रयोग हुआ है -

मूल आधार विधायक प्रत्यय /ओ/ /आ/

तियक आधार विधायक प्रत्यय /ऐ/

निश्चय वाचक सर्वनाम के निकटवर्ती /ओ/ एवं दूरवर्ती /ओ/ की बहुवचन संरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है -

उ० रूप के० रूप मू० आ० वि० प्र० ति० आ० वि० प्र० ध्व प्र० ध्व० लेखन

अ	/अ/	/ए/			/अअ/
इ	/अ/		/ओ/	/०/	/अहअ/
व	/व/	/ए/		/ /	/हअ/
वो	/व/		/ओ/	/०/	/हअ/
वा	/व/		/आ/	/०/	/हअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर /अ/ एवं /व/ हमारे सम्मुख सावर्गमिक अक्षरों के रूप में उपस्थित होते हैं। /इ/ रूप /अ/ का विकसित रूप है जो अ न राजस्थानी धोलियों में वही /य/ /यो/ के रूप में उपलब्ध होता है। मूल आधार विधायक प्रत्ययों के रूप /ऐ/ एवं तियक आधार विधायक प्रत्ययों के रूप में आ/ उपलब्ध है -

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /ए/

(२) तियक आधार विधायक प्रत्यय /ओ/ /आ/

इनका ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /अअ/, /हअ/

(२) तियक आधार विधायक प्रत्यय /अहअ/, /हअ/

३ ३ २ - अनिश्चय सूचक

वीरानेरी में अनिश्चय सूचक सर्वनाम का /ओई/ रूप उपलब्ध होता है।

(१) कूण

(२) कई

इनमें कूण प्राणि वाचक सवनाम है एवं 'कई' वस्तुवाचक सवनाम है ।/कूण/एव/कई/सवनामों की रूप तात्त्विका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है

कूण

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कूण	कूण
कर्म	कने	कने
करण	कसू	कसू
सम्प्रदान	करे	करे
अपादान	कस्	कसू
सम्बन्ध	करो कंरी	करा, रो, री
अधिकरण	कम	कम

कई

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	कइ	कइ
कर्म	कईन	कईन
करण	कईसू	कईसू
सम्प्रदान	कइरे	कइरे
अपादान	कईसू	कईसू
सम्बन्ध	कईरा रा री	कई रो रा, री
अधिकरण	कईम	कईम

प्रश्न सूचक /क/ की संरचना तात्त्विका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ० रूप, वे० रूप, मू०आ०वि०प्र०, ति०आ०वि०, विशेषक, ध्वयात्मक लेखन

कुण	/क/	/ण/	/ण/	/उ/	/हअहअ/
क्या	/क/	/ओ/	/ओ/	/य/	/हहअ/
केण	/क/	/ए/	/ण/	/ए/	/हअहअ/
कूण	/क/	/ण/	/ण/	/ऊ/	/हअहअ/
कई	/क/	/ई/	/ई/	/आ/	/हअअ/
कई	/क/	/ई/	/ई/	/अ/	/हअअ/
क्या	/क/	/आ/	/आ/	/य/	/हहअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर प्रतीत होता है कि इन सावनामिक स्वतंत्र स्फाणा में केन्द्रक रूप /क/ विद्यमान है। मूल आधार विधायक प्रत्ययों में /आ/ /ई/ /ओ/ विद्यमान है। /क्या/ एवं /क्या/ सावनामिक पद हिन्दी के ही समान है। प्रश्न वाचक प्रातिपदिक के मूल एवं त्रियक आधार विधायक प्रत्यय पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि इन दोनों में पारस्परिक भेदकता बोधक आधार स्पष्ट लक्षित नहीं होता अतः इस दृष्टि से इनमें भेदकता हेतु शून्य विभक्ति का आगम विशेषक प्रत्ययों के उपरांत स्वीकार किया जा सकता है फलतः प्रश्न बोधक स्वनामों के निम्न रूप उपलब्ध हुए हैं—

(१) मूल आधार विधायक /आ/, /ई/, /ओ/ /ण/

(२) त्रियक आधार विधायक /अ/ (/०/ /ई/) /०/, /ओ/) /०/
/ए/ /०/)

मूल सावनामिक अशो के साथ /अ/ /ओ/ /उ/ /ऊ/ /ए/ तथा /य/ का संयोग उपलब्ध होता है। इन अशो में /उ/ /ऊ/ एवं /ए/ को व्यक्ति वाचक एवं /अ/ /आ/ तथा /य/ को वस्तुवाचक प्रत्ययों के

नाम से अभिहित किया जा सकता है ।

उक्त सावनामिक पदों का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

व्यक्ति वाचक /हअ हअ/

वस्तु वाचक /हहअ/

यहाँ पर वस्तु बोधक प्रातिपदिक के ध्वन्यात्मक लेखन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी में यह अन्तर अथ भाषाभा विभाषाभा, बोलिया के मिथुण के कारण हुआ है जैसे— /क्या/, एवं /क्या/ हिन्दी के ही रूप हैं और ये बीकानेरी में इसी रूप में प्रयुक्त होते हैं । /काई/ /कई/ में अनुनासिकता बोली की प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप है । इस तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि मूल एवं त्रियङ् आधार विधायक प्रत्ययों में वचन के प्रति उदासीनता दृष्टिगत होती है । इनका वचन निर्धारण जिनके ये स्थाना पन्न है उन्हीं-उन्हीं को दृष्टि में रखकर किया जाता है ।

३ ३ ४ सम्बन्ध सूचक—

बीकानेरी सम्बन्ध सूचक सवनाम /जु/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

एक वचन	बहु वचन
कर्ता जिको, जिक	जिके जिका जिको
कर्म जिकन	जिकान
करण जिकसू	जिकामू
सम्प्रदान जिकरें	जिकोरें
व्यपनान जिकमू	जिकामू
सम्बन्ध जिकरो जिकरु	जिकारो जिकारु
अधिकरण जिकम	जिका म

बीकानेरी सम्बन्ध सूचक सवनाम की एक वचन एवं बहुवचन की

सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ रूप, के रूप, भू आ वि प्र ति आ वि प्र, ति व वो, विरोपक ध्व प्र, ध्व ले

जिको	/ज/	/क/				
जिकी	/ज/	/क/		/ओ/	/इ/	/अहहअ/
जिका	/ज/	/क/		/ई/	/इ/	/अहहअ/
जिके	/ज/	/क/		/आ/	/इ/	/अहहअ/
जिकयो	/ज/	/क/		/ए/	/इ/	/अहहअ/
जिकैं	/ज/	/क/	/ओ/			/अहहअ/
जिकी	/ज/	/क/	/ऐ/	/इ/	/०/	/अहहहअ/
			/ओ/	/इ/		/अहहअ/
				/इ/	/०/	/अहहअ/

/ज/ सभी सावनामिक रूपा में विद्यमान है अतः /ज/ को साव-
नामिक अक्षर के रूप में स्वीकार किया जा सकता है एवं /क/ को मूल
आधार विधायक प्रत्यय माना जा सकता है। /ऐ/ एवं /ओ/ तिर्यक आधार
विधायक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं। /इ/ एवं /अ/ लिंग बोधक
प्रत्यय हैं, इस प्रातिपदिक का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा
सकता है—

[अहहअ]

सूचना—

डॉ० बन्हेपालाल शर्मा ने सम्बन्ध वाचक सवनाम जिको में /ज/
को द्वैत्रक रूप मानकर 'क' को स्वायक प्रत्यय माना है। इसका कारण बताते
हुए उन्होंने लिखा है कि राजस्थानी की अधिकांश बोलियों में जो, जे, जी आदि
रूप ही उपलब्ध होते हैं। अतः 'क' स्वायक प्रत्यय ही माना जायेगा।^१

१— डॉ० बन्हेपालाल शर्मा बीरसतसई की भाषा—एक अध्ययन, पृष्ठ २१—

३ ३ ५

बीकानेरी में सह सम्बन्ध वाचक सबनाम का स्वतन्त्र रूप उपलब्ध नहीं होता उसके स्थान पर दूरवर्ती निश्चय वाचक सबनाम “बो” का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा—

जिको आयो बो बो गयो (बीकानेरी)

जो आया था वह गया (हिंदी)

जिको पडसी बो सुख पासो (बीकानेरी)

जो पड़ेगा वह सुख पायेगा (हिंदी)

३ ३ ६ आदर सूचक

आदर सूचक सबनाम /आप/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

/आप/

	एक वचन	बहुवचन
वर्त्ता	आप	आप
वच	आपनै	आपन
वरण	आपसू	आपसू
सम्प्रदान	आपरै	आपर
अपादान	आपसू	आपसू
सम्बन्ध	आपरो, री, रा	आपरो, री, रा
अधिवरण	आपम	आपम

आदर सूचक /आप/ की संरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत है—

उ० रूप, के० रूप मू० आ० वि० प्र०, ति० आ० वि० प्र०, विशेषक, ध्व० सेसन

/आप/ /अ/ /अ/ /अ/ /ए/ /अह/

ऊपर लिखित तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि यहाँ पर सावनामिक के द्रक रूप /अ/ विद्यमान है। /प/ को हम आदर सूचक विनोपक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। मूल आधार विधायक प्रत्यय /अ/ माना जा सकता है। मूल व तिमक प्रत्यय में भेदकता लक्षित नहीं होती, अतः भेदकता सिद्धि हेतु /०/ विभक्ति का आगम माना जा सकता है -

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /अ/

(२) तियक आधार विधायक प्रत्यय (/०/+ /अ/)

इसका ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

[अह]

इस सावनामिक रूपादा का प्रयोग भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तीनों पुरुषों में होता है और यदि कहीं इस सबनाम /आप/ का प्रयोग भिन्न भिन्न क्षेत्रों में हो, वहाँ इसमें /०/ विभक्ति का योग माना जा सकता है। निजता-सूचक सबनाम के लिए भी इसका प्रयोग होता है। लिंग, वचन बोध जिनके ये स्थानापन्न हैं, पर आपत है।

३ ३ ७ निजता सूचक

बीकानेरी में निजता सूचक सबनाम की सरचना आदर सूचक सबनाम के अनुसार ही है।

३ ३ ८ सर्व सूचक

सर्व सूचक सबनाम /सब/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है -

[सब]

	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	सब	सब
कर्म	सबने	सबने
करण	सबसे	सबसे
सम्प्रदान	सबरे	सबरे

अपादान	सबसू	सबसू
सम्बन्ध	सबरो, रा, रो	सबरो, रा, रो
अधिकरण	सबमे	सबमे

सब सूचक /स/ की संरचना तालिका इस प्रकार है—

उ०रूप	कै०रूप	मू०आ०वि०प्र०,	ति०आ०वि०प्र०	ध्व०यात्मक लेखन
/सब/	/स/	/ब/	/व/	/हअअह/
/सारा/	/स्	/आ/	/आ/	/हअहअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विन्ति हाता है कि इनमे सावनामिक अक्षर /स/ विद्यमान है जो समेतायक माना जा सकता है ।

इस सबनाम का प्रयोग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तीनों पुरुषों में ही किया जाता है । यह सावनामिक अक्षर यद्यपि समूहवाची विशेषण का प्रतिनिधित्व करता है अतः इसका विशेषण विशेषण के क्षेत्र में ही सम्भव है पर सबनाम के क्षेत्र में भी स्वीकार किया गया है । अतः मैंने भी इसे पृथक्स्वर प्रदान किया है । मेरे विचार से /म/ विशेषण अक्षर एवं सावनामिक अक्षर /स/ में भेदकता स्थापक किसी न किसी अक्षर का योग अवश्य है । गहराई से देखने पर /सब/ वाले रूप में /स/ के संयुक्त स्वर /अ/ की सावनामिक प्रत्यय स्वीकार किया जा सकता है तथा /सारा/ के अन्तगत /०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जाना चाहिये । इस प्रकार सब वाचक रूप धारण करने के लिए विशेषण /स/ के साथ /०/ एवं /अ/ आवद्ध अक्षरों का योग माना जा सकता है ।

तालिका के आधार पर /आ/ एवं /ब/ मूल आधार विषयक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं । तियक एवं मूल रूपों में भेद लक्षित नहीं होता अतः इस भेदकता के बाध हटु /आ/ एवं /ब/ के पूर्व /०/ विभक्ति का आगम माना जा सकता है—

- (१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /आ/, /व/
 (२) त्रिपद आधार विधायक प्रत्यय (/०/आ/) (/०/व/)

उपयुक्त तालिकाओं के आधार पर बीकानेरी के उपलब्ध सावनामिक वेदक रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(अ) वैयक्तिकता बोधक —

- (१) प्रथम पुरुष /म्/
 (२) द्वितीय पुरुष /त्/

(अ) निवैयक्तिकता बोधक —

१— निश्चय सूचक

- (क) निश्चयवर्ती /अ/
 (ख) दूरवर्ती /व/

२— अनिश्चय सूचक /क्/

३— प्रश्न सूचक /क्/

४— सम्बन्ध सूचक /म्/

५— आदि सूचक /अ/

६— निजता सूचक /अ/

उपयुक्त समस्त तालिकाओं में सावनामिक पदों के व्युत्पादक अंशों को पृथक् तालिका में प्रस्तुत किया जा सकता है—

प्रातिपदिक	मू०आ०वि०प्र०	ति०आ०वि०प्र०
	एकवचन	बहुवचन
	एकवचन	बहुवचन

(अ) वैयक्तिकता बोधक—

- (१) प्रथम पुरुष /ऊ/ /ए/ /ऐ/ /ओ/, /आ/
 (२) द्वितीय पुरुष /ऊ/ /ए/ /ऐ/ /ओ/ /आ/

(आ) निवैयक्तिकता बोधक—

(१) निश्चय सूचक

निकटवर्ती दूरवर्ती	/ओ/,/आ/	/ए/	/ऐ/	/ओ/ /आ/
(२) अनिश्चय सूचक-	/ई/	/ई/	(/०/ई)	(/०/ ई)
(३) प्रश्न सूचक	/आ/,/ई/, /आ/	/ओ/	(/०/आ/)	(/०/ ई)
	/ओ/ /ए/	/ओ/	(/०/ओ/)	(/०/ ए/
	/ई/,			
	/ए/			
(४) सम्बन्ध सूचक	/व/	/क/	/ऐ/	/ओ/
(५) सव सूचक	/व/	/व/	-	-
(६) निज एवं आदर सूचक	/अ/	/अ/	(/०/ अ)	(/०/अ)

उपयुक्त तालिका में प्रातिपदिक विधायक प्रत्ययों मूल आधार विधायक प्रत्यय एवं तिथक आधार विधायक प्रत्यय-का विभिन्न सावनामिक पदा में समान गुरुग्राहक अक्षरों की आधुनिकता हुई । उन्हें निष्कल्प रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

मू०आ०वि०प्र०		ति०आ०वि०प्र०	
एक वचन	बहु वचन	एकवचन	बहुवचन
/अ/ /अ/ /ई/ /ऊ/	/अ/ /आ/,/ऊ/	(/०/अ)	(/०/ अ)
/ऊ/ /ए/ /ओ/, 'ए/	/ई/ /उ/,/ऊ/	(/०/अ)	(/०/ अ)
/व',/व/	/ए/ /ऐ/,/ओ/	(/०/अ)	(/०/ ई)
	/ए/,/व/ /क ,	(० ए)	(० ए)
		ऐ	ओ

उपयुक्त तालिका में व्युत्पादक प्रत्यय एकवचन एवं बहुवचन में समानता रखते हैं अतः उन्हें निष्कल्प रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

मू०आ०वि०प्र०

ति०आ०वि०प्र०

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
/अ/, /आ/, /ई/, /ऊ/, /अ/, /आ/	/इ/ (/०/ अ) (/०/ अ)		
/ऊ/, /ए/, /ओ/	/ए/ (/०/ अ) (/०/ अ)		
/व/, /क/	/ए/, /ऐ/, /ओ/, (/०/ इ) (/०/ ई)		
	/ए/, /व/, /व/ (/०/ ए) (/०० ए)		
	/ऐ/		/ओ/

३६ उपर्युक्त तालिका में व्युत्पादक प्रत्यय एक वचन एवं बहु वचन में समानता रखते हैं अतः उन्हें निष्कष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल आधार विधायक प्रत्यय	तियक् आधार विधायक प्रत्यय
/अ/ /आ/, /ई/, /उ/, /ऊ/,	/आ/, /ई/, /उ/, /ऐ/
/ए/ /ओ/, /ए/, /व/ /व/	/ओ/ /०आ/, /०आ , /०ई/
	/०उ/, /०ऊ/, /०ए/

३६ वर्णित तालिका के उपलब्ध प्रत्ययों को वर्णानुक्रमिक क्रम में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(अ) मूल आधार विधायक प्रत्यय

(१) स्वर प्रत्यय /अ/ /आ/ /ई/, /ऊ/, /ए/ /ओ/

(२) व्यंजन प्रत्यय /ए/ /व/, /क/

(३) शून्य प्रत्यय /०/

(आ) तियक् आधार विधायक प्रत्यय

(१) स्वर प्रत्यय /आ/ /ई/, /उ/ /ए/, /ओ/

(२) /०/ आ, /०आ/, /०/ ई, /०/ ऊ /०/ ऐ

(३) व्यंजन प्रत्यय /ए/, /व/, /क/

विशेषण-प्रत्यय

सामान्य विवेचन

जिस विधारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है उसे विशेषण कहते हैं।^१

प्रत्यय विधान की दृष्टि से हम बीजानेरी विशेषण पदों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) मूल विशेषण

(२) यौगिक विशेषण

१ मूल विशेषण

मूल विशेषण स आशय ऐसे शब्दों से हैं जो किसी प्रकार के व्युत्पन्नक प्रत्ययों का योग ग्रहण नहीं करते यथा—

एक, दो, तीन, चार, पाँच छी सात, तेज, नीच आदि।

२ यौगिक विशेषण

योगिक विरोपण से आगम है— मना सवनाम, विरोपण, क्रिया-विरो-
पण, घातु म व्युत्पादक प्रत्ययो के योग से व्युत्पन्न विरोपण पद गया—

सना— बेसर + प्रत्यय- /ईय/आ/ = व्युत्पन्न विरोपण केसरिया ।

सवनाम— ओ ७इ + प्रत्यय/सा/ओ/ = व्युत्पन्न विरोपण इस्तो ।

विरोपण— च्यार ७चौय + प्रत्यय /आई/ = व्युत्पन्न विरोपण चौमाई ।

क्रिया विरोपण— अटपट + प्रत्यय- /ई/ = व्युत्पन्न विरोपण अटपटी ।

घातु— चल + प्रत्यय = /आऊ/ = व्युत्पन्न विरोपण चत्ताऊ ।

व्युत्पादक विरोपण प्रत्यया को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) पूर्व प्रत्यय

(२) पर प्रत्यय

४ २ पूर्व प्रत्यय

बीकानेरी में उपलब्ध विरोपण व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय अधोलिखित हैं—

/अ-/, /अण-/, /अल-/, /ओ-/, /कु-/, /गुण-/, /न/ /नर-/,
/वे-/, /स-/, /मृ-/

उपयुक्त पूर्व प्रत्ययो का वर्णनात्मक विरोपण हम प्रकार प्रस्तुत किया
जा सकता है—

पूर्व प्रत्यय	मूलीय	व्युत्पन्न विरोपण रूप
/अ-/	दाय	अयाय
/अण-/	पढ	अणपढ
	देखो	अणदेखी
/अल-/	महन	अलमस्त
/ओ-/	गुण ७ गण	ओगण
/कु-/	इव	कुदव

पूर्व प्रत्यय	मूलाक्ष	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/कु-/ /गुण-/ /न-/ /नर-/ /वे-/ /स-/ /सु-/ /साप-	नामी तीस घडक डर घा डोल कौम जल जोण केत	कुनामी गुणतीस नघडक नडर नरघन वेडोल बेकाम सजल सुजोण सापधेत

सूचना—

उपयुक्त विशेषण व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय इस प्रकार के भी हैं जो एक आर विशेषण रूप निष्पन्न करते हैं तो दूसरी ओर इतर रूप भी। उदाहरणार्थ /अ-/ के द्वारा एक ओर तो विशेषण रूप निष्पन्न होते हैं यथा /अ-/+चेत = अचेत तो दूसरी ओर सत्ता रूप भी यथा /अ-/+वास = अवाल।

उपयुक्त पूर्व प्रत्ययों को अथ अमिनवता की दृष्टि से इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

१ श्रभाव एवं हीनता बोधक

/अ-/, /अण-/, /ओ-/, /कु-/

पूर्व प्रत्यय	मूलाक्ष	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/अ-/ /अण-/ /ओ-/ /कु-/	छूत	अछूत

पूर्व प्रत्यय	मूलानि	व्युत्पन्न विशेषण रूप
---------------	--------	-----------------------

/अण—/	गनत	अणगणत
/ओ—/	गुण ८ गण	ओगण
/कु—/	द्व	कुद्व

२ एक कम बोधक—

/गुण—/	गुण—	चास	गुणचास
	"	साठ ८ सठ	गुणसाठ

३ निषेधाथ बोधक

/न—/, /नर—/, /दे—/

पूर्व प्रत्यय	मूलानि	व्युत्पन्न विशेषण रूप
---------------	--------	-----------------------

/न—/	पूत/ई	नपूरी
/नर—/	धन	नरधन
/दे—/	धेडक	बेधेडक

४ सहितता बोधक

/स—/, /साप/

/स—/	अल	सजल
/साप—/	चेत	सापचेत

५ श्रेष्ठता बोधक

/सु—/

/सु—/	जोण	सुजोण
-------	-----	-------

६ निश्चय बोधक

/अल—/

/अन—/

मस्त

अतमस्त

उपयुक्त पूर्व प्रत्यया एव मूलाशो का योगिक विधान सश्लिष्ट कोटि का है। योः क्रम की दृष्टि से इह सूत्र रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है— पूर्व प्रत्यय + मूलान् + व्युत्पन्न विशेषण रूप। सस्या की दृष्टि से पूर्व प्रत्यया का योग इकहरा ही उपलब्ध होता है।

४ ३ २ पर प्रत्यय

प्रायोगिकता के आधार पर विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्ययो को निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) गुण बोधक विशेषण पर प्रत्यय

बीकानेरी गुण बोधक विशेषण पर प्रत्ययो की उनके मूलान्गों के आधार पर पाच भागा में विभाजित किया जा सकता है—

- १—सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
- २— सवनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
- ३— विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
- ४— क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
- ५— धातु से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।

(आ) सभ्या वाचक विशेषण पर प्रत्यय

४ ३ १ सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नांकित हैं—

/—अन/ /—अरु/ /—अग/ /—अन/ /आ/ /—आ/
/—आ/ /ई/ /—आड/ /ई/ /—आत/ /ई/ /—आर/

/ऊ/, /—आवर/, /—आल /ऊ/, /—आल/आ/, /—आल/ओ/, /—दयल
 /—इय/आ/, /—इद/ओ/, /—ई/, /—इन/, /—ईल/ओ/, /—ऊ/,
 /—ओण/ई/, /—ओण/ओ/ /—कार/, /—क/ई/—सोर/, /—गार/
 /—ची/, /—दाए/, /—नाक/, /—वाज/, /—मद/, /—ल/ओ/, /—
 छ/, /—वर/, वार/, /—ची/, /—चीन/, /—सार/,

उपयुक्त पर प्रत्यया का बह्वन्नात्मक विक्षेपण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	सना	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न वि०रू०
/अल/	चोटी ५ चोट ठाठी ५ ठाठ ढेड़	-अल " "	चोटल ठाठल ढेडल
/अस्वी/	तेज	अस्वी	तेजस्वी
/अ ग/आ/	दड	अ द	दडद
/आ/ई/	अड	-अ ग/आ	अडगा
/आड/ई/	पूरव ५ पुरव	-आ/ई	पूरवाई
/आ/ई/	खेल	-आड/ई	खेलाडी
/आत/ई/	बर	-आत/ई	बराती
/आर/ऊ/	दूध	-आर/ऊ	दुधारू
/आवर/	देस	-आवर	देसावर
/आल/ऊ/	भगडो ५ भगड	-आल/ऊ	भगडालू
/आल/आ/	घुघर ५ घुघर	-आल/आ	घुघराला
/आल/ओ/	मूछ	-आल/ओ	मूछालो
/इयल/	दाडी ५ दड	इयल	दडियल
/इय/आ/	दूध	इय/आ	दूधिया
	सलेट	इय/आ	सलेटिया

/ इ द/ओ/	बाई	-इ द/ओ	बाइ दो
/ ई/	बास	"	बासिदा
	देस	ई	देसी
	बास	"	बासी
/ ईत/	बनावट	"	बणावटी
	सीस	ईन	सीसीन
	रग	"	रगीन
/ ईल/जा/	जेर	ईस/ओ	जेरीली
	खरचो ५ खरच	"	खरचीली
/ ऊ/	गाठ	"	गाठीली
	घर	ऊ	घरू
	बजार	'	बजारू
/ एड/ई/	भाग ५ भग	/ एडा/ई	भगेडी
/ एर/	दल	एर	दलेर
/ एल/ऊ/	घर	एल/ऊ	घरेलू
/ ओ/	देवर	ओ	देवरो
/ ओण/ई/	सेल	ओण/ई	सेलीणी
/ ओन/आ/	मरद	-ओन/आ/	मरदोना
/-ओन/आ/	जन	"	जनोना
/-नार/	सत्ता	-नार	सत्ताकार
	पेट	"	पेटकर
/-न/ई/	सन	न/ई	सनकी
/-खोर/	हराम	-खोर	हरामखोर
	धूस		धूसखोर
/-गार/	मदद	-गार	मददगार
	गुण ५ गुणे		गुणेशार
/-ची/	अफीम	ची	अफीमची

/ -ार/	दल	-दार	दलदार
	रम	"	रसदार

पर प्रत्यय	मना	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सना रूप
/ -नाक/	गतरो ल तनर	-नाक	गतरनाक
/ -याज/	घोगो ल धामे	-याज	घोमेयाज
/ मद/	अकल	मद	अकलमद
/ -ल/आ/	साड	स/ओ	साडलो
/ -ली/	सारं ल सार	"	सारली
/ -र/उ/	दया	-ल/उ	दयालु
/ -वर/	साकत	-वर	साकतवर
/ -वार/	उम्मी	-वार	उम्मीदवार
/ -वी/	माया	-वी	मायावी
/ -वोन/	रूप	-वोन	रूपवान
	घन	-वोन	घनवान
/ -मार/	मलण	-सार	मलणसार
	राम	"	रामसार

४ ३ २ मवनाम मे विक्षेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय

वीकानेरो जोनी म सवनाम स विक्षेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नांकित

हैं —

/ इ/, / -स्त/ओ/, / -ल/आ/ / स/ओक/

उपयुक्त पर प्रत्ययों वा वणनात्मक विक्षेपण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	सवनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/ ई/	आपम	ई	आपसी
/-स/आ/	जा ॥ इ	स/आ	इससी
	यो ॥ म	"	यससी
	बुग ॥ व	,	रिससी
/-त/ओ	बुग ॥ व	-त/ओ	वत्ता
	जवा ॥ ज	,	जत्ता
/-त/आ	जा ॥ इ	त/ओ	इतसी

वीकानरी बोली में कुछ सावनामिक स्थानों रूपाना का वाक्यान्तगत विशेषण भी प्रयोग होता है। जहाँ उनका प्रयोग विशेषणवत् किया जाय वहाँ हम /०/ विभक्ति स्थोचरनी चाहिए।

उपयुक्त सवनाम से विशेषण "व्युत्पन्न" पर प्रत्ययों पर स्वरूपान्तर करने पर हम विन्ति होगा कि मुत्ताग एव प्रत्ययों का योग सन्निष्ट कोटि का है।

/-स/ओ/ /-त/ओ/ प्रत्ययों में द्वित्व बनाधात के कारण हुआ है।

४ ३ ३ विशेषण से विशेषण व्युत्पादन पर प्रत्यय

वीकानरी बोली में निम्नलिखित विशेषण से विशेषण व्युत्पादन पर प्रत्यय उपनम्य हात हैं -

/-आ/ई/	/-आय/ओ/	/ ई/	/ ए/	/ एड/	/ एल/आ/
/-ज/	/ नार/	/ त/ई/	/ ए/ई/	/ त/ओ/	/ व/ओ/
/ घ/आ/	/-ज/ओ/				

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/ आ/ई/	च्यार ॥ चौथ	-आ/ई	चौथाई
/ आय/आ	पर	-आय/ओ	परसी

/ई/	निज	ई	नित्री
/ए/	दा	-ए	दाए
	दो ॥ दू	,	दू
	गा	"	गा
/एइ/	भाषा ॥ अप	एइ	अपेइ
/एअ/ओ/	एअ	-अअ/आ/	एअआ
	दो ॥		दाएआ
/आ/	गा	आ	गाआ
	पपा		पपाआ
	वा		वाआ
/अए/	दु	-अए	दुअए
/अए/	दु	-अए	दुअए
/अए/	पपा ॥ पपा	-अए	पपाअए
/अई/	बम	-अई	बमअई
/अई/	तपम्वी ॥ तपम्वी	-अई	तपम्वीअई
/अआ/	दो ॥ दो	-अआ	दोअआ
/अआ/	मो ॥ मो	-अआ	मोअआ
	दम	,	दमअआ
	पीत	"	पीतअआ
/अओ/	प्यार ॥ प्यार	अओ	प्यारअओ
/अओ/	दा ॥ दू	-अओ	दूअओ
/अआ/	दो ॥ दू	-अआ/ओ	दूअआ
	तान ॥ ती	"	तीअआ

४ ३ ४ क्रिया-विशेषण मे विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीरानेरी म क्रिया विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्ना

कित हैं —

/आवर/ /ई/

पर प्रत्यय	क्रिया विभोपण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विभोपण रूप
/आवर/	गिर	-आवर	गरावर
/ई/	ऊगर	ई	ऊपरी
	घार		वारी

४ ३ ५ धातु से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में धातु से विभोपण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न निश्चित हैं—

/अत/ /जाऊ/, /आव/ /आव/ओ/
 /आव/अण/ओ/ /इयल/ /इय/आ/ /ऊ/ /कार/
 /रक/ /वण/आ/ /व/आ/

उपयुक्त पर प्रत्ययों का बहनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विभोपण रूप
/अत/	गढ़	अत	गड़त
	रट	"	रटत
/जाऊ/	टिक जाटक	-जाऊ	टकाऊ
	चल	"	चलाऊ
/आव/	तर	,	तराव
/आव/ओ/	सड	-आव/ओ	सडावो
/आव/अण/आ	डर	-आव/अण/आ	डरावणा
/इयल/	मर	इयल	मरियल

	सड	"	मडियन
	अड	"	अन्यित
/ इय/आ/	वड	इय/आ	वयिया
	घड	"	घटिया
/ ऊ/	रा	ऊ	लाऊ
	उडा	"	उडाऊ
	रट	"	रट्ट
/-आर/	जाण	-आर	जाणुवार
/ ह्व/	जाग	-ह्व	जागण
/-वण/ओ/	सुवा	-वण/ओ	सुवावणों
	भा	"	भावगु
	सा	,	सावगु
/ व/ओ/	डाल ५ डन	-व/आ	दुपवों
	जुड	,	पुग्का

दो व्युत्पादक पर प्रत्ययो का योग

(-अस्वी, -णौ)

तप+ /अस्वी/ = तपस्वी (वि०) + /णौ/ = तपस्वणौ

तीन व्युत्पादक पर प्रत्ययो का योग

+ (-आ, -वट, ई) +

यण /आ/ = बणा (सकमक घातु) + /वट/ = बणावट (स०) + /ई/ = बणावटी

४४ सख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

पूर्णाता के आधार पर हम सख्यावाचक विशेषण को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं -

(१) पूर्णा व बोधक विशेषण

(२) अपूर्णा व बोधक विशेषण

४४१ पूर्णा व बोधक सख्या रूपा की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है -

एक	इग्यार	१
दो	बार	,
तीन	सर	"
चार	बी-	"
पांच	पनर	,
छो	सोत	६
सात	सतर	७
आठ	अठार	,
नौ		
दस		

જગણીમ	ઈસ	સચાસ	ચાસ
ઘોસ	"	ઝડચાસ	"
ફવ્વીસ	"	ગુણચાસ	"
વાઈસ	"	પચ્ચામ	"
તેઈસ	"	ફવ્વોવન	"
ઘોઈસ	"	ઘોવવ	ઘોવન
પચ્ચોસ	"	તેપન	પન
છાઈસ	"	ચોપન	"
સરાઈસ	"	પિચ્ચપન	"
ઝઠાઈસ	"	છપ્પન	"
ગુણત્રીસ	"	સતોવન	"
સોસ	ઈસ	ઝઠોવન	"
ફવ્વત્રીસ	"	ગુણમઠ	"
ઘત્રીસ	"	સાઠ	"
તેત્રીસ	"	ફવ્વસઠ	સઠ
ચોત્રીસ	"	ઘાસઠ	"
પત્રીસ	"	તેસઠ	"
છત્રીસ	"	ઘોસઠ	"
સત્રીમ	"	વેસઠ	"
ઝઠત્રીમ	"	છપ્પાસઠ	"
ગુણતાલીસ	"	સિઢસઠ	"
ઘાત્રીસ	"	ઝઢસઠ	"
ફવ્વતાલીસ	આત્રીસ	ગુણતર	ઘત્ર
વેયાલીસ	"	સસાર	તર
તૈયાલીસ	"	ફવ્વોતર	"
ચમ્માલીસ	"	ઘવોતર	"
પતાલીસ	"	તેવતર	"
છેયાલીસ	"	ચોહતર	"

નિવતર		દ્વાસી	આમી
દિવતર		નમ્યાસી	"
ગિવતર		નુચ્ચે	
ફતર		ફરોણમ	આણમ
મુગાવાગી		બોણમ	
અન્ના		તેણમ	ણમ
જાગી	ય/જામી	જોણમ	આણમ
વપામી		વિજ્યાણમ	ઓણમ
તરામી		દિનમ	ફનમ
જોરગી		મનાણમ	આણમ
વિજ્યામી		અડોણમ	
દવામી	આમી	વિન્યાણમ	
વિન્યામી		નિ	

लेकर ३८ तक तीस । ३९ से ४६ तक चालीस । ४७ से ५० तक चास । ५१ से ५८ तक ओवन अथवा इसके समपरिवर्तक पन, वन । ५९ से ६८ तक सठ । ६९ से लेकर ७८ तक नर । ७९ से ८९ य/ आसी/ एव ९१ से ९९ तक ओणम । व्युत्पादक अक्ष उपलब्ध हैं ।

(२) इन 'युत्पादक' आवद्ध अक्षों को प्रत्येक दहाई की सख्या बोधक समपरिवर्तक रूप में स्वीकार कर सकते हैं ।

(३) द्वितीय से अष्टम तक के दशक नवम सख्या के दो पदिमप्रा के योग से निष्पन्न होते हैं, जिसमें पूर्ववर्ती अक्ष तक एक कम का बोधक एवं द्वितीय अक्ष अपनी अगली सख्या का बोधक है ।

(४) /स/ इसका योग दम् उगणोम, बीम् तीस, चानीम् पचास अस्सी एव सौ सख्या बोधको म उपलब्ध है ।

/अस्सी/ में /ई/ एव /मा/ में /ओ/ विचार उपलब्ध होते हैं ।

/ठ/ /साठ/ अंग बोधक म उपलब्ध होता है ।

/र/ /सत्तर/ सख्यावाचक म मिलता है ।

/व/ -/तुल्ये/ सख्या बोधक अंग म उपलब्ध होता है ।

प्रत्येक दशक को दहाई म सख्या बोधक मूलानु को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है जो पूर्णांकों के मूल दशों के ध्वनि प्रतिबधित समीपवर्तक के रूप म दृष्टिगत हान हैं -

दम्, बीम, तीस, चालीस, पचास, साठ सत्तर, अस्सी नुव्व म क्रमशः /द/ /ब/ /त/, /च/, /पच/, /मठ/, /मत/, /अ/, नव मूलानु समपरिवर्तक स्वीकार किया जा सकते हैं ।

४ ४ २ अपूर्णानु बोधक

अपूर्ण सख्या वाचक विशेषण से पूर्ण सख्या के किसी भाग का बोध होता है ।^१

अपूर्णांक वाचक विभेपण रूपा की व्युत्पत्ति बीकानेरी शाली में स्वतंत्र इवाई का रूप धारण कर चुका है अतः उनके अंतर्गत व्युत्पादक प्रत्यया का हूँ ठना असम्भव है। इन प्रत्यया के अंतर्गत लिंग, वचन बोधक व्याकरणिक कोटि के प्रत्यया का योग उपलब्ध होता है। उनका विवक्षित भाग दिया गया है।

अपूर्णांक बोधक विशेषण प्रत्यया को हम निम्नलिखित भागा में विभाजित कर सकते हैं -

- (१) क्रम सरया वाचक विभेपण प्रत्यय
- (२) आवृत्ति सरया वाचक विभेपण प्रत्यय
- (३) अनिश्चित सरया वाचक विभेपण प्रत्यय

४ ४ २ १ क्रम सरयावाचक विभेपण प्रत्यय

क्रम सरया वाचक विशेषण प्रत्यया में ल/आ २/ओ ३/आ, ष/आ, ङ/ओ ठ/ओ प्रत्ययो का योग उपलब्ध होता है-

ल/ओ/ इस प्रत्यय का प्रयोग प्रथम विभेपण पद में होता है यथा-
एक-पे+ ल/ओ पेलो

/ २/ओ/, / ३/ओ/ इस प्रत्यय का प्रयोग द्वितीय एवं तृतीय विभेपण पद में उपलब्ध होता है -

दो ॥ दू

३/ओ, २/ओ = दूजो, दूसरो

तीन ॥ ती

, " तीजा तासरा

/-४/ओ/

इस प्रत्यय का प्रयोग चतुर्थ विभेपण पद में प्रयुक्त होता है। यथा-

चार ॥ चौ -४/आ चौथो

/-५/आ/

इस प्रत्यय का प्रयोग पंचम, सप्तम अष्टम तथा नवम विभेपण पदा में उपलब्ध होता है, यथा-

पोंच	-व/आ	पाचवा
सात	"	सातवा
आठ	"	आठवा
नौ ॥ न	"	नवो ॥ नवा
सो	"	सौवा

/उ/ओ/

इस प्रत्यय का प्रयोग दण्ड विशेषण पद में प्रयुक्त होता है। यथा —

छो ॥ छ -उ/ओ छउ

सूचना —

/व/आ/ प्रत्यय का प्रयोग ही विशेषित विभक्ति रूपा के अतिरिक्त सभी सम्प्रदायों में उपलब्ध होता है। अतः इसे ही मूल समपरिवर्तक विशेषण प्रत्यय के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। एक क्षेत्र प्रत्ययों को गौण समपरिवर्तक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

४ ४ २ २ आवृत्ति सख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

आवृत्ति वाचक विशेषण पदों में हम /गुण/ओ/, /ण/आ/ प्रत्ययों का योग उपलब्ध होता है। इन प्रत्ययों का प्रयोग दो से लेकर सभी सम्प्रदायों में उपलब्ध होता है। यथा—

दो ॥ दु	गुण ॥ गुण/ओ	= दुगुण
दो ॥ ॥	-ण/ओ	दूणो
दस	-गुण/ओ	दसगुणो
सो	"	सौगुणो

४ ४ २ ३ अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

/आ/ एवं /आ/ प्रत्ययों के द्वारा अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण पद व्युत्पन्न होते हैं। यथा —

घण्टी

थोड़ा

पहाड़ा म प्रत्यय हाने वाले प्रत्यय निम्न लिखित हैं

/-आ/, /-य/ओ/, /-व/आ/, /-य/आ/

इनके उदाहरण इस प्रकार हैं —

/-ओ/

लगा, हुआ पाया सातो, छाटा

/-य/आ/

तीयो

/-व/आ/

पीरा, दूरा

/-य/आ/

नयो

योग का दृष्टि से उपयुक्त प्रत्ययों का योग मन्त्रित्य का है। इन योगों में जो मूल रूप में इस प्रकार प्रत्यय दिया जा सकता है —

मूलार्थ + प्रत्यय = व्युत्पन्न विशेषण रूप

जीवन्तरी म कृष्ण प्रत्यय इस प्रकार के हैं जो एक ओर व्याकरणिक संबंध बोध कराते हैं एवं दूसरी ओर अभिन्न रूप भा व्युत्पन्न करते हैं। उदाहरणार्थ —

/-आ/, / आ/, प्रत्यय पु० एक० व० एक बहु० व० व बोधन हैं।

मभा—

मणी योडा

उपयुक्त उदाहरणों में /-ओ/ से पु०ए०व० प्रत्यय कारण का बोध होता है एवं /-आ/ से पु० व० प्रत्यय कारण का बोध होता है। परन्तु इन्हीं व्याकरणिक प्रत्ययों द्वारा लिंग, वचन, कारण के अतिरिक्त वाक्यस्तराव सम्बन्ध में अप अभिन्नता का बोध होता है, वही ये व्युत्पादन रूप धारण कर लेते हैं मभा—

सप्त	एकवचन	बहुवचन
मैल	तसो	तसा
चौवार्	मैलो	मैला
भूत	चौवारी	चौगार
	भूखो	भूखा

उपयुक्त रूपांशा पर दृष्टिपात करने पर विन्ति होता है कि एक ओर तो ये प्रत्यय लिंग वचन के बोधक हैं तो दूसरी ओर इनसे विशेषण स्वतन्त्र रूपांश भी व्युत्पन्न होते हैं। अतः -ओ/, -आ/, -ई को ध्याकरणिक एवं व्युत्पादक दोनों कौटियों के प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं।

बोकारेरी में विशेषण स्वतन्त्र रूपांशा में ध्याकरणिक प्रत्यय योग जनित विकार भी व्युत्पन्न करते हैं। इस सम्बन्ध में सामान्य निष्कर्ष इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं -

१-अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त एवं ऊकारान्त

इन विभक्ति पदा में विशेष्य के अनुरूप विकार युत्पन्न नहीं होता था-

क) अकारान्त विशेषण

(१) सुपातर बेटा	पुलिंग एकवचन
(२) सुपातर बटी	स्त्रीलिंग एकवचन
(३) सुपातर बेटा	पुलिंग बहुवचन
(४) सुपातर बेटयो	स्त्रीलिंग बहुवचन

आकारान्त विशेषण

(१) बड़िया घोडा	पुलिंग एकवचन
(२) बन्िया घोडी	स्त्रीलिंग एकवचन
(३) बन्िया घोडा	पुलिंग बहुवचन
(४) बड़िया घोडयो	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ग) ईकारान्त विशेषण

(१) मूजी आन्धी	पुंलिंग एकवचन
(२) मूजी सुगन्धि	स्त्रीलिंग एकवचन
(३) मूजी आन्धी	पुंलिंग बहुवचन
(४) मूजी सुगन्धी	स्त्रीलिंग बहुवचन

(घ) ऊकारान्त विशेषण

(१) उडाऊ छोरी	पुंलिंग एकवचन
(२) उडाऊ छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
उडाऊ छोरा	पुंलिंग बहुवचन
(४) उडाऊ छोरी	स्त्रीलिंग

उपयुक्त विवेचन द्वारा म विधी प्रकार के शब्दरहित शब्दों के प्रत्यया का योग नहीं होता। अतः उक्त अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त एवं ऊकारान्त के लिंग, वचन निर्धारण हेतु /०/ विभक्ति स्वीकार की जा सकती है।

२- ओकारान्त

आकारान्त विशेषण म लिंग-वचन के अनुरूप परिवर्तन होता है।

(१) बाला घोडा	पुंलिंग एकवचन
(२) बाला घोडा	, बहुवचन
(३) बाली घोडी	स्त्रीलिंग एकवचन
(४) बालवा घोडवा	स्त्रीलिंग बहुवचन

उपयुक्त उदाहरणों में विशेष्य के अनुरूप विशेषणों म लिंग, वचन प्रत्यया का योग दृष्टिगत होता है।

आख्यात-प्रत्यय

५ १ सामान्य विवेचन

बीकानेरी में आख्यात प्रत्यय संरचना के आधार पर दृष्टिगत करने पर सब प्रथम उनमें प्रमुख व्याकरणिक सम्बन्ध बोधक अक्षरों का माग दृष्टिगत होता है। इन व्याकरणिक सम्बन्ध बोधक अक्षरों द्वारा बाल वचन आदि सम्बन्धों का बोध होता है। इन सम्बन्ध बोधकों को पद से दूर करने पर अवशिष्ट रूप को धातु के नाम से अभिहित किया जाता है। संरचना की दृष्टि से धातु के दो रूप होते हैं—

(१) मूल धातु

(२) योगिक धातु

(१) मूल धातु

जिन धातुओं के बीकानेरी में व्युत्पत्ति की दृष्टि से प्रचलित रूप के आधार पर साधक सङ्ग सम्भव नहीं हो वह मूल धातु के नाम से अभिहित किया गया है। यथा—

पढ़, सु, आ, रो आदि

(२) योगिक धातु

बीकानेरी में जिन धातुओं के प्रचलित रूप के आधार पर साधक सङ्ग

समय हा उह योगिक धातु की सज्ञा में अभिहित किया गया है । जिन प्रत्ययों के योग से योगिक धातु निरूप्य होती हैं उन्हें ध्रुत्पादन प्रत्ययों के नाम से अभिहित किया गया है ।

उपयुक्त विशेषण के आधार पर धातु में दो प्रकार के आवृद्ध अंगों का योग उपलब्ध होना है । प्रथम प्रकार के आवृद्ध अंगों का धातु से जुड़े होना है — धातु ध्रुत्पादन प्रत्यय कहलाते हैं । द्वितीय प्रकार के आवृद्ध अंग ध्रुत्पादन प्रत्यय गहिर् धातु के साथ जुड़े होते हैं उन्हें ध्रुत्पादन काटि में अथ घोषक किया किमक्ति के नाम से अभिहित किया गया है ।

आख्यात

धातु में ध्रुत्पादन प्रत्ययों का योग होना है इसलिए ध्रुत्पादन प्रत्ययों की सुविधा एवं धातु भेद के आधार पर इस अध्याय का 'आख्यात प्रत्यय' नामकरण किया गया है । रचना विधान की दृष्टि में बीसहत्तरी धातुओं के प्रमुख रूप से चार भेद किये जा सकते हैं —

- १ नाम धातु
- २ प्रेरणाधक धातु
- ३ सम्भव धातु
- ४ अनुकरणात्मक धातु

उपयुक्त धातु भेद के आधार पर धातु ध्रुत्पादन प्रत्ययों को भी चार भागों में विभाजित किया जा सकता है —

- १ नाम धातु प्रत्यय
- २ प्रेरणाधक धातु प्रत्यय
- ३ सम्भव धातु प्रत्यय
- ४ अनुकार-वाची धातु प्रत्यय

५ २ (१) नाम धातु-प्रत्यय

जो धातुएँ सना विशेषण आदि प्रातिपदिकों से व्युत्पन्न होती हैं — सस्कृत एवं हिन्दी व्याकरणों ने इस प्रकार की धातुओं को नाम धातु की सज्ञा

दी है। बाकानेरी में जिन व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से नाम धातुएँ व्युत्पन्न होती हैं उन्हें नाम धातु व्युत्पादक की सजा दी गई है। नाम धातु-प्रत्ययों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) पूर्व प्रत्यय

(२) पर प्रत्यय

(१) पूर्व-प्रत्यय

/स/, /स-

पूर्व प्रत्यय	नामवाची शब्द	=	व्युत्पन्न धातु
छा -	ऊबड़	=	खाबड़
स -	उलटो	=	मुलटो

पर-प्रत्यय

बीकानेरी में नाम धातु-व्युत्पादक प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/०/, /आ / इषा/, / ए/

सूचना —

बीकानेरी में नाम-धातुएँ मुख्य रूप से /आ/ पर प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होती हैं —

/०-/

नामवाची शब्द	व्युत्पादक प्रत्यय	=	व्युत्पन्न धातु
फूँकार	/०/	=	फूँकार
हूँकार	/०/	=	हूँकार
छोट	/०/	=	छोट
फूँक	/०/	=	फूँक
फटकार	/०/	=	फटकार
लताड़	/०/	=	लताड़

/आ/

नामवाची शब्द	धुत्पादक प्रत्यय	धुत्पन्न धातु
सेर	-आ	सेरा
काम ७ कम	-आ	कमा
यात ७ बत	आ	यता
बप	-आ	बपा
कस	-आ	कसा
पड	-आ	पडा

सूचना —

वर्हि नामवाची धातुओ म /आ/ क याग स आध व्यजन के मध्यम स्वर का ह्रस्वीकरण हो जाता है । यथा—

नाम वाची शब्द	ह्रस्वीकरण	धुत्पन्न धातु
भूल	ऊ > उ	मुला
सूल	ऊ > उ	मुला

भान्ति द्वय -व्यजन / ओ/ के/उ/ म परिवर्तित होने पर भी नाम धातु धुत्पन्न होती है—

तोल	/ओ/ > /उ/	तुला
लाभ	/ओ/ > /उ/	तुभा
घोल	/ओ/ ^ /उ/	बुला
खोल	/ओ/ > /उ/	खुला

/इया/

नामवाची शब्द	धुत्पादक प्रत्यय	धुत्पन्न धातु
माटो ७ भुट	इया	मुटिया

/ण/

बीकानरी म /-ण/ प्रत्यय /आप/ सबनाम से धातु धुत्पन्न करता है :

सर्वनाम	+	व्युत्पन्नक प्रत्यय	=	व्युत्पन्न धातु
आप		एषा		आपएषा

/ ता/

नामवाची शब्द	+	व्युत्पादक प्रत्यय	=	व्युत्पन्न प्रत्यय
बात ७ वत		सा		बतसा

रौप

बीकानेरी में कुछ स्वरों के रौप से भी नाम धातु व्युत्पन्न होती हैं -

(क) /-आ/

शब्द	रौप	व्युत्पन्न धातु
पूजा	-आ	पूज
सज्ज	-आ	सज
भषा	-आ	भष

(ख) /-ई/

रौपी	-ई	रैत
------	----	-----

निष्कष रूप में बीकानेरी में नाम धातु 'व्युत्पन्नक प्रत्यय' इस प्रकार माने जा सकते हैं -

र'व प्रत्यय	/था/, /म/
पर प्रत्यय	/०/, /आ/, /इमा/ /एषा/ /सा/
साप मूलक	/आ/, /ई/

५.३ प्रेरणाधक-धातु-प्रत्यय

अकर्मक एवं सकर्मक धातुओं में प्रेरणाधक धातुएँ 'व्युत्पन्न' होती हैं। जिस वाक्य में कर्त्ता प्रत्यक्षतः क्रिया नहीं करता अपितु किसी अन्य के माध्यम से उस क्रिया का सम्पादन करता है अथवा उसे करने की आज्ञा करता है प्रेरणाधक धातुएँ कहलाती हैं। प्रेरणाधक धातु में मन्त्रन होने वाले प्रत्यय प्रेरणाधक धातु प्रत्यय कहलाते हैं। बीकानेरी प्रेरणाधक धातु प्रत्ययों को उत्तर भाष्य भागों के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(१) प्रथम प्रेरणायक धातु प्रत्यय

(२) द्वितीय प्रेरणायक धातु प्रत्यय

५ ३ प्रथम प्रेरणायक धातु-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के योग से कर्त्ता के अपने स भिन्न व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करने का बोध होता है, प्रथम प्रेरणायक धातु प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। यथा —

‘छोर न पाणी पाआ’

वाक्य में क्रिया /पा/ में /-ओ/ प्रत्यय के योग से कर्त्ता के किसी अन्य को क्रिया करने के लिए प्रेरित करने का बोध होता है।

५ ३ द्वितीय प्रेरणार्थक धातु-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के योग से कर्त्ता के किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से तीसरे व्यक्ति या पक्ष को क्रिया करने के लिए प्रेरित करने का बोध होता है, द्वितीय प्रेरणायक धातु प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। यथा—

‘छोर नैपाणी पबाओ’

वाक्य में /-आओ/ प्रत्यय के योग से यह प्रतीत होता है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से तीसरे व्यक्ति को पानी पिलाने के लिए प्रेरित करता है।

योगक्रम की दृष्टि से प्रेरणायक धातु प्रत्ययों का योग मध्यम एक अर्थ है। प्रत्यय योग कभी मूल धातु में विकार उत्पन्न करते हैं एवं कभी नहीं। इस आधार पर प्रेरणायक धातु व्युत्पादक प्रत्ययों का वर्णनात्मक विस्तार-पण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

५ ३ १ प्रथम प्रेरणायक धातु-प्रत्यय

वीकानेती में /-आ/ प्रत्यय मुख्य रूप से प्रथम प्रेरणायक धातु व्युत्पादक प्रत्यय है।

/-आ/

धातु	+	प्रत्यय	=	प्रथम प्रेरणाधिक धातु
उठ		-आ		उठा
उड़		-आ		उड़ा
चढ़		-आ		चड़ा
बिड़		-आ		बिड़ा
जम		-आ		जमा
भुग		-आ		भुगा
हर		-आ		हरा
पड़		आ		पड़ा
वर		-आ		वरा
गला		-आ		गला
परा		-आ		परा
छाता		-आ		छोला
सल		-आ		सला

बीजानेरी में /-आ/ प्रत्यय के मध्यग से भी प्रथम प्रेरणाधिक धातु रूप व्युत्पन्न होते हैं -

धातु	+	मध्यग प्रत्यय	=	प्रथम प्रेरणाधिक धातु
बल		अ > आ		बाल
पाड़		अ > आ		पाड़

/-आ/ प्रत्यय के योग से अत्यल्प रूप में प्रथम प्रेरणाधिक धातु रूप व्युत्पन्न होते हैं। इसका योग से पूरक स्वर ह्रस्व हा जाता है —

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न प्रथम प्रेरणाधिक धातु
भीज ७ भिज	-ओ	भिजो
सीज ७ सिज	-ओ	सिजो
हुव ७ हुब	-ओ	हुवा

(२) द्वितीय प्रेरणाय धातु व्युत्पादन प्रत्यय

/ ० /, / आ /

५ ४ सकर्मक-धातु-प्रत्यय

बीकानेरी से अकर्मक धातुआ से सकर्मक धातुए व्युत्पन्न होती हैं । इस प्रक्रिया से अकर्मक धातुओं के पश्चात् /०/ प्रत्यय की स्थिति स्वीकार की जा सकती है एवं इसके योग से आन्तरिक ध्वनि परिवर्तन होने हैं । अकर्मक धातुआ से /०/ विभक्ति के योग से निम्नलिखित आन्तरिक ध्वनि विकार होते हैं -

/अ>आ/ /इ>ए/ /उ>ऊ/, /उ>ओ/, /ऊ>ओ/

इन प्रत्ययों का वक्ष्यात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

/०/

अकर्मक धातु	प्रत्यय	विकार	व्युत्पन्न सकर्मक धातु
फर	/०/	अ>आ	फार
मर	/०/	अ>आ	मार
कट	/०/	अ>आ	कार
उतर	/०/	अ>आ	उतार
मड	/०/	अ>आ	साड
फिर	/०/	इ>ए	फेर
घिर	/०/	इ>ए	घेर
गूँघ	/०/	उ>ऊ	गूँघ
चूँट	/०/	उ>ऊ	चूँट
जुड	/०/	उ>आ	जोड
मुड	/०/	उ>ओ	मोड
घुट	/०/	उ>ओ	घोट
छूट	/०/	ऊ>ओ	छोट

निष्कष रूप में ब्रीकानेरी में समक धातु व्युत्पादक प्रत्यय के रूप में /०/ प्रत्यय को आंतरिक ध्वनि विचार सहित स्वीकार किया जा सकता है ।

५ ५ अनुकार-वाची-धातु-प्रत्यय

भाषा भाषा की वाहनी है । ब्रीकानेरी में भाषा की अत्यंत सरल एवं स्पष्ट ध्वजना के लिए अनेक अनुकार वाची शब्दों का प्रयोग उपलब्ध होता है । ये अनुकार वाची शब्द मुख्य रूप से सज्ञा के समक स्वीकार किये जा सकते हैं एवं इन सज्ञा वाची शब्दों में विविध व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से अनेक अनुकार वाची धातु रूप अस्तित्व में आय हैं । अतः इन प्रत्ययों को अनुकार वाची धातु की सज्ञा से अभिहित किया गया है । इन प्रत्ययों का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

(क) /ओ/

अनुकार वाची शब्द + प्रत्यय = व्युत्पन्न अनुकारवाची धातु

नरड	-ओ	तरडो
अरड	-आ	अरडो
दड	ओ	दडो

(ख) आदि सम ध्वनि आगम

अनुकार वाची शब्दों के प्रथम वण आगम को समध्वनि व्युत्पादक रूप में स्वीकार किया गया है । इसका विवरण इस प्रकार है -

मूल ध्वन्यात्मक रूप	विकार	विकारत्रय रूप	आदि सम ध्वनि आगम	व्युत्पन्न रूप
भर	अ	भर	भ	भभर
धर	अ	धर	ध	धधर
भर	अ	भर	भ	भभर
धन	ए	धन	ध	धधन
धन	ए	धन	ध	धधन
टन	आ	टन	ट	टटन

निष्कय रूप में अनुकारवाची धातु प्रत्यय के रूप में /आ/ एवं समानि आगम की प्रवृत्ति को स्वीकार किया जा सकता है ।

५ ६ व्याकरणिक प्रत्यय

व्याकरणिक प्रत्यय बीकानेरी में विविध प्रकार के सम्बन्धों का बोध कराते हैं । यह सम्बन्ध वाक्यस्तरीय एवं पदस्तरीय दोनों प्रकार का उपलब्ध होता है । वाक्यस्तरीय सम्बन्धों को वाक्य एवं प्रयोग की सहा से अभिहित किया जाता है एवं पदस्तरीय सम्बन्धों में काल, अर्थ, लिंग, वचन एवं पुरुष का बोध होता है । प्रयोग का विवरण यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है क्योंकि प्रयोग बोधक भिन्नपदस्तरीय सम्बन्ध बोधक उपलब्ध नहीं होते एवं सम्बन्ध दोनों ही वाक्यस्तरीय हैं । क्रिया-पदों में व्याकरणिक सम्बन्ध बोधका स्वरूप इस प्रकार है—

(१) काल (२) अर्थ (३) वाक्य (४) लिंग, वचन एवं पुरुष

इनका क्रमशः विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है—

५ ६ १ काल

काल विभाजन से समय का बोध होता है । क्रिया व्यापार के आरम्भ, समाप्ति एवं सभावना के आधार पर "काल" को तीन भागों में विभाजित किया जाता रहा है ।

(१) वर्तमान काल (२) भूत काल (३) भविष्यत् काल

काय व्यापार की पूर्णता, अपूर्णता एवं सामान्यता के आधार पर इन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) पूर्ण (२) अपूर्ण (३) सामान्य

इस प्रकार "काल" की दृष्टि से क्रिया रूपों के स्वरूप को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

- (१) वतमान पूरा (२) वतमान अपूरा (३) वतमान सामान्य
 (४) भूत पूरा (५) भूत अपूरा (६) भूत सामान्य
 (७) भविष्यत् पूरा (८) भविष्यत् अपूरा (९) भविष्यत् सामान्य

इनका क्रमशः विवरण इस प्रकार है—

५ ६ १ १ वर्तमान पूर्ण

जब वाक्यान्तगत काय व्यापार के अभी-अभी पूर्ण होने की प्रतीति हो उसे वर्तमान पूरा की संज्ञा दी गई है। बीकानरी में वर्तमान पूरा के उदाहरण इस प्रकार दृष्टव्य हैं—

एक वचन

बहु वचन

(अ) मैं चीठी लिखी है। मैंही चीठी लिखी है।

वैं चीठी लिखी है। या चीठी लिखा है।

इयें चीठी लिखा है। बा चीठी लिखी है।

(ब) हू गया है। रह गया हा।

थू गयो है। रहे गया हो।

को गयो है। के गया है।

उपर्युक्त व्यापार पर बात सरचना का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(१) पानु + भूत पूरा = व्युत्पन्न अणु + /०/ + निग वचन, वाचक मण /मा/ + महापक्ष श्रिया /है/ अस्तित्व भूत + व्यापारविषय बोधि का प्रत्यय भूतपूरा = व्युत्पन्न अणु + /०/ अणि + पुनिग एक वचन मण /मो/ + सदा पर श्रिया /है/ + अस्तित्व भूत + उत्तम पुरुष एक वचन पुनिग स्त्रीनिग मण /मा/ का प्रयोग हुआ है।

उपर्युक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है—

एक वचन

बहु वचन

	मूल वृद्धत	सहायक क्रिया /ऊ/	मूल वृद्धत	सहायक क्रिया /आ/
१—	आयो	हो	ऊ आयो	हो आ
२—	आयो	हो	ऐ आयो	हो आ
३—	आयो	हो	ऐ आयो	हो आ

योग क्रम की दृष्टि से यह योगिक विधान विदिनष्ट कोटि का है एक वृद्धत क्रिया पदों का योग विदिनष्ट कोटि का है तथा व्याकरणिक प्रत्यय का योग विदिनष्ट कोटि का है।

५ ६ १ २ वतमान अपूर्ण

जब वाक्यान्तगत वतमान में काय व्यापार की अपूर्णता का बोध होता है उसे वतमान अपूर्ण की सहायक क्रिया से अभिहित किया गया है। बीकानेरी बोली में वतमान अपूर्ण के रूपा का इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

एक वचन

बहु वचन

हैं पढ़ रहे हैं लिख रहे हैं।

मैं पढ़ रहा हूँ, मैं लिख रही हूँ।

धू पढ़ रहे हैं धू लिख रहे हैं।

वे पढ़ रहे हैं, वे लिख रहे हैं।

वो पढ़ रहे हैं वो लिख रहे हैं।

वे पढ़ रहे हैं, वे लिख रहे हैं।

यहाँ सहायक क्रिया के लिंग वचन के समान मूल धातु में लिंग वचन प्रत्ययों का योग द्रष्टव्य है। नेप त्रिवरण वतमान पूरा के समान हैं।

५ ६ १ ३ वर्तमान सामान्य

जब वाक्यान्तगत काय व्यापार की पूर्णता या अपूर्णता के स्थान पर वतमान में समानता का बोध होता है, उसे सामान्य वतमान की सहायक क्रिया से अभिहित किया गया है। उदाहरण द्रष्टव्य है—

एक वचन

बहु वचन

मैं किताब लिख रही हूँ।

मैं किताब लिख रही हूँ।

धन किताब लिख रही है।

धन किताब लिख रही है।

वे किताब लिख रही है।

वो किताब लिख रही है।

५ ६ १ ५ भूत अपूर्ण

जब वाक्यान्तगत भूतकाल में काय व्यापार की अपूर्णता में बोध होता है तो उसे भूत अपूर्ण की संज्ञा दी जाती है । नीकानेरी में भूत अपूर्ण के रूप सव्य रूप इस प्रकार है —

पुलित

एकवचन

१— हूँ पड़तो थो, हो ।

२— यूँ पड़तो थो, हो ।

३— वो पड़तो था, हो ।

बहुवचन

मैं पड़ता था, हा ।

ये पड़ता था, हा ।

वे पड़ता था, हा ।

स्त्रीलिंग

एक वचन

१— हूँ पड़ती थी, हो ।

२— यूँ पड़ती थी, हो ।

बहुवचन ।

मैं पड़ती थी, हा ।

वे पड़ती थी, हा ।

उपयुक्त उदाहरणों के आधार पर इसके योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

धातु + कृत + सहायक धातु + लिंग, वचन प्रत्यय

कृत प्रत्ययों का वचन 'कृत प्रत्यय' अध्याय में किया गया है । भूत सहायक किया एक धातु में लिंग, वचन प्रत्ययों का योग भूत पूर्ण के अनुरूप ही है अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

५ ६ १ ६ भूत सामान्य

वाक्यान्तगत भूतकाल में जब काय व्यापार की सामान्यता का बोध होता है तो उसे भूत सामान्य की संज्ञा दी जाती है । नीकानेरी बोली में इसके उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं —

पुलिंग

एक वचन

बहु वचन

१- मन किताब लिखणी थी, ही । मूहि किताब लिखणी थी ।

२- धन किताब लिखणी थी, हो । योने किताब लिखणी थी ।

३- वेन किताब लिखणी थी ही । वान किताब लिखणी थी ।

इसका विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

धातु + कृत + सहायक क्रिया + लिंग वचन बोधक प्रत्यय

५ ३ १ ७ भविष्यत् पूर्ण एव अपूर्ण

बीकानेरी बोली में भविष्यत् पूर्ण एवं अपूर्ण बोधक प्रत्यय उपलब्ध नहीं होते इनका बोध सहायक क्रिया के माध्यम से होता है ।

५ ३ १ ८ भविष्यत् सामान्य

वाक्यान्तगत जब भविष्य काल में कार्य व्यापार की सामान्यता का बोध हो तो उसे भविष्यत् सामान्य कहा जाता है । बीकानेरी बोली में इसका उपलब्ध रूप इस प्रकार है —

एक वचन

बहु वचन

हूँ पढीस

मूह पडसा

थू पढीस

ये पडसो

वो पडसी

वे पडसी

५ ३ २ काल सरचना

धातु के साथ सहायक क्रिया के संयोग को दृष्टि में रखकर काल सरचना को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है —

(१) मूल काल

(२) योगिक काल

१- मूल काल

यक धातु का प्रयोग नहीं होता तो उसे मूल बाल की सहा से अभिहित किया जाता है ।

२- यौगिक काल

जब वृद्धत म बाल सरचना हेतु /है/ अस्तित्व सूचक एव /हा/ /पो/ यदि सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है तो उसे यौगिक काल की सहा से अभिहित किया गया है ।

५ ६ २ १ मूल काल

बीकानेरी म मूल काल के रूप इस प्रकार उपसर्ग है —

(१) वर्तमान सामान्य	हूँ पढ़ूँ
(२) भूत सामान्य	थे पढ़े
(३) भविष्यत् सामान्य	हूँ पढ़ीस रूप
(४) भूत पूर्ण	हूँ पढ़ियो
(५) वर्तमान संकेताथ	हूँ पढ़तो
(६) आदेशाथ विध्यथ	आप पढ़ा
(७) सामान्य विध्यथ	पू पड़े

उपयुक्त उदाहरण पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि मूल धातु अथवा वृद्धतो म लिंग, वचन प्रत्यया का योग हुआ है । यथास्थान इनका विवरण काल एव अथ सीपक के अंतर्गत किया जा चुका है ।

५ ६ २ २ यौगिक काल

वृद्धता के आधार पर बीकानेरी मे उपलब्ध यौगिक काल सरचना की तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

(१) वर्तमान कालिक	—	यौगिक रूप
(२) भूत कालिक	—	यौगिक रूप
(३) भविष्यत् कालिक	—	यौगिक

४ ६ ० ० १ वर्तमान कालिक योगिक रूप

वर्तमान कालिक कृत्ता म /यो/, /हो/ धातु म विभिन्न व्याकरणिक रूपों का प्रयोग उपलब्ध होता है । शीतानीरी म वर्तमान कालिक योगिक रूप इस प्रकार है —

सावतो हो सावतो होमी, सावती हासी सावता यो, सावती थी सावता हा माहि ।

इनका निवरण अथ शीपक के अन्तर्गत किया जा चुका है अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

५ ६ २ २ २ भूत कालिक योगिक रूप

भूत कृत्ता के साथ अथ सहयोगी क्रिया रूप /हो/ /यो/ धातु के व्याकरणिक रूपों का प्रयोग हुआ है जिनका निवरण अथ शीपक के अन्तर्गत किया गया है । शीतानीरी म उपलब्ध भूतकालिक योगिक रूप इस प्रकार है —
मारियो मारिया, आदि ।

५ ६ २ २ ३ भविष्यत् कालिक योगिक रूप

अब भविष्य कालिक कृत्ता मे /हो/, /यो/ धातु के व्याकरणिक वाक्यों के प्रत्ययों का योग होता है तो उह भविष्य कालिक योगिक रूप की सहायता से अभिहित किया जाता है । शीतानीरी म उपलब्ध भविष्यत् कालिक रूप इस प्रकार है —

जावणो है खावणो है, जावणो हो जावणो हासी । इनका निवरण वात एव अथ शीपक के अन्तर्गत किया जा चुका है अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

निष्पक्ष रूप म धातु म प्रयुक्त व्याकरणिक वाक्यों के उपलब्ध प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

(क)

(१)	/ऊ/	/ग/	/ओ/	/ओ/	/ग/	/आ/
(२)	/ऊ/	/ग/	/ओ/	/आ/	/ग/	/आ/
(३)	/ए/	/ग/	/आ/	/ए/	/ग/	/आ/

उपयुक्त उपलब्ध प्रदर्शना का वैज्ञानिक दृष्टि से विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता —

एक वचन

बहु वचन

/ऊ/, /ऊ/ /ए/

/आ/, /ए/

सूचना —

आदर सूचक वाक्यांश में बहु वाचनिक व्याकरणित कोटि के प्रत्ययों का प्रयोग एक वचन में होता है —

(ख)

/इम/ /ओ/ भविष्यत् कानिश्च प्रत्यय है।

(ग)

/ओ/ एवं /अ/ पुलिग वाचक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं।

(घ)

स्त्री लिंग वाचक प्रत्ययों में /ई/ एकवचन वाचक एवं /य/ओ/ का बहुवचन वाचक प्रत्यय माने जा सकते हैं।

योग क्रम की दृष्टि से इन व्याकरणिक प्रत्ययों का योग सन्निष्ट कोटि का है।

उपयुक्त सभी काला ॥ व्याकरणिक कोटि के वर्णों का योग क्रम अन्त्य योग की सीमा के अन्तर्गत आता है।

५ ६ ३, अर्थ

जब श्रिया व्यापार में विधान की रीति का बोध हो व्याकरण के क्षेत्र

मे उस अर्थ के नाम से अभिहित किया गया है । बीजानेरी मे इस प्रकार के सवय (अर्थ) जोध की पांच रीतियाँ उपलब्ध होती हैं —

(१) निश्चयाथ

(२) विध्यथ

(३) समावनाथ

(४) सदेहाथ

(५) सकेताथ

५, ६ ३ १ निश्चयाथ

जब क्रिया विधान की रीति से निश्चय का बोध हो तो उस निश्चयाथ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है । बीजानेरी मे उपलब्ध निश्चयाथ एक ही प्रकार है —

(अ) भविष्यत् सामान्य के रूप

(ब) वर्तमान सामान्य के रूप

(स) भूत सामान्य के रूप

उपयुक्त सभी रूपा का विश्लेषण क्रमशः भविष्यत् सामान्य वर्तमान सामान्य एवं भूत सामान्य के अन्तर्गत किया जा चुका है अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

(द) भूत पूरण के रूप

इसमे लिये वचन सहित भूत कालिक वृद्धतीय रूपा का प्रयोग होता है । यथा मरिया, पड़ियो । इसमे योगिक भूतपूरण के रूपा का भी प्रयोग होता है । यथा—पड़िया हा करिया हा आदि । यही भूत कालिक वृद्धत म /हा/ के वर्तमान सामान्य के विविध ध्याकरणिक प्रत्यया का प्रयोग हुआ है । वृद्धतीय व्युत्पत्तिक प्रत्यय का विवरण वृत्त-प्रत्यय प्रकरण मे एवं /हा/ धातु का विवरण वर्तमान पूरण मे किया जा चुका है ।

(च) वर्तमान पूरण के रूप

इसमे भूत वृद्धत के साथ /हा/ धातु के सामान्य वर्तमान के विविध

व्याकरणिक कोटि के प्रयोग का प्रयोग होता है, यथा 'करियो है।' इनका विवरण यथा स्थान दिया जा चुका है।

(छ) वर्तमान अपूर्ण के रूप

इसमें वर्तमान अपूर्ण के रूपों का प्रयोग होता है जिनका विवरण वर्तमान अपूर्ण के अंतर्गत किया जा चुका है।

(ज) भूत अपूर्ण के रूप

इसमें भूत अपूर्ण के रूपों का प्रयोग होता है जिसका विवरण भूत अपूर्ण में किया जा चुका है।

(झ) भविष्यत् पूर्ण के रूप

(त) भविष्यत् अपूर्ण के रूप

(थ) भविष्यत् सामान्य के रूप

बीकानेरी में भविष्यत् पूर्ण एवं अपूर्ण बोधक रूप उपलब्ध नहीं होते बल्कि इनका बोध सहायक क्रियाया के योग से होता है, जिसका विवरण भविष्यत् सामान्य के अंतर्गत किया जा चुका है।

५ ६ ३ २ विध्यर्थ

जब वाक्यांतगत किसी कर्तव्य परामर्शता, दायित्व हेतु किसी प्रकार का आदेश हो तो उसे विध्यर्थ की सहायता से अभिव्यक्त किया जाता है। काव्य सम्पादन की प्रत्यक्षता एवं अस्मत्त्वता के आधार पर विध्यर्थ का दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) प्रत्यक्ष विधि

(२) अप्रत्यक्ष विधि

५ ६ ३ २ १ प्रत्यक्ष विधि

जब काव्य का सम्पादन आदेश कर्ता के समक्ष अभिव्यक्त होता है

(ख) धन लावणो	म्होने लावणो
धन लावणो	भोन लावणो
वेने लावणो	बोन लावणो
(ग) पू भाई	हो भाया
वा भाई	हो आयो
(घ) भावणो है	भावणो है
भावणो है	भावणो है
भावणो है	भावणो है

उपमुक्त उदाहरणों के आधार पर इनका विवरण इस प्रकार किया जा सकता है—

(क) उपसङ्ग अक्षरमय विधायक प्रत्यय इस प्रकार है—

/ए/, /इ/, /ए/, /०/ इह काम बोधक अक्ष के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

(ख) /जा/ एव /ई/ अक्षों को अप्रत्यक्षता बोधक अक्ष के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

(ग) क्रम संख्या “२” के दन्तयुत योगिक रूप का प्रयोग उपनब्ध होता है जिसमें सविध्य कानिक इन्त /ए/ एव सहायक त्रिधा /इ/ के साथ /ए/ अप्रत्यक्षता बोधक अक्ष का योग हुआ है ।

५ ६ ३ ३ सभावनार्थ

जब वाक्यान्तगत कार्य व्यापार की रीति के द्वारा काम की सम्भा-
वना का बोध होता हो तो उसे सभावनार्थ की सज्ञा से अभिहित किया
जाता है । बीजानेरी बीली में उपसङ्ग सभावना बोधक रूपों को इस प्रकार
प्रस्तुत किया जा सकता है—

एक वचन	बहु वचन
(अ) १- ह आऊ	म्हे आवा
२- थू आव	थे आवो
३- या आव	ये आवा
(ब) १- मन आवणो है	म्हान आवणो है
२- धनै आवणो है	धोन आवणो है
३- रेन आवणो है	बोन आवणो है

उपयुक्त उदाहरणों के आधार पर इनका विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। वर्णित उदाहरणों में (अ) वर्गीय रूप मूल के हैं एवं (ब) वर्गीय एवं योगिक काल के हैं। २ वग म भविष्य कालिक कृत का प्रयोग हुआ है। द्वितीयाश सप्तक के रूप में /हो/ धातु के सामान्य वर्तमान कालिक रूप का प्रयोग हुआ है। भविष्य कालिक कृत का कृ प्रत्यय में एवं /हो/ धातु का विवरण प्रयुक्त किया जा चुका है। अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

५ ६ ३ ४ सदेहाय

जब वचनानुगता क्रिया विधान की रीति से सदेहाय का बोध हो तो उसे सदेहाय की सहायता से अभिविहित किया जाता है। जीवितेयी बोरी में इसके उपलब्ध रूप इस प्रकार हैं —

एक वचन	बहु वचन
(१) आवता होयी होवेला	आवता होसी, होवेला
(२) आवता हागी, हावेला	आवता हासी, होवेला
(३) आवगे हो गी, होवेना	आवना होयी, होवेना
(४) आवगा हो गी, होवेना	आवणो होयी, होवेला
(५) आवगे होगे, होवेना	आवा होसी, होवेना

उपयुक्त उदाहरणों के आधार पर विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

सन्हाये रूपा का निर्माण वतमान कालिक, भूत कालिक एवं भविष्यत् कालिक कृतों के साथ /हो/ धातु के भविष्यत् कालिक रूप अथवा /हा/ धातु के साथ /एल/ ध्युत्पादक एवं /-आ/ /ई/ व्याकरणिक कालिक के प्रत्ययों के योग से होता है ।^१

५ ६ ३ ४ सचेतार्थ

जब वाक्यान्तगत क्रिया विधान की रीति में मनेन का बाध होता है तो उसे सचेतार्थ की सहा से अभिवृत्ति दिया जाता है । बीजानेरी बाली में इसके उपलब्ध रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

(क) मूल काल

एक ध्वन	बहु ध्वन
हू लावता	भू लावता
धू लावतो	धे लावता
यो लावतो	व लावता

(ख) यौगिक काल

हू लावतो होयो	भू लावता हूँया
धू लावतो होयो	धे लावता होया
यो लावतो हूँया	व लावता होया

उपमुक्त रूपा का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल काल में वतमान कालिक कृतों का प्रयोग उपलब्ध होता है एवं यौगिक काल में वतमान कालिक कृतों के साथ /हो/ धातु के भूत कालिक कृतार्थ रूप का प्रयोग हुआ है ।

५ ६ ४ वाच्य

क्रिया के जिस रूप में उसके विधान का सत्य निधारित होता है उसे

१— बीजानेरी बाली में स्वरात धातुओं में प्रत्यय योग से पूर्व 'व' श्रुति का आगम होता है अतः /हा/ धातु में प्रत्यय जुड़ने से पूर्व 'व' श्रुति का आगम हुआ है ।

व्याकरण के क्षेत्र में वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया गया है। उद्देश्य की दृष्टि से 'वाच्य' को तीन भागों में विभाजित किया गया है -

(१) कृतवाच्य

(२) कर्मवाच्य

(३) भाववाच्य

५ ६ ४ १ कृतवाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता हो कि उसका उद्देश्य कर्ता है, उसे कृत वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। बीरानेरी में उपलब्ध माल एव अम के रुपा का पूर्ण विदलेपण प्रस्तुत किया जा चुका है। ये सभी रूप कृत वाच्य के बोधक हैं। यद्यपि इन रूपों में वाच्य बोधक किसी अंग का प्रयोग नहीं हुआ है अतः /०/ विभक्ति की वाक्यांग के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

५ ६ ४ २ कर्मवाच्य

जब क्रिया के व्यापार से यह बोध होता है कि उसका उद्देश्य कर्म है तो उसे कर्म वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। बीरानेरी में कर्म वाच्य निष्पात्त रूपों प्रथम उपलब्ध नहीं होता बल्कि उसका व्युत्पादन जा ग अथवा जा - ग + /हा/ या /मा/ + व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों के योग से होता है।

१	१ २ ३	देसिमो	जावतो
२			जागो
३			जाऊँ
४			गयो होसी
५			जावतो होमी
६			गया है
७-			जावतो हो
८			जाऊँ हूँ

धातु आवृत्ति की दृष्टि से कम वाक्य के रूप दो धातु के एवं तीन धातु के रूप में उत्पन्न होते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों में /जा/ धातु के साथ /ओ/, /आ/, /ई/ लिंग, वचन औरक प्रत्ययों का योग हुआ है। कम मन्त्र्या ४, ५ में /इ/ धातु के साथ भविष्यत् समावना के प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है।

५ ६ ४ ३ भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का वर्तमान अथवा भविष्य नहीं है, अपितु क्रिया स्वतन्त्र पद्धति ग्रहण करती है तो उसे भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य के रूपा की रचना अव्यय क्रिया के द्वारा होती है। भाववाच्य की रचना एवं विवरण कमवाच्य के अनुरूप ही है, अतः पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

५ ६ ५ लिंग, वचन एवं पुरुष

बीकानेरी में उपलब्ध लिंग, वचन एवं पुरुष बोधक प्रत्ययों के सम्बन्ध में काल एवं अर्थ के क्षेत्र में सविस्तार विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है। लिंग वचन एवं पुरुष प्रत्ययों का निर्धारण पदावयव पर आधारित है। बीकानेरी में उपलब्ध लिंग, वचन बोधक प्रत्यय तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

पुंलिंग

एक वचन	बहु वचन
(१) ओ ऊ	आ ओ
(२) ओ ऊ	आ ओ
(३) ओ ए	आ ओ ए

स्त्री लिंग

(१) आ ऊ ई	य/ओ
(२) आ ऊ ई	य/ओ
(३) आए ए ई	य/ओ

कृत-प्रत्यय

७ १ सामान्य चिन्नेन

जो प्रत्यय धातुओं में समान होकर अभिनय रूप निष्पन्न करने हैं, वे कृत प्रत्यय के नाम से अभिहित किये जाते हैं एक कृत प्रत्यय का योग स ध्युत्पन्न का कृत कहलाता है । जिस संज्ञा या विशेषण आदि का किसी क्रिया (धातु) का जय कृतक मारता हो उसे कृत कहते हैं ।^१ कृत को ही हम निम्नांकित रूपों में विभक्त कर सकते हैं—

- (१) संज्ञा वाचक कृत-प्रत्यय
- (२) विशेषण वाचक कृत-प्रत्यय
- (३) क्रिया-विशेषण वाचक कृत-प्रत्यय

६ १ संज्ञा वाचक कृत-प्रत्यय

जो प्रत्यय धातु में समान होकर संज्ञावाची कृत रूप व्युत्पन्न करने हैं, उन्हें संज्ञावाचक कृत-प्रत्यय नाम से अभिहित किया गया है । बोलानेरी बोलो में उपलब्ध संज्ञा वाचक कृत रूप अधोलिखित हैं—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय	लिंग	वचन
पीस	/ए/	/०/	पुं०	एक
दरम	/ए/	/०/	'	'

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्या० कौटि के प्रत्यय	लिङ्ग	वचन
जीम्	/ए/	/०/	पु०	एक
दख	/ए/	/ओ/	"	"
ले	/व/ /ए/	/ओ/	"	"
बोल्	/ए/	/ओ/	"	"
रम्	/ए/	/ओ/	"	"
भा	/व/ /ए/	/ओ/	"	"
निरख्	/ए/	/ओ/	"	"

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित हुआ कि यहाँ पर /ए/ व्युत्पादक प्रत्यय के रूप में उपलब्ध है।

६ १ १ प्रायोगिक स्थितियाँ

वितरण व्यवस्था के आधार पर कहा जा सकता है कि बीकानेरी में /ए/ प्रत्यय मुख्य रूप से केवल भक्षा शब्द ही युत्पन्न करता है। अभी अभी इसका प्रयोग विनोदशङ्कर भी उपलब्ध होता है—

अणहोली बात

कुमलावली फूल

व्याकरणिक कौटि के प्रत्यय पाग के आधार पर भी /ए/ का भिन्न स्तर स्थापित किया जा सकता है।

बीकानेरी में /ए/ के साथ सम्बन्ध होने वाले व्याकरणिक प्रत्यय आगे द्रष्टव्य हैं—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक कौटि के प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जीम्	/ए/	/०/	जीमण
नरख	/ए/	/०/	नरखण

धातु	व्युत्पन्न प्रत्यय	व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
पीत	/ए/	/आ/	पीमणा
/अण/ हो/ ए/		/ई/	भणहोणी
देख	/ए/	/ए/	देखण
बोलू	/ए/	/आ/	बोलणा

वितरण व्यवस्था के आधार पर /ए/ प्रत्यय में [०], [आ], [ई], [ए] एवं [अ] प्रत्ययों का योग उपलब्ध है।

उपयुक्त दृष्टता से विभिन्न व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा भी इतर कोटि के व्याकरणिक स्वतन्त्र रूपों का उपलब्ध होते हैं, यथा—

देखणियो	/देखण/इय/ओ/
पढ़णियो	/पढ़ण/इय/ओ/
रमणियो	/रमण/इय/ओ/
करणमाली	/करण/माल/ओ/
सावणमाली	/सावण/माल/ओ/
मरणवाली	/मरण/वाल/ओ/

उपयुक्त स्वतन्त्र रूपों में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों की योग की दृष्टि से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) पूर्व प्रत्यय
आ

(ख) पर प्रत्यय

/इय/ ओ/
/माल/ ओ/ ई/
/वाल/ ओ/ ई/

योग की दृष्टि से दृढ़ता के व्युत्पादक एवं अनेक बोधक प्रत्ययों

का योग सन्निष्ट कोटि का है । इस योग क्रम का सूत्र रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

धातु	भूत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक प्रत्यय =	भ्यु० कृ०
जोम्	/ण/	/०/	जोमण

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर त्रित्यक् प्रत्ययों में चारों विभक्तियों का प्रयोग वृद्धता में विदिलष्ट कोटि का माना जा सकता है—

सावर्ण्य, जोमणसू, देखले रे वास्ता, पीवण रो

वृद्धत प्रत्ययों में इतर भूत्पादक प्रत्ययों का योग दोनों प्रकार का माना जा सकता है ।

योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

सन्निष्ट

भूत्पादक प्रत्यय	कृत्	नियेच बोधक प्रकृति
भण	/होण /ई/	भरणहोणी

यहाँ /ण/ व्यञ्जनात् है पर प्रत्यय व प्रकृति के योग से उम्की ज्यता के कारण भासकता की उपलब्धी मानी जा सकती है ।

विदिलष्ट कृदन्त

कृदन्त	भूत्पादक प्रत्यय	संज्ञा
वरण	इय/ओ	वरणिणी
भरण	इय/ओ	भरणिणी
पण	भाव/ओ	पणमाती

६ २ विशेषण वाचक कृत्-प्रत्यय

जो प्रथम धातु में समन्वय होकर विशेषण शब्द भूत्पन्न करते हैं,

उहे विशेषण वाचक कृत प्रत्ययो के नाम से अभिहित किया गया है। विशेषण-वाचक कृदन्त दो प्रकार के होते हैं —

(अ) वर्तमान कालिक कृत प्रत्यय /त्/ से व्युत्पन्न रूप

(ब) भूतकालिक कृत प्रत्यय /य/ से व्युत्पन्न रूप

६ २ १ वर्तमान कालिक कृत्-प्रत्यय

बीकानेरी के वर्तमान कालिक कृदन्त रूपों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	तियक विधायक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
पढ़	त्	/-ओ/	पढ़तो
रम	-त्	/-ओ/	रमतो
सू	-त्	/ई/	सूती
सोच	त्	/-ओ/	सोचतो

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने से निम्नान्वित निष्कर्ष निकाला जा सकता है —

(अ) बीकानेरी में /त्/ वर्तमान कालिक कृत प्रत्यय है।

(ब) इसके योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

धातु + कृत् प्रत्यय + ति० वि० प्रत्यय = व्युत्पन्न कृदन्त

(स) यह योग क्रम सदिनष्ट कटि का है।

(द) विनायक के द्वारा विनेष्य के मुख्य क्रिया व्यापार का बोध होता है।

(प) विनेष्य के अनुरूप अर्थ व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों द्वारा विचार उत्पन्न होता है।

६ २ २ भूतकालिक कृत्-प्रत्यय

बीकानेरी के भूतकालिक कृदन्त रूपों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत

। जा सकती है —

धातु	ध्वनि	कृत् प्रत्यय	तियक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
मर	/इय/	/ओङ्/	/ओ/	मरियोङो
जुस	/इय/	/०/	/ओ/	जसियोङो
रो	/य/	/०/	/ओ/	रायोङो
बस	/इय/	/०/	/ओ/	बसियो १

उपर्युक्त तालिका के आधार पर निम्नलिखित विषय प्रस्तुत किए जा सकते हैं —

(क) बीकानेरी में भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय /ओङ्/ है ।

(ख) प्रत्यय योग से पूर्व यदि धातु स्वरान्त हो तो /य/ अथवा /व/ श्रुति का आगम होता है एवं यदि धातु ध्वननांत हो तो /इय/ श्रुति का आगम होता है ।

(ग) /ओ/ /ई/ तियक विधायक प्रत्यय हैं ।

(घ) इसके योग क्रम को हम प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

धातु + ध्वनि (श्रुति)कृत प्रत्यय + तियक विधायक प्र = व्यु० रूप

(ङ) योग की दृष्टि से यह योग क्रम सदृष्टि कौटि का है । इसके द्वारा विशेष्य के मुख्य क्रिया व्यापार की पूर्णता का बोध होता है ।

(च) बीकानेरी में कहीं कहीं इस रूप का प्रयोग सहायत् भी उपलब्ध होता है ।

(छ) विशेष्य के अनुरूप इनके व्याकरण प्रत्ययों के योग से विकार उत्पन्न होता है ।

६. ३ क्रिया-विशेषण वाचक कृत्-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के द्वारा धातु से क्रिया विशेषण रूपा की सृष्टि होती है,

घातु + पूर्व कालिक प्रत्यय = व्युत्पन्न रूप

(३) /र/, /आ/ का प्रतिबद्धित रूप जहाँ पर का प्रयोग होता है वहाँ /अ/ ध्वनि का सशोधित रूप स्वीकार किया जा सकता है।

१ ३ २ तात्कालिक क्रिया-विशेषण कृत्-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के घातु में सलग्न होने पर मुख्य क्रिया व्यापार के साथ होने वाले अन्य क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है, उन्हें तात्कालिक क्रिया विशेषण कृत् प्रत्यय के नाम से अभिहित किया गया है।

बोका नेरी के तात्कालिक कृत् प्रत्ययों से व्युत्पन्न होने वाले कृन्त रूप इस प्रकार हैं —

विशेषणवाची कृदन्त + बल बोधक + /ई/ का प्रयोग।
यथा —

काम होवत ई पार बोलियो ।

सरप डसतेई मरग्यो ।

दसत ई भागग्यो ।

हैं चालता चालनो पडग्यो ।

उपयुक्त उदाहरणों में /ई/ परसय के योग के अतिरिक्त द्विरक्ति भी सम्भित होती है।

इस प्रत्यय द्वारा निष्पन्न रूपों में अन्य व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय अनित विचार उपलब्ध नहीं हैं।

निष्पन्न रूप में बोका नेरी बोली में प्राप्त कृत् प्रत्ययों की तालिक इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

निगारी	सनावाची	/ ए /
	विशेषणवाची	अपुणता बाध
		शुणता बाध
		/०/ /त/
अधिकारी	शुणनातिक	/०/ /दिप/ /र मर/
	सारानिक क्रिया विशेषण	/ई/

पञ्च-प्रत्यय

७१ सामान्य विवेचन

वीकानेरी म कुछ परमग इस प्रकार के हैं जिनके द्वारा वाक्यस्तरीय व्याकरणिक कृति का सम्बन्ध बोध होता है अथवा जो वाक्य म किसी व्याकरणिक वाक्यात्मक रीति का बोध कराने हैं, प्रयोग की दृष्टि स इनका प्रयोग पद या समुच्चय के पश्चात् होना है, योग की दृष्टि से ये मुक्त सङ्गामक हैं अथ की दृष्टि से इस प्रकार के परसया म स्वतन्त्र अथ बोध कराने की क्षमता नहीं होती । अतः इस प्रकार के परसयों को पञ्च-प्रत्यय की सजा म अभिहित किया गया है । इनकी साथ वाङ्मिता एवं प्रायोगिक स्थिति की भिन्नता के कारण इन्हें पृथक् कृति म ही स्वीकार करना चाहिये । अतः इसी मायता को स्वीकार कर इनका पृथक् विवरण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है ।

पञ्च प्रत्ययों को व्यवस्था के आधार पर दो वर्गों म विभाजित किया जा सकता है -

— १- परमों —

२- निपान

१— परसर्ग

परसर्ग वे आवद्ध अण हैं जो किसी पं या पं समुच्चय के परचान् प्रयुक्त होकर वाक्य में किसी दूसरे पं या पं समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं।^१ परसर्ग से मेरा आशय एक स्वतन्त्र रूपांश से है जिसमें स्वतन्त्र अथ बोधनार्थ की क्षमता नहीं होती एव जो वाक्यान्तगत किसी पं या पं समुच्चय के परचान् संलग्न होकर किसी दूसरे पं या पद समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। यथा—

“वे धीरे न मारियो — वाक्य में ‘न’ परसर्ग एक ओर सन्धान /धीरे/ एवं श्रियापद /मारियो/ के बीच कमपरत सम्बन्ध सूचित करता है तो दूसरी ओर इसका स्वतन्त्र अर्थ कुछ नहीं है।

२— निपात

निपात वे आवद्ध अण हैं जो उस पं या पं समुच्चय के परचान् वाक्य में निमित्त होते हैं जिसके सम्बन्ध में किसी व्याकरणिक या वाक्यात्मक रीति या पद्धति अभिव्रत होती है। निपात से मेरा आशय एक आवद्ध रूपांश से है जो वाक्यान्तगत निश्चय अथवा अवधारणा सूचित करते हैं एवं जिस प्रकार परसर्गों द्वारा अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं उसी प्रकार निपातों द्वारा सम्बन्ध व्यक्त नहीं होत अपितु उनसे द्वारा किसी व्याकरणिक कृति अथवा वाक्यात्मक विधि का प्रकाशन होता है। इस प्रकार इनकी प्रकृति परसर्गों से भिन्न है। यथा—

धीरे ईज ओ काम करियो है, वाक्य में /ईज/ निपात /धीरे/ के सम्बन्ध में निश्चय अथवा अवधारणा सूचित करता है धीरे ही इस काम को करने वाला है अथ कोई नहीं।

७२ परसग

बीकानेरी में अधोलिखित परसग उपलब्ध हैं—

- १— /०/
- २— /ने/
- ३— /सू/
- ४— /रे/
- ५— /र/ओ, आ, ई।
- ६— /आन/बाल/ओ,आ, ई/
- ७— /स/ओब/आन/ईब/
- ८— /म/पर/
- ९— /भर/तक/तई/

इन परसगों द्वारा किसी न किसी प्रकार का व्याकरणिक सम्बन्ध बोध होता है। रूप की दृष्टि में इन परसगों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

- अ— रूपांतर रहित
- ब— रूपांतर सहित

अ— रूपान्तर रहित

जिन परसगों में किसी भी प्रकार के व्याकरणिक अंगों के योग उपलब्ध नहीं होते अर्थात् जो वाक्यान्तगत प्रत्येक स्थिति में एक समान रहते हैं एवं लिंग, वचन के अनुरूप परिवर्तित नहीं होते, उन्हें रूपांतर रहित परसगों कहा जा सकता है। बीकानेरी बोली में निम्नलिखित परसग रूपांतर रहित हैं—

/न/ /सू/ /र/ /म/ /पर/ /मय/ /तक/

ब— रूपान्तर सहित

जिन परसगों में लिंग एवं वचन के अनुरूप परिवर्तन होता है, उन्हें

रूपांतर सहित परसग कहा गया है। बीजानेरी में निम्नाविनी परसग रूपांतर सहित हैं— /र/ /वाल/ में लिंग एवं वचन के अनुसंध /ओ/ /आ/ /ई/ विभक्तियाँ लगती हैं एवं /न/ परसग के उपरान्त लिंग एवं वचन के अनुसंध /— ओर/ /आव/ /ईन/ मदा का योग उपलब्ध होता है।

७२१ रूपांतर रहित परसग

रूपांतर रहित परसगों का विवरण इस प्रकार है—

७२११ /न/

बीजानेरी में इस परसग का प्रयोग संज्ञा, सबनाम एवं क्रिया विभेपण के पश्चात् होता है। विभेपण जब संज्ञावत् प्रयुक्त होता है तो उस पश्चात् इस परसग का प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा— 'मरियोड न मत भार' वाक्य में /मरियोड/ पर संज्ञावत् प्रयुक्त है, ऐसी दशा में /न/ का व्यवहार है। यह परसग मुख्य रूप से वचन कारक का सूचक है।

इस परसग से अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध बोध इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

संज्ञा पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
छोर	न	छोर न
घर	न	घर न
छोरी	न	छोरी न
सबनाम पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
मैं ॥ म	न	मन
तैं ॥ थ	न	थन
य	न	यन
क्रिया विभेपण	परसग	व्युत्पन्न रूप
मठ ॥ अठी	नै	अठीन
बठ ॥ बठी	न	बठीन
वठ ॥ वठी	न	वठीन

सम्बन्ध बोध

छात्र नै अवार वाम बरनो है	(वतृ परक)
छोरो नै मूल जहर जावगा है	(')
मन कोम बरायो	(")
राम नै फोड	(कम सूचक)
मा नै सुलाय	(')
अठोन मत देख	(निगा सूचक)
बाल रात नै गूड पोली पडियो	(अधिकरण परक)

७२१२ / गू /

इस परमश का प्रयोग मज्ञा सवनाम, विनोपल एव त्रिया-विनोपल के पदवान् उपनय होना है । इस परमश द्वारा करण एव अपाशन परन सम्बन्ध बोध हाना है । इसका प्रयोग एव सम्बन्ध बोध इस प्रकार है—

प्रयोग

शपा प	परमश	ध्युलप्र रूप
राम	गू	राम गू
मन	गू	मा गू
ध्यान	गू	ध्यान गू
सवनाम प	परमश	ध्युलप्र रूप
हैं	-गू	हैं गू
य	-गू	य गू
भील ई	-गू	ई गू
विनोपल प	परमश	ध्युलप्र रूप
बाग	-गू	बाग गू
एक	-गू	एक गू
सब	-गू	सब गू

क्रिया विभेद	परसम	व्युत्पन्न रूप
कट	गू	कट गू
कात	-गू	कन गू
भट	-गू	भन गू

सम्बन्ध बोध

छोर गू घानीज कोपनी	(कट परक)
मै गू अब काम हुव कोपनी	"
बा म्हेगू डरे	(कटल परक)
भी गू काम कर	"
बा कामले गू पढ्यो	()
धजड गू लोका तिर रया है	
परा गू गयो	(हीनता सूचक)
मते गू आयो	(स्थिति सूचक)
दो रपिया ४ व्याज गू	(भाव सूचक)
म्है गू आयजन चोतो गाव	(सुखना सूचक)

७ २ १ ३ /रै/

इस परसम का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम विभेदण एवं क्रिया विभेदण के पश्चात् होता है एवं यह परसम सम्प्रदान कारक का सूचक है। इस परसम के द्वारा क्रिया के साथ अस्तित्व उत्पत्ति कम एवं निमित्त परक सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध को जदाहरण सहित इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

संज्ञा पद	परसम	व्युत्पन्न रूप
छोर	रै	छोर र
सुगाई	र	सुगाई र

टावरा	-२	टावरा रे
सवनाम	परसग	घुत्पन रूप
ओ ७ इ	रे	इरे
वे	रे	वेरे
म्हा	र	म्होर
विशेषण पद	परसग	घुत्पन रूप
सव	र	सवर
सगला	-२	सगलोर
क्रिया विशेषण	परसर्ग	घुत्पन रूप
अठ	र	अठरे
बठे	रे	बठरे

सम्बन्ध बोध

म्हार छोरै र दा घटा है
 म्हारै दो पोता है
 धार माम र एक हावली है
 राम र पेग लाया हूँ
 इस मुगाई र एव छारो हुयो
 म्हारै धार छोरा हुया
 मा वेटी रे थप्पड मार रई है
 राम र वास्त बजार गयो था

(अस्तित्व परक)

"

"

(सम्प्रदान सूचक)
 (उत्पत्ति परक)

"

(कम सूचक)
 (प्रयोजन परक)

सूचना

प्रयोजन परक सम्प्रदान मे /र/ के परचान 'वास्ते' का प्रयोग होता है।

६२१४ /मे/

इस परसर्ग का प्रयोग सजा, सवनाम, विशेषण एव क्रिया विशेषण के

पश्चात् होता है । यह अधिकरण कारक का वाच्य है । यह क्रिया एवं अय पदा के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त करता है । इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध बोध सादाहरण द्रष्टव्य है—

सशा पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
पर	-म	पर म
यन	म	यन में
सवनाम	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
म्है	-म	म्है मे
ये	में	ये में
वा	में	वा में
विशेषण पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
एक	मे	एक म
दो	-म	दो म
औरों	म	औरो म
क्रिया विशेषण	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
आज काल	-म	आजकाल मे
इत्ने	म	इत्ने म
जल्दी	में	जल्दी में

सम्बन्ध बोध

छोर न गु भार म लेजायर मारियो
 पर म कोई कोयनी
 म्है मे आईज एक कमो है
 पारी बदली आजकाल मे होयजासी
 म्होर जमोन म भाव सस्ता था
 आज काल म जपुर नाईस

(अधिकरण सूक्तक)

”

,”

(भाष सूचक)

”

,”

ग्हे मे सोमे गया परव है
 ग्हा मे यू धटो है
 टावर टोगर मजे म है
 ग्हे प्यार हपियों मे पेन मोल लियो
 ओ घर सीत हजार में लियो

(काल सूचक)
 (अवस्था सूचक)
 (स्थिति सूचक)
 (मूल्य सूचक)

"

६२१५ / ऊपर

इस परमर्ग का प्रयोग सना, सबनाम पदों के परभाव होता है ।
 इस परमर्ग के द्वारा किया गया अथवा अय पद से अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त
 होते हैं । इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध बोध इस प्रकार है—

प्रयोग

सना पद	परमर्ग	व्युत्पन्न रूप
डागल	-ऊपर	डागत ऊपर
खेजड	-ऊपर	खेजड़ ऊपर
भार्न	-ऊपर	भाल ऊपर
सबनाम पद	परमर्ग	व्युत्पन्न रूप
ग्हे	-ऊपर	ग्है ऊपर
य	-ऊपर	यै ऊपर
इय	-ऊपर	इयै ऊपर

सम्बन्ध बोध

गये ऊपर मत चड़
 पोयो भाल ऊपर पडो है
 गाढो दुगो ऊपर है
 बात ऊपर बात चालो
 सगानो ऊपर सगादा माया

(अधिकरण सूचक)

"

(अनतरता सूचक)

"

काम करण ऊपर हैं

(वारण सूचक)

थोरे ऊपर पुरो मरोसो है

(विजय सूचक)

इस परमर्ग का प्रयोग सज्ञापदा के पश्चात् होता है एवं इससे यु-
त्पन्न रूप विशेषण एवं क्रिया विभरण होते हैं । इस परमर्ग का प्रयोग
निपात के रूप में भी होता है । जब इसका प्रयोग परमर्ग के रूप में होता
है तो यह अपने पूर्ववर्ती सज्ञापद का परवर्ती सज्ञापन से मात्रा अथवा परिमाण परक
सम्बन्ध व्यक्त करता है । परन्तु जब यह क्रिया से सार्वभौम होता है तो उसके
साथ साकल्य परक सम्बन्ध चोदित करना है । इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध
उदाहरण सहित इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

प्रयोग

सज्ञापन	परमर्ग	युत्पन्न रूप
मर	भर	सैर भर
नि	भर	नि भर
मुट्ठी	भर	मुट्ठी भर
टक	भर	टके भर
मइन	भर	मइने भर

सम्बन्ध बोध

पाव भर भुजिया

(परिमाण सूचक)

मर भर पी पीयो

छाक भर सागो है

रात भर जागण करियो

(साकल्य सूचक)

नि भर मूता रयो

सोरा करीगनो ऊमर भर रादम

रवे भर सकर वापनी

(शीनता सूचक)

७ २ ६ ७ निव । तिई ।

“ परमर्ग का प्रयोग मज्ञा मवनाम एवं क्रिया विभरण के पश्चात्

पुलिग

स्त्रीलिग

एक वचन

बहुवचन

एक वचन

बहुवचन

छोर २ /ओ

छारा २ /आ

छोरी २ / ई

छोरया २/ई

इसी प्रकार बाल / ओ आ, ई / स / /आक / /आक / /ईक /
 बीकानेरी में सामान्यतः रूपांतर सहित परसर्गों से विभेपण वाक्यांग व्युत्पन्न
 होते हैं एवं जिस प्रकार विभेपण विभेप्य की विभेपता व्यक्त करते हैं उसी
 प्रकार ये वाक्यांग भी । रूपांतर सहित परसर्गों के विषय में एक महत्वपूर्ण
 बात यह भी है कि इनका प्रयोग केवल पदा के पश्चात् ही होता है प्रातिपदिका
 के पश्चात् नहीं होता । यथा — /छारी में / /घणा सीक / /साईकल आता /
 इन वाक्यों में /छोरी / /घणा / /साईकल / पद है । पश्चात्तया का प्रयोग भी
 इन परसर्गों के पूर्व हो सकता है ।

७ २ २ १ /र / /ओ, आ, ई /

इस परसर्ग का प्रयोग सना, सबनाम विभेपण एवं क्रिया विभेपण के
 पश्चात् होता है । उनके प्रयोग एवं सबध बोध को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा
 सकता है—

सना पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
छार	२/ओ	छोर रो
छोरी	२/ई	छोरी रो
मनखा	२/आ	मनखो रा
सबनाम पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
जा ७ ई	-२/ओ	ईरो
था	२/ई	थारो
म्हो	-२/आ	म्हारो
विभेपण पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
सब	-२/ओ	सबरो

मगना	१/६	मगनारी
मनों	१/आ	मेना म
त्रिया विनेपल	परमम	भुलान म
बद	२/आ	पन्ना
जद	२/ई	जन्नी
बठ	२/आ	बठरा

मदध बोध

घार रा रमनियो है
 कु मार रो घर है
 घोड़ी रो टोंग
 पागे मायो
 राजा रो बेग
 गहारी मा
 पीनन री बानी
 लो रा हवीहो
 गावण रो मदनो
 गोंर रो गोंव
 बरणरो बमरो

(ग्वामी भाव-गूषक)

"
 (अर्गामी गूषक)

"
 (अय-जनक गूषक)

"
 (बाय बालण गूषक)

"
 (साह गूषक)

(गावत्य गूषक)

(प्रयोजन परक)

६ २ २ २ /आल/ /बाल/ /ओ आ, ई/

इस परसय वा प्रयोग मंगा, मर्दानम एवं त्रिया विनेपण के पदपान्
 उपाय होना है एवं इनके योग से मंगा तथा विनेपण वाक्याण भुलान
 होने हैं। जब इनके योग से विनेपण वाक्याण निमित्त होने हैं तो इनके
 विनेप्य के निग एवं वचन के अनुसार विभक्तियां लगती हैं। जब इससे सजा
 वाक्याण निमित्त होने हैं तो मंजा प्रातिपदिकों की भांति लिंग, वचन एवं बारण
 विभक्तियां लगती हैं यथा - पुंलिंग अ /अ/आ, आ, ई। इनके प्रयोग एवं

सबनाम पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
----------	-------	----------------

बो	तो	बा तो
----	----	-------

ओ	तो	ओ तो
---	----	------

मैं	तो	म तो
-----	----	------

विशेषण पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
-----------	-------	----------------

बोली	ता	बोली तो
------	----	---------

घोली	तो	घोली तो
------	----	---------

सराब	तो	सराब तो
------	----	---------

क्रिया विशेषण पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
------------------	-------	----------------

अठ	तो	अठ तो
----	----	-------

बठ	तो	बठ तो
----	----	-------

सम्बन्ध बोध

बैरो छोरो तो मर ग्यो	(निश्चय सूचक)
----------------------	-----------------

ए कपिया तो देवणा पडसी	,
-----------------------	---

म्हा न तो दे	(आग्रह सूचक)
--------------	----------------

काल तो आया	"
------------	---

मरिया ता कायनी	(प्रश्न सूचक)
----------------	-----------------

पन्थोडी तो कोयनी	(गुण सूचक)
------------------	--------------

७ ३ २ / त्व /

इस निपात का प्रयोग सना, सबनाम, क्रिया एवं क्रिया विशेषण के पदवार होता है । यह निश्चय अथवा अवधारण के अर्थ में प्रयुक्त होता है

प्रयोग

सना पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
--------	-------	----------------

पुलस	तव	पुनस तव
------	----	---------

हिन्दी	तक	हिन्दी तक
चिट्ठी	तक	चिट्ठी तक
सवनाम	निपात	व्युत्पन्न रूप
थे	तक	थे तक
मैं	तक	मैं तक
थैं	तक	थैं तक
क्रिया-पद	निपात	व्युत्पन्न
पढ़िया	तक	पढ़िया तक
सूयो	तक	सूयो तक
देखियो	तक	देखियो तक
क्रिया विशेषण	निपात	व्युत्पन्न रूप
कठ	तक	कठ तक
आज	तक	आज तक

सम्बन्ध बोध

पुलक तक बसू धरारवै (अवधारण सूचक)

आज तक इसी कद को होयोनी

काल तक जाईमीज (निश्चय सूचक)

७ ३ ३ /न/ /नी/

/न/, /नी/ यद्यपि इसका प्रयोग निषेध के अर्थ में होता है परन्तु कुछ प्रयोगों में यथा " कहीं न कहीं तो करो " वाक्य में /न/ अनुनय का सूचक है। ऐसे प्रयोगों में /न/ को निपात स्वीकार किया गया है। बोली में /न/ का प्रयोग सवनाम एवं क्रिया विशेषण के पश्चात् बहुत कम रूप में उपलब्ध होता है एवं /नी/ क्रिया के पश्चात् अनुनय का वाचक है।

सवनाम पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
कई	न	कई न
कोई	न	कोई न

क्रिया विभाषण	निपात	व्युत्पन्न रूप
बठ	न	बठ न
क्रिया पद	निपात	व्युत्पन्न
पढो	नो	पढो नो
जाओ	नो	जाओ नो
आसो	नो	आसो नो

सम्बन्ध बोध

बाई न बाई तो जासी

(अवधारणा बोधक)

बाई न बाई तो केवणा पडसी

"

ये बठे जावो नो

(अनुवर्तक बोधक)

इति शुभम्

उपसंहार

पिछले अध्यायों में हमने बीकानेरी में उपलब्ध प्रत्ययों का सर्वांगीण ध्वन्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्ययन की उपलब्धियाँ से यह स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी में प्रत्ययों का विकास पाणिनि पद्धति पर ही आधारित है। पाणिनि के प्रत्यय विधान के अनुकूल ही प्रातिपदिकों के रूप का निर्माण करने वाले प्रत्यय मूल एवं गौण बीकानेरी में अब भी उसी प्रकार कार्य कर रहे हैं, पाणिनि पद्धति के अनुसार ही कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों से कृत्तों एवं तद्धितों की रचना होती है परन्तु इसके साथ यह भी नहीं भुलाया जा सकता कि बीकानेरी में भी मध्य भारतीय भाषा भाषाओं की सरलीकरण की प्रवृत्ति अत्यन्त मात्रा में उपलब्ध है जिसके कारण कई पद घिस घिस कर प्रत्यय का रूप धारण कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं।

पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) अब भी शब्द के आदि भाग में सलग्न होकर प्रत्यय में अभिनवता लाते हैं जिस प्रकार संस्कृत में। इतना अंतर अवश्य है कि संस्कृत भाषा में उपसर्गों को आचार्य पाणिनि ने 'प्रपरसम' सूत्र द्वारा एक एक सीमित सख्या में आबद्ध कर लिया था परन्तु बीकानेरी में पूर्व प्रत्यय परम्परा का विकास नवीन ढंग से हुआ है। बीकानेरी प्रत्ययों के विकास में अनेकानेक विदेशी भाषाओं का भी पूर्व योगदान रहा है।

बीकानेरी में मध्य प्रत्ययों का योग भी उपलब्ध होता है पर अत्यन्त मात्रा में जिनका विश्लेषण यथा स्थान प्रस्तुत किया जा चुका है।

सहायक ग्रंथ-सूची

(क) सस्कृत के ग्रंथ

- १- निरुक्त
- २- महाभाष्य
- ३- अष्टाध्यायी
- ४- लघुशब्देदुशेखर
- ५- पालि महा व्याकरण
- ६- मोगलायन पालि व्याकरण

महर्षि यास्व
महर्षि
महर्षि पाणिनि

कच्चायन
मोगलायन

७- प्राकृत प्रकाश

८- ऋग्वेद

९- महाभारत

१०- श्रीमद्भागवत महापुराण

११- शब्द कल्पद्रुम

१२- सस्कृत शब्दाय कौस्तुभ

१३- कपिलायतन महात्म्य

१४- भाव प्रकाश

१५- हलायुध कोश

१६- लघु सिद्धांत कौमुदी

१७- फक्किकारतन मञ्जूषा

१८- शब्द व्युत्पत्ति दशन

१९- सस्कृत व्याकरण

प्रवेपिका

२०- सस्कृत साहित्य का

इतिहास

(ख) हिन्दी के ग्रंथ

२१- सस्कृत व्याकरण

२२- हाडौती बोली और साहित्य

वररुचि

व्या० सायणाचार्य

गीता प्रेस गोरखपुर

व्या० श्रीधर स्वामी

प्रकाशित-पूना सस्करण

चौखम्बा सस्करण

प० विष्णुदत्त शर्मा

निरणय सागर प्रेस सस्करण

चौखम्बा सस्करण

व्या० कुशवाहा

निरणय सागर प्रेस

चौखम्बा सस्करण

बाबूराम सक्सेना

डॉ० ए० बी० कीय

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

- २३- सस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
 २४- राजस्थानी भाषा
 २५- हिन्दी भाषा उद्गम और विकास
 २६- हिन्दी भाषा रूप और विक्षेपण
 २७- हिन्दी भाषा का इतिहास
 २८- हिन्दी भाषा, उद्भव, रूप और विकास
 २९- हिन्दी भाषा रूप और विकास
 ३०- हिन्दी की तद्भव शब्दावली
 ३१- भाषा विज्ञान
 ३२- भाषा विज्ञान
 ३३- हिन्दी व्याकरण
 ३४- शब्दानुशासन
 ३५- हिन्दी कारकोका विकास
 ३६- हिन्दी में प्रत्यय विचार
 ३७- कवोर काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
 ३८- बीकानेर का राजनतिक विकास और प मधाराम
 ३९- हिन्दी समास रचना का अध्ययन
 ४०- राजस्थानी भाषा और साहित्य
 ४१- राजस्थानी
 ४२- राजस्थानी व्याकरण
 ४३- राजस्थानी भाषा और साहित्य
 ४४- राजस्थानी व्याकरण
 ४५- मारवाडी व्याकरण
 ४६- शेखावाटी का वणनात्मक अध्ययन
- डॉ० भोलाशकर व्यास
 सुनीति कुमार
 डॉ० उदयनारायण तिवारी
 डॉ० चंद्रभान रावत
 डॉ० घोरेंद्र वर्मा
 डॉ० हरिदेव बाहरो
 डॉ० सरनाम सिंह जी 'अर'
 डॉ० सरनाम सिंह जो अर
 डॉ० भोलानाथ तिवारी
 श्याम सुन्दरदास
 प० कामता प्रसाद गुरू
 किशोरीदास बाजपेयी
 श्री शिवनाथ
 डॉ० मुरारीलाल उर्प्रति
- स० डा० सत्यकेतु विद्यालकार
 श्री रमेशचंद्र जन
 डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
 प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
 प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
 डा० मोतीलाल मेनारिया
 सीताराम लालस
 सीताराम लालस
 डॉ० कलाशचंद्र अग्रवाल

(क) सस्कृत के ग्र

१- निरुक्त

२- महाभाष्य

३- अष्टाध्यायी

४- लघुशब्दे दुशेर

५- पालि महा व्य

६- मोगलायन पा

व्याकरण

७- प्राकृत प्रकाश

८- ऋग्वेद

९- महाभारत

१०- श्रीमद्भागवत

११- शब्द कल्पद्रुः

१२- सस्कृत शब्दा

१३- कपिलायतन

१४- भाव प्रकाश

१५- हलामुघ को

१६- लघु सिद्धांत

१७- फकिरकारत

१८- शब्द व्युत्पत्ति

१९- सस्कृत व्या

प्रवेपिका

२०- सस्कृत सार्

इतिहास

(ख) हिन्दी के

२१- सस्कृत व्या

२२- हाडीती वो

साहित्य

२३- सस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	डॉ० भोलाशकर व्यास
२४- राजस्थानी भाषा	मुनीति कुमार
२५- हिन्दी भाषा सद्गम और विकास	डॉ० उदयनागयण तिवारी
२६- हिन्दी भाषा रूप और विश्लेषण	डॉ० चन्द्रभान रावत
२७- हिन्दी भाषा का इतिहास	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
२८- हिन्दी भाषा, उद्भव, रूप और विकास	डॉ० हरिदेव वाहरो
२९- हिन्दी भाषा रूप और विकास	डॉ० सरनाम सिंह जी 'अरुण'
३०- हिन्दी की उद्भव शब्दावली	डॉ० सरनाम सिंह जी 'अरुण'
३१- भाषा विज्ञान	डॉ० भोलानाथ तिवारी
३२- भाषा विज्ञान	श्याम सुन्दरदास
३३- हिन्दी व्याकरण	प० कामता प्रसाद गुरु
३४- शब्दानुशासन	विशोरीदाम बाजपेयी
३५- हिन्दी कारका का विकास	श्री शिवनाथ
३६- हिन्दी में प्रत्यय विचार	डॉ० मुरारीलाल उग्र ति
३७- कबोर काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	
३८- बीकानेर का राजनतिक विकास और प मधाराम	स० डा० सत्यकेतु विद्यालकार
३९- हिन्दी समास रचना का अध्ययन	श्री रमेशचन्द्र जैन
४०- राजस्थानी भाषा और साहित्य	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
४१- राजस्थानी	प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
४२- राजस्थानी व्याकरण	प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
४३- राजस्थानी भाषा और साहित्य	डा० मोनीलाल मेनारिया
४४- राजस्थानी व्याकरण	सीताराम लालस
४५- मारवाडी व्याकरण	सीताराम लालस
४६- शेखावाटी का वर्णनात्मक अध्ययन	डॉ० कंलाशचन्द्र अग्रवाल

१४०]

- ४७- घोर गगर्द की भाषा श्री० बन्दीपानास जी गर्मा
- ४८- बीनार गगन का डॉ० गौरीशंकर हींगरद प्रोम
इतिहास
- ४९- मधुग जिन की बोली , डॉ० चन्द्रभान राय
(गर्लनातमा अध्ययन)
- ५०- राजस्थान का इतिहास मार्शल टाट
- ५१- पुरानी राजस्थानी डॉ० एल० पी० तेम्सीतोरी
- ५२- बीनार एक परिचय : गौरीशंकर भाचार्य
- ५३- राजस्थानी भाषा की : डॉ० पुरपोत्तम मेनारिया
रूप रेखा
- ५४- बीनार के राज्य डॉ० करणी सिंह
धराने का वैद्रीय सत्ता
से सम्बन्ध
- ५५- राजस्थानी शब्द कोश सीताराम लालस
- (ग) अंग्रेजी के ग्रन्थ
- ५६- हॉकिट ए वीस इन माडन : ए वी हॉवेट
लिग्निस्टिक्स
- ५७- लंग्वेज ब्लूमफील्ड
- ५८- स्ट्रक्चरल लिग्निस्टिक्स जिलिंग एच० हेरिल
- ५९- जनरल लिग्निस्टिक्स मार० एच० रीक्स
- ६०- एन इट्रोडक्शन टू
डिस्क्रिप्टिव लिग्निस्टिक्स गेलसन
- ६१- दी सिद्धात की मुदी आफ
पाणिनि श्री चन्द्र वसु
- ६२- लंग्वेज, इट्स नेचर एंड यूज जेस्पसन
- ६३- लंग्वेज सपीर
- ६४- डिस्क्रिप्टिव केटलाग
आफ वार्ड्स एण्ड हिस्टो
रीकल मन्युस्क्रिप्ट्स (प्रथम
भाग ग्रीकानेर स्टेट)
- ६५- गजेटियर आफ बीकानेर डॉ० एल० पी० तेम्सीतोरी
पी० डब्ल्यू० पावनेट

